इंटरनेट पर देखें
www.dainikdawa.com

संस्कारधानी से प्रकाशित मध्यभारत व छत्तीसगढ़ अंचल का सर्वप्रसारित लोकप्रिय हिंदी समाचार पत्र

भारत सरकार व छत्तीसगढ़ शासन से विज्ञापन के लिए अधिकृत

दैनिक प्रातः संस्करण

"यो आत्मानं वेत्ति, सर्वं स वेत्ति"।।

दावा

सम्पादक - दीपक कुमार बुद्धदेव

आर.एन.आई.नं. 58841/93
डाक पंजीयन छ.ग./दुर्ग/14/2024-26

शुक्ला मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पिटल
■ डायलिसिस सुविधा उपलब्ध
■ प्रोस्टेट एवं पथरी का इलाज दूरबिन पद्धति द्वारा
■ आयुष्मान कार्ड द्वारा निः शुल्क ईलाज
बसंतपुर, राजनांदगांव (छ.ग.) मो.नं.- 9301033013

वर्ष- 43 अंक -329 राजनांदगांव, रविवार 20 अक्टूबर 2024 पृष्ठ - 8 मूल्य - 4.00 रुपए

जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा देने वाले कैबिनेट के प्रस्ताव को LG मनोज सिन्हा ने दी मंजूरी

जम्मू। जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने शनिवार को मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला के नेतृत्व वाली कैबिनेट द्वारा जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा देने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। न्यूज ऐजेंसी पीटीआई ने एक आधिकारिक प्रवक्ता के हवाले से कहा, उमर अब्दुल्ला की अध्यक्षता में गुरुवार 17 अक्टूबर को हुई कैबिनेट की बैठक में जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा देने का प्रस्ताव पारित किया गया था, जिसे एलजी की मंजूरी मिल गई है।

एलजी के द्वारा इसकी मंजूरी मिलने के बाद औपचारिक प्रक्रिया की शुरू हो चुकी है। प्रवक्ता ने कहा, कैबिनेट ने मुख्यमंत्री को राज्य का दर्जा बहाल करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भारत सरकार के समक्ष मामला उठाने के लिए अधिकृत किया है। प्रवक्ता ने कहा, जम्मू-कश्मीर की विशिष्ट पहचान और लोगों के संवैधानिक अधिकारों की सुरक्षा नवनिर्वाचित सरकार की नीति की आधारशिला है।

मुख्यमंत्री अब्दुल्ला पीएम मोदी से करेंगे मुलाकात

जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री अब्दुल्ला आने वाले दिनों में राज्य के मुद्दे पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय मंत्रियों से मुलाकात करने के लिए नई दिल्ली जाएंगे। जम्मू-कश्मीर विधानसभा का आगामी सत्र 4 नवंबर शुरू होगा। शुरुआत में विधानसभा में एलजी के संबोधन का मसौदा भी मंत्रिपरिषद के समक्ष रखा गया था, जिस पर परिषद ने निर्णय लिया कि इस पर आगे विचार किया जाएगा और चर्चा की जाएगी।

बता दें कि 17 अक्टूबर 2024 को केंद्र शासित प्रदेश बनने के बाद उमर अब्दुल्ला ने जम्मू-कश्मीर के पहले सीएम के रूप में शपथ ली थी। उन्होंने 2009 से 2015 तक तत्कालीन राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में कार्य किया था। (शेष पृष्ठ 6 पर...)

कायराना नक्सल हमले में दो जवान शहीद

आपरेशन से लौट रहे जवानों को आईईडी ब्लास्ट कर बनाया निशाना

नारायणपुर (दावा)। छत्तीसगढ़ के नारायणपुर जिले के अबूझमाड़ के मोहंदी क्षेत्र के ग्राम कोडलियर में नक्सल आपरेशन से लौट रहे जवानों पर नक्सलियों ने आईईडी ब्लास्ट कर दिया। इस हमले में आईटीबीपी के दो जवान शहीद हो गए। घायलों को लेने के लिए सेना का हेलीकाप्टर रवाना किया गया था। जिसके बाद उन्हें आनन- फानन में अस्पताल लाया गया। जहां उनकी मौत हो गई है। वहीं बस्तर फाइटर के अरविन्द सर्फे और आरक्षक अनिल कुंजाम का अस्पताल में इलाज जारी है। इस मामले को लेकर एसपी प्रभात कुमार ने बताया कि, नक्सल ऑपरेशन से सर्चिंग कर लौट रहे थे। इसी बीच टीम पर नक्सलियों ने एलईडी ब्लास्ट दिया और आईटीबीपी के दो जवान घायल हो गए हैं। शहीद जवानों के नाम अमर पंवार महाराष्ट्र के सतारा जिले से वहीं दूसरे का नाम के राजेश कडप्पा आंध्रप्रदेश निवासी बताया गया है। दोनो जवान आईटीबीपी 53 बटालियन से थे।

संविधान नहीं होता तो केंद्र सरकार मुझे फांसी पर लटका देती - सत्येंद्र जैन

नयी दिल्ली। दिल्ली के पूर्व स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन ने शनिवार को कहा कि अगर न्याय पालिका और संविधान नहीं होता तो भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की केंद्र सरकार उन्हें फांसी पर लटका देती। श्री जैन ने आज सुबह अपने परिवार के साथ सरस्वती विहार में स्थित जैन मंदिर में पूजा अर्चना की और सभी देशवासियों के कल्याण की कामना की। इस दौरान उन्होंने कहा, देश के अंदर अभी भी न्याय और संविधान है।

सबको इसे मानना पड़ेगा। अगर संविधान, न्याय और अदालतें नहीं होतीं तो आज केंद्र में जिस तरह की सरकार चल रही है वह शायद फांसी पर लटका देती। अरविंद केजरीवाल ने हमसे शुरू में ही कहा था कि हम इस देश की राजनीति को बदलने की कोशिश कर रहे हैं, जो भी यह कोशिश करेगा उसे जेल तो जाना ही पड़ेगा। उन्होंने कहा, जेल जाने के बाद कई बार सोचा कि इन लोगों ने मुझे जेल भेज दिया, अरविंद केजरीवाल को जेल भेज दिया। मनीष सिसोदिया और संजय सिंह को जेल भेज दिया। आम आदमी पार्टी के अंदर ऐसा क्या है कि ये हमारी पार्टी को खत्म करना चाहते हैं। इसके पीछे केवल एक ही कारण है कि इस देश में कई पार्टियां बनीं, लेकिन ये बड़ी-बड़ी पार्टियां भी इनका कुछ नहीं बिगाड़ पाईं। राजनीति पहले जैसे चल रही थी, वैसे ही चल रही है। उस तरह से चलते रहे तो कोई दिक्कत नहीं है। इन्हें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि अरविंद केजरीवाल राजनीति में आए, लेकिन इनके जैसे नहीं बने इसलिए फर्क पड़ता है।

श्री जैन ने कहा कि प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) को इस तथाकथित मनी लॉन्ड्रिंग के मामले की जांच करते हुए सात साल हो गए लेकिन अभी तक जांच चल ही रही है। चौबीस अगस्त 2017 को केन्द्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने मामला दर्ज किया और सात दिन बाद 31 अगस्त को ईडी ने मामला दर्ज कर लिया। इतना समय बीतने के बावजूद ये आज तक अपनी जांच पूरी नहीं कर पाए हैं। अगर इनसे जांच पूरी नहीं हो रही है, तो ये जांच एजेंसियां कर क्या रही हैं? उनका असली मकसद हमें गिरफ्तार करके केवल जेल में रखना था। उन्होंने कहा कि जेल में उनके साथ अत्याचार किया गया। श्री जैन ने कहा, मेरा वजन 40 किलो तक कम हो गया था। बीच में जब मैं बाहर आया तो डॉक्टरों को डर था कि कहीं मैं मर न जाऊं। इन लोगों ने कभी ये नहीं बताया कि सत्येंद्र जैन मर सकता था।

अनुकंपा नियुक्ति का रास्ता साफ : दिवंगत शिक्षकों के परिजनों ने की सीएम साय से मुलाकात, जताया आभार

रायपुर (दावा)। छत्तीसगढ़ सरकार ने कैबिनेट की बैठक में यह निर्णय लिया है कि, दिवंगत शिक्षक पंचायत के परिजनों को अनुकंपा नियुक्ति मिलेगी। शनिवार को दिवंगत शिक्षकों ने सीएम विष्णुदेव साय से मुलाकात की और उनका आभार जताया। उन्होंने कहा कि, हमें लम्बे संघर्ष के बाद आज यह सम्मान मिला है।

हमारे संवेदनशील मुख्यमंत्री ने हमारी पीड़ा समझी और बड़ी राहत देने का काम किया है। सीएम श्री साय ने भी सभी बहनों को शुभकामनाएं दी और कहा कि, हमारी सरकार हमेशा आपके साथ खड़ी है और किसी के साथ भी अन्याय नहीं होगा। उल्लेखनीय है कि, सीएम विष्णदेव साय की अध्यक्षता में 16 अक्टूबर को आयोजित मंत्रिपरिषद की बैठक में दिवंगत शिक्षक पंचायत संवर्ग संघ के परिजनों की अनुकंपा नियुक्ति के लिए निर्णय लिया गया था।

दिवंगत शिक्षक पंचायत संवर्ग संघ के आश्रित अनुकंपा नियुक्ति के लिए आंदोलन कर रहे थे। संघ के सदस्यों ने बताया कि, दिवंगत शिक्षकों के परिजनों द्वारा पूर्ववर्ती सरकार के (शेष पृष्ठ 6 पर...)

भाजपा ने घोषित किया प्रत्याशी : सुनील सोनी लड़ेंगे रायपुर दक्षिण सीट से चुनाव

रायपुर। रायपुर दक्षिण विधानसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव को लेकर भारतीय जनता पार्टी ने अपने प्रत्याशी का ऐलान कर दिया है। भाजपा ने इस सीट से पूर्व सांसद सुनील सोनी को पार्टी का प्रत्याशी घोषित किया है। बतादें कि चुनाव आयोग ने 15 अक्टूबर को प्रेस कॉन्फ्रेंस कर छत्तीसगढ़ की रायपुर दक्षिण विधानसभा सीट पर उपचुनाव का ऐलान किया था, जिन पर 13 नवंबर को वोट डाले जाएंगे, जबकि यहां मतगणना 23 नवंबर को होगी।

रायपुर-दक्षिण विधानसभा उपचुनाव के लिए भाजपा के प्रत्याशी सुनील सोनी रायपुर के सांसद व पूर्व मंत्री बृजमोहन अग्रवाल के करीबी माने जाते हैं। वह अन्य पिछड़ा वर्ग से आते हैं। साथ ही राष्ट्रीय स्वयं सेवक की पृष्ठभूमि वाले नेता हैं। सुनील सोनी का जन्म 28 नवंबर 1961 में रायपुर के एक निम्न मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ। उनके पिता कंवर लाल सोनी आजादी से पहले ही संघ से जुड़ गए थे। दिवंगत व पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी भी सोनी को उनके पिता के चलते ही करीब से जानते थे।

रायपुर के दो बार महापौर रहे सुनील सोनी

सोनी ने अपने राजनीतिक कैरियर की शुरुआत अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से की। दुर्गा कालेज रायपुर से छात्रसंघ अध्यक्ष रहे। इसके बाद पार्षद रहे। 2003 से 2010 तक दो बार रायपुर के महापौर रहे। रायपुर विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष रहे। (शेष पृष्ठ 6 पर...)

जेएमएम और कांग्रेस 70 सीटों पर लड़ेगी चुनाव, राजद के खाते में 7 सीटें

झारखंड विधानसभा चुनाव के लिए इंडिया ब्लॉक में सीट बंटवारे का फॉर्मूला तय हो चुका है। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने शनिवार, 19 अक्टूबर को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान बताया कि 2024 झारखंड विधानसभा चुनाव में जेएमएम और कांग्रेस 70 सीटों पर उम्मीदवार उतारेगी। जबकि, लालू यादव की पार्टी राष्ट्रीय जनता दल को 7 सीटें दी गई है। बाकी 4 सीटों पर अभी फैसला नहीं हुई है।

इंडिया ब्लॉक के सहयोगी दलों के साथ बैठक के बाद हेमंत सोरेने ने सीटों के बंटवारे का ऐलान किया। बैठक के बाद सोरेन ने कहा, इंडिया ब्लॉक झारखंड विधानसभा चुनाव एक साथ लड़ेगा। सहयोगियों के साथ सीट बंटवारे की बातचीत के दौरान यह निर्णय लिया गया है कि कांग्रेस और झामुमो 81 में से 70 सीटों पर उम्मीदवार उतारेंगे।

झारखंड में दो चरण में चुनाव

81 सीटों वाली झारखंड में 2024 का विधानसभा चुनाव दो चरण में होंगे। पहले चरण के लिए 13 नवंबर और दूसरे चरण के लिए 20 नवंबर को वोट डाले जाएंगे। चुनाव के नतीजे 23 नवंबर को आएंगे।

भाजपा विधायक केदार हाजरा जेएमएम में हुए शामिल

विधानसभा चुनाव से पहले भाजपा विधायक केदार हाजरा और आजसू पार्टी के उमाकांत रजक शुक्रवार, 18 अक्टूबर को हेमंत सोरेने की पार्टी जेएमएम में शामिल हो गए। हाजरा, जमुआ से मौजूदा विधायक हैं। उन्होंने 2019 में कांग्रेस की मंजू कुमारी को 18,175 मतों के अंतर से हराकर सीट जीती थी। झामुमो में उनका स्वागत करते हुए मुख्यमंत्री सोरेन ने कहा कि दोनों पुराने योद्धा हैं। इन्होंने अलग झारखंड राज्य के निर्माण के आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया था। इनके आने से पार्टी को और मजबूत होगी।

डीएमएफ घोटाला : ईडी के निशाने पर दस से अधिक रसूखदार, माया-रानू के बाद दूसरे आरोपियों की जल्द होगी गिरफ्तारी

रायपुर। प्रवर्तन निदेशालय ने जिला खनिज न्यास (डीएमएफ) घोटाले के मामले में कार्रवाई तेज कर दी है। बीते दो दिनों के भीतर आदिवासी विकास विभाग की सहायक आयुक्त माया वारियर और निलंबित आईएएस रानू साहू को गिरफ्तार किया जा चुका है। अब जांच एजेंसी के निशाने पर एक दर्जन से अधिक अधिकारी और कारोबारी हैं, जिन पर जल्द ही शिकंजा कसा जाएगा।

करीब 300 करोड़ के डीएमफ घोटाले की जांच कर रही ईडी ने विशेष कोर्ट को बताया है कि डीएमएफ की टेंडर की राशि का 25-40 प्रतिशत तक सरकारी अफसरों को कमीशन के रूप में दिया गया है। ईडी की जांच में यह भी सामने आया है कि टेंडर पाने के लिए राज्य के अधिकारियों, प्रभावशाली राजनेताओं को रिश्वत दी गई है। ईडी के सूत्रों के अनुसार माया वारियर, रानू साहू से पूछताछ में घोटाले से संबंधित कई राज खुलेंगे। इसके आधार पर ही अधिकारी-कर्मचारी समेत अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी होगी। डीएमएफ घोटाले की जांच कर रही ईडी के हाथ यह भी दस्तावेज लगे है कि प्राइवेट कंपनियों के टेंडर पर 15 से 20 फीसदी अलग-अलग कमीशन सरकारी अधिकारियों ने लिया है। टेंडर करने वाले संजय शिंदे, अशोक कुमार अग्रवाल, मुकेश कुमार अग्रवाल, ऋषभ सोनी और बिचौलिए मनोज कुमार द्विवेदी, रवि शर्मा, पियूष सोनी, पियूष साहू, अब्दुल और शेखर के साथ मिलकर अन्य ने किसी चीज की मूल कीमत से ज्यादा बिल का भुगतान किया था। टेंडर देने के नाम पर अधिकारियों सारे नियमों को दरकिनार कर दिया, जबकि डीएमएफ राज्य के हर जिले में स्थापित एक ट्रस्ट है और खनन गतिविधियों से प्रभावित लोगों के लाभ के लिए खनिकों द्वारा वित्त पोषित है।

टेंडर के लिए रिश्वत लेने का आरोप

ईडी ने इस साल मार्च में आरोप लगाया था कि छत्तीसगढ़ में डीएमएफ से जुड़े खनन ठेकेदारों ने आधिकारिक काम के टेंडर पाने के लिए राज्य के अधिकारियों और राजनीतिक कार्यकारियों को भारी मात्रा में अवैध रिश्वत दी है। यह क़रीब 600 करोड़ से उपर का प्रथम दृष्टया घोटाला है। माया वारियर कोरबा में डीएमएफ के तहत स्वीकृत होने वाले काम की प्रमुख कर्ताधर्ता थीं जबकि रानू साहू कलेक्टर थी। विशेष कोर्ट ने दोनों को 22 अक्टूबर तक ईडी की रिमांड पर सौंपा है।

संगठित तरीके से घोटाले को दिया अंजाम

ईडी ने कोर्ट में यह तर्क पेश किया कि पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार के कार्यकाल में रानू साहू कोयला समृद्ध कोरबा जिले में मई 2021 से जून 2022 तक कलेक्टर थीं। उस समय माया वारियर को आदिवासी विकास विभाग में उन्होंने ही अगस्त 2021 से मार्च 2023 तक तत्कालीन सहायक आयुक्त के पद पर पदस्थापना कराई थी। (शेष पृष्ठ 6 पर...)

भाजपा ने जारी की 66 प्रत्याशियों की सूची, चंपई सोरेन और बाबूलाल मरांडी को दिया टिकट

रांची। झारखंड विधानसभा चुनाव के लिए बीजेपी ने अपनी पहली सूची जारी की है। बीजेपी की पहली सूची में 66 प्रत्याशियों का नाम है। इसमें 66 में से 11 महिलाओं को टिकट दिया गया है। वहीं झारखंड में बीजेपी ने लोकसभा चुनाव में हारे हुए 4 प्रत्याशियों को भी टिकट दिया है। धनवार से बाबूलाल मरांडी को टिकट दिया गया है। जामताड़ा से सीता सोरेन और बिशनपुर से समीर उरांव को प्रत्याशी बनाया है। गुमला से सुदर्शन भगत को और गीता कोड़ा को जनन्नाथ कोर्ट से टिकट गिया गया है।

सरायकेला से चुनाव लड़ेंगे चंपई सोरेन

पूर्व सीएम चंपई सोरेन को सरायकेला से बीजेपी ने प्रत्याशी बनाया है। वहीं चंपई सोरेन के बेटे बाबूलाल सोरेन को घाटशिला से, पूर्व सीएम अर्जुन मुंडा की पत्नी को मीरा मुंडा को पोटका से और रघुवर दास की पुत्रवधू पूर्णिमा दास साहू को जमशेदपुर पूर्व से टिकट दिया गया है।

लोबिन हेम्ब्रम को भी बनाया प्रत्याशी

वहीं जेएमएम से बीजेपी में शामिल हुए लोबिन हेम्ब्रम को भी प्रत्याशी बनाया गया है। जेएमएम के फ्लोर टेस्ट में बगावत करने वाले लोबिन हाल ही में बीजेपी में शामिल हुए थे। हेम्ब्रम को बोरियो से टिकट दिया गया है।

चार विधायकों का काटा टिकट

बीजेपी ने चार विधायकों का टिकट काटा है। सिमरिया से मौजूदा विधायक किशुन दास की जगह उज्वल दास, कांके से समरी लाल की जगह डॉ. जीतू चरण राम, जमुआ से केदार हाजरा की जगह मंजू देवी और सिंदरी में (शेष पृष्ठ 6 पर...)

अमेरिका के साथ संबंध सकारात्मकता के नए दौर में, महत्वपूर्ण खनिजों के क्षेत्र में भागीदारी संभव : गोयल

नयी दिल्ली। वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने अमेरिका के साथ भारत के संबंधों के वर्तमान दौर को 'एक नयी और अभूतपूर्व सकारात्मकता भरा' बताते हुए शनिवार को कहा कि भारत महत्वपूर्ण खनिजों की आपूर्ति श्रृंखला के विस्तार के लिये अमेरिका के साथ सहयोग को भागीदारी के स्तर पर ले जाना चाहता है।

श्री गोयल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में अमेरिकी प्रशासन के साथ दस वर्षों के सहयोग और समन्वय के चलते व्यापार और निवेश के क्षेत्र में दोनों देशों के संबंध आज ऐसे दौर में प्रवेश कर गये हैं जहां संशय और विवाद की जगह भारत के प्रति एक नया विश्वास स्थापित हुआ है। श्री गोयल इस महीने के शुरू में अमेरिका की अपनी चार दिवसीय यात्रा पर गये थे। इस दौरान उन्होंने पहले दो दिन न्यूयार्क में उद्योग जगत के प्रतिनिधियों, एसोसिएशनों और निवेशकों के साथ बैठकें की और यात्रा के दूसरे चरण में वाशिंगटन में भारत-अमेरिका सीईओ फोरम की बैठक में भाग लेने के अलावा अमेरिका की वाणिज्य मंत्री गिना रैमॉन्डो और अमेरकी व्यापार प्रतिनिधि (यूएसटीआर) कैथरीन ताई के साथ व्यापार और निवेशक संबंधों की प्रगति की समक्षा की और व्यापार नीति संबंधी विषयों पर वार्ता की। इस दौरान दोनों पक्षों के बीच क्रिटिकल मिनिरल्स (महत्वपूर्ण खनिजों) की आपूर्ति श्रृंखला के विस्तार के क्षेत्र में सहयोग का एक करार भी किया गया। श्री गोयल ने अपनी इस यात्रा के बारे में आज यहां संवाददाताओं से लम्बी चर्चा में कहा, 'यह एक असाधारण यात्रा थी और इसका अनुभव जो पहले की यात्राओं से बिल्कुल अलग था। इस दौरान, विभिन्न बैठकों में कोई नकारात्मक मुद्दा नहीं उठा। उन्होंने कहा कि भारत में लगातार तीसरी बार मोदी सरकार के सत्ता में आने को वहां के लोगों में 'एक प्रकार का कौतूहल दिखा और इसके कारण लोगों में एक अभूतपूर्व सकारात्मकता भी स्पष्ट दिख रही थी।' उन्होंने कहा, रुपया-डॉलर विनिमय दर की स्थिरता को लेकर वहां के निवेशक अब निश्चिंत लगते हैं, क्योंकि इसमें एक स्थिरता आयी है। संबंधों के भविष्य को लेकर संशय की बात अब इतिहास बन चुकी है।

श्री गोयल ने राष्ट्रपति जो बाइडेन और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बीच शिखर बैठक के बाद दोनों देशों के बीच इस्पात, एल्यूमिनियम, तथा कुछ अन्य औद्योगिक एवं कृषि उत्पाद व्यापार के क्षेत्र में चल रहे सात विवादों को समाप्त किए जाने पर बनी सहमित का उल्लेख करते हुए कहा, अब विवाद के मुद्दे इतिहास बन चुके हैं। (शेष पृष्ठ 6 पर...)

अल्पसंख्यकों के सामाजिक एवं आर्थिक विकास और बेहतर शिक्षा के लिए अनेक योजनाएं संचालित - धन्यकुमार जिनप्पा गुडे

राजनांदगांव (दावा)। राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य धन्यकुमार जिनप्पा गुंडे ने आज न्यू सर्किट हाऊस डोंगरगढ़ के सभाकक्ष में अल्पसंख्यक समुदाय के प्रमुखों की बैठक ली। राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य धन्यकुमार जिनप्पा गुंडे ने कहा कि अल्पसंख्यकों के शैक्षणिक, आर्थिक एवं सामाजिक विकास के लिए किए गए कार्यों की जानकारी लेने एवं अल्पसंख्यक समुदायों से मिलने आए हैं।

अल्पसंख्यक समुदाय को मिलने वाली शासकीय योजनाओं की ली जानकारी

- राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य धन्यकुमार जिनप्पा गुंडे ने अल्पसंख्यक समुदाय के प्रमुखों की ली बैठक
- राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य ने अल्पसंख्यक समुदायों को शासकीय योजनाओं का लाभ लेने कहा

राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य धन्यकुमार ने कहा कि अल्पसंख्यकों के सामाजिक विकास, आर्थिक विकास और बेहतर शिक्षा के लिए अनेक योजनाएं संचालित है। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग की स्थापना वर्ष 1992 में की गई थी। अल्पसंख्यक समुदाय के रूप में 6 धार्मिक समुदाय मुस्लिम, ईसाई, सिक्ख, बौद्ध, जैन और पारसी को अधिसूचित किया गया। उन्होंने अल्पसंख्यक समुदाय को होने वाले लाभों को एवं उनको प्राप्त करने के लिए दिशा-निर्देशों के बारे में भी जानकारी दी। समाज प्रमुखों की शंकाओं का समाधान किया। उन्होंने कहा कि सभी धर्म अपने बच्चों को बहुत अच्छे संस्कार सिखाते है।

अल्पसंख्यक समुदाय के लिए स्वास्थ्य, शिक्षा एवं स्वरोजगार के लिए शासन की अनेकों योजनाएं संचालित है, इसका लाभ लेने के लिए कहा। उन्होंने बताया कि अल्पसंख्यक समुदाय के स्कूली बच्चों को छात्रवृत्ति दी जाती है। इसके साथ उच्च शिक्षा के लिए भी छात्रवृत्ति पात्रतानुसार दिया जाता है। शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं संचालित है, उसका लाभ लेने के लिए कहा। उन्होंने बताया कि स्वरोजगार के लिए 50 हजार रूपए से 30 लाख रूपए तक का ऋण दिया जाता है। स्वरोजगार के लिए महिलाओं को 30 प्रतिशत सब्सिडी पर ऋण दिया जाता है।

अल्पसंख्यक समुदाय के बौद्ध समाज, जैन समाज, ईसाई समाज, मुस्लिम समाज के समाज प्रमुखों ने अपने समुदाय के मूलभूत आवश्यकताओं के संबंध में अवगत कराया। समाज प्रमुखों ने बच्चों के लिए लाईब्रेरी, एप्रोच सीसी रोड, पेयजल, शौचालय, बाउंड्रीवाल, प्रकाश जैसी मूलभूत सुविधाओं के संबंध में अवगत कराया। इस अवसर पर राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य धन्यकुमार जिनप्पा गुंडे की धर्मपत्नी श्रीमती निर्मला गुंडे, प्रकाश कुमार जैन, एसडीएम डोंगरगढ़ मनोज मरकाम, सहायक आयुक्त आदिवासी विकास सुश्री दीक्षा गुप्ता, तहसीलदार मुकेश ठाकुर, अल्पसंख्यक समुदाय के बौद्ध समाज, जैन समाज, ईसाई समाज, मुस्लिम समाज के प्रमुख उपस्थित थे।

रॉयल किड्स कॉन्वेंट के अर्शवीर सिंह भाटिया 14-वर्ग क्रिकेट प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन

राजनांदगांव (दावा)। 24 वे राज्य स्तरीय 14-वर्ग क्रिकेट प्रतियोगिता, गौरेला पेंड्रा मरवाही में आयोजित की गई जिसमें दुर्ग संभाग ने पहला स्थान प्राप्त किया, जिसमें हमारे रॉयल किड्स कॉन्वेंट स्कूल के होनहार खिलाड़ी अर्शवीर सिंह भाटिया ने शानदार प्रदर्शन करते हुए दुर्ग संभाग को प्रथम स्थान प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, अर्शवीर सिंह के खेल को देखते हुए टीम मैनेजमेंट ने अर्शवीर को कप्तानी का मौका दिया गया और उन्होंने अपने प्रदर्शन और सूझबूझ भरी कप्तानी से दुर्ग संभाग को प्रथम स्थान प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

यह जानकरी देते हुए खेल विभाग के अध्यक्ष इमरान खान ने बताया खेल में स्वयं अपने शिक्षक के साथ प्रतीक रूप से निगरानी रखते हैं हमारे निर्देशक श्रेयांश सर भी बच्चों को व्यक्तित्व रूप से खेल सिखाने में रुचि रखते हैं प्राचार्य अभिषेक खंडेलवाल भी खेल में अनुशासन में अग्रणी भूमिका अदा करते हैं। इस अवसर पर संस्था की अध्यक्षा श्रीमती डॉक्टर सविता जेबी सिंह, उपाध्यक्ष अशोक चौधरी, निदेशक संजय बहादुर सिंह, सावंत बहादुर सिंह, जन्मे जय बहादुर सिंह, श्रेयांश बहादुर सिंह, एकेडमिक डायरेक्टर अभिषेक खंडेलवाल, बरसर आई.के. वैष्णव, सीबीएसई प्राचार्य श्रीमती एकता खंडेलवाल, सीजी प्राचार्य श्रीमती सुषमा शुक्ला, उप प्राचार्य श्रीमती ममता मिश्रा, एक्टिविटी कल्चरल इंचार्ज श्रीमती अपर्णा वर्मा, एचएम सरिता सिंह एवं सभी शिक्षकों ने अर्शवीर को शुभकामनाएं व बधाई दी।

पहला कॉलम...

कैलाश चौहान तीसरी बार प्रदेश अध्यक्ष निर्वाचित

राजनांदगांव (दावा)। सहायक पशु चिकित्सा क्षेत्र अधिकारी संघ (पंजीयन क्रमांक 41) के प्रदेश अध्यक्ष के प्रतिष्ठापूर्ण निर्वाचन में कैलाश चौहान तीसरी बार प्रदेश अध्यक्ष के पद पर निर्वाचित हुए। आज दिनांक 19 अक्टूबर को सहायक पशु चिकित्सा क्षेत्र अधिकारी संघ के प्रांत अध्यक्ष के चुनाव के लिए छत्तीसगढ़ के पांचों संभाग बस्तर, रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर, सरगुजा मुख्यालय में सहायक पशु चिकित्सा क्षेत्र अधिकारी संघ के सदस्यों ने मतदान में भाग लिया। प्रांत अध्यक्ष के प्रतिष्ठा पूर्ण चुनाव में कुल 1250 मतदाता थे। जिनमें से कुल 1069 मत पड़े। जिसमें कैलाश चौहान को 689 मत प्राप्त हुए वही उनके निकटतम प्रतिद्वंदी अवधेश पटेल को 380 मत मिले। इस प्रकार कैलाश चौहान 300 मतों के भारी अंतर से तीसरी बार प्रांत अध्यक्ष निर्वाचित हुए। कैलाश चौहान के प्रदेश अध्यक्ष निर्वाचित होने पर प्रदेश के समस्त पशु चिकित्सा अधिकारियों ने बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं। यह जानकारी उत्तम कुमार फ़ंडियाल अध्यक्ष राजनंदगांव ने दी।

नि:शुल्क कौशल प्रशिक्षण के लिए कौशल पखवाड़ा

राजनांदगांव (दावा)। कौशल विकास प्रशिक्षण अंतर्गत जिले के बेरोजगार युवाओं को 3-4 माह की अवधि का नि:शुल्क कौशल प्रशिक्षण प्रदान किए जाने हेतु कौशल पखवाड़ा कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। कौशल पखवाड़ा 14 से 30 अक्टूबर 2024 तक सुबह 11 बजे से 2 बजे तक सभी जनपद पंचायतों में आयोजित हो रहा है। इसके अंतर्गत 22 अक्टूबर को रोजगार कार्यालय राजनांदगांव, 21 व 28 अक्टूबर को जनपद पंचायत डोंगरगढ़, 23 व 25 अक्टूबर को जनपद पंचायत डोंगरगांव एवं 18 व 24 अक्टूबर को जनपद पंचायत छुरिया में कौशल पखवाड़ा कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। नि:शुल्क कौशल प्रशिक्षण अंतर्गत सोलर इंस्टॉलेशन, राजमिस्त्री, प्लम्बर, इलेक्ट्रिशियन, कम्प्यूटर, सिलाई जैसे विभिन्न कोर्स में दिया जाएगा। प्रशिक्षण के लिए इच्छुक एवं पात्र युवाओं को कौशल पखवाड़ा कार्यक्रम में सम्मिलित होकर पंजीयन करा सकते हैं। इस संबंध में विस्तृत जानकारी के लिए जिला कौशल विकास प्राधिकरण संयुक्त कार्यालय के सामने कलेक्टोरेट परिसर राजनांदगांव में संपर्क किया जा सकता है।

राजेश शर्मा का निधन

डोंगरगांव (दावा)। नगर पंचायत क्षेत्र के वार्ड मटिया निवासी राजेश शर्मा पिता साहेब प्रसाद शर्मा 44 वर्ष का निधन 19 अक्टूबर को रायपुर अस्पताल में निधन हो गया है वे रायपुर पीएचक्यू में सब इंस्पेक्टर के पद में पदस्थ थे वे कुछ दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे राजेश शर्मा अपने पीछे धर्मपत्नी रीना शर्मा और दो पुत्र अर्णव शर्मा आरव शर्मा छोड़ गए हैं वे शिक्षक विनोद शर्मा और रूखमणी शर्मा के भाई थे उनका अंतिम संस्कार 20 अक्टूबर रविवार को गृह ग्राम मटिया मुक्तिधाम में 11 बजे किया जाएगा।

आज करवा चौथ, छलनी से पति के मुखड़े का होगा दीदार

राजनांदगांव (दावा)। आज शहर सहित पूरे अंचल भर में सुहागन महिलाओं द्वारा करवा चौथ का पर्व धूमधाम के साथ मनाया जाएगा। रविवार 20 अक्टूबर को सौभाग्यवती महिलाओं द्वारा अपने पति के स्वास्थ्य और दीर्घ जीवन के लिए करवा चौथ का कठिन उपवास रखेंगी और देर शाम छलनी में चंद्र देव का दर्शन कर तथा उसी में अपने पति के मुखड़े का दीदार करने के पश्चात व्रत का समापन किया जाएगा।

बताया दें कि करवा चौथ व्रत समाप्ति के पूर्व अपने पति के हाथों मिट्टी से बने गड़वे (करवा) से पानी पिया जाता है। इसके लिए मिट्टी से बने गडुवे से शहर का पूरा बाजार सजा पड़ा है, जिसकी जमकर बिक्री हो रही थी। बाजार में बिकने वाले मिट्टी के गड़वे की तरह बाजार में शक्कर से निर्मित गडूवा भी बड़ी मात्रा में डिमांड रही। बताया जाता है कि करवा व्रत रखने वाली सुहागिन महिलाएं शक्कर निर्मित इस कड़वे में पूजा प्रसादी गेंहू, गुड़ व थोड़ी नगद राशि रखकर सासु माता जी को दिया जाता है और उनके चरण छूकर आशीर्वाद लिया जाता है। बता दें कि अश्विनी मास के कृष्ण पक्ष की चौथ तिथी को चंद्रमा पृथ्वी के काफी करीब होता है। करवा चौथ को लेकर महिलाओं द्वारा खासी तैयारियां की गई है और दिनभर आज बगैर कुछ खाए-पिए निर्जला व्रत रखकर अपने पति का इंतजार करेंगी तथा पति के आते ही भगवान चंद्रदेव का चलनी में दर्शन कर और उसी चलनी में अपने

बाजार में पूजा सामग्रियों की बढ़ी मांग, मिट्टी के साथ-साथ लुभा रहे रंग-बिरंगी शक्कर निर्मित (करवा) गडुवा

सुहागन महिलाएं कठिन उपवास रखकर देर शाम चंद्रमा का करेंगी दर्शन

पति का दर्शन कर उनके हाथों से गडुवे में पानी ग्रहण कर अपने व्रत का समापन करेंगी। इस दौरान व्रती महिलाओं द्वारा अपने पति सहित बड़े बुजुर्गो का आशीर्वाद ग्रहण किया जाएगा।

बता दें कि करवा चौथ को लेकर शहर का बाजार भी पूरी तरह सजा हुआ है। जयस्तंभ चौक रोड कुम्हार पसरा से लेकर मुख्य मार्केट गोलबाजार, शनि मंदिर रोड व गुड़ाखू लाइन सहित अन्य जगहों पर करवा चौथ से संबंधित सामग्रियों की दुकानें लगी हुई है जहां इन सामानों की जमकर खरीदारी हो रही है। बाजार में इससे चहल-पहल और वस्त्राभूषणों के दुकानों सहित ब्यूटी पार्लरों व सौंदर्य प्रसाधन की दुकानों में भीड़ देखी गई। कई महिलाएं तो ब्यूटी पार्लर का पहले से ही बुकिंग करवा कर रख ली थी। करवा चौथ व्रत रखने वाली सौभाग्यवती महिलाओं ने आज पूरी तैयारी कर रखी है। करवा चौथ व्रत के समय पूरे समाज श्रृंगार से युक्त होकर चंद्र देवता की पूजा अर्चना करेंगी तत्पश्चात अपने पति के चांद से मुखड़े का दीदार कर व्रत का समापन किया जाएगा। इस दौरान पति द्वारा अपनी प्यारी सी श्रीमती जी को बढ़िया सा उपहार भी भेंट किया जाएगा। महिलाओं का यह करवा चौथ व्रत अपने पति का न केवल अच्छी स्वास्थ्य व दीर्घ जीवन के लिए ही नहीं एक दूसरे के प्रति प्रेम, प्यार व समर्पण भाव को दर्शाने वाला अनुष्ठानिक पर्व है जिसे सुहागिन महिलाएं खुशी-खुशी रखती है और अपने पत्नी धर्म निबाहती है। आज इसकी छटा चहुंओर बिखरी दिखाई देगी।

पूजा सामग्रियों की रही मांग

बता दें कि करवा चौथ के पूजा सामग्रियों को लेकर जयस्तंभ चौक आसपास सजी दुकानों में महिलाओं की सबसे ज्यादा भीड़ देखी गई। यहां जूनी हटरी तिराहे से लेकर कुम्हार पसरा, महावीर चौक तक पूजा सामग्रियों की सजी दुकानों में करवा चौथ पूजन के दौरान उपयोग में आने वाले मिट्टी के रंग- बिरंगी गडुए (करवा), धातु के बने आकर्षक छलनी आदि सहित महिलाओं के सौंदर्य प्रसाधन की सामाने धड़ल्ले से बिक रही थी।

जयस्तंभ चौक पर पूजा सामग्रियों की दुकानें लगाए एक महिला व्यवसायी ने चटकदार लाल-पीले व भगवा रंग में आकर्षक ढंग से सजे मिट्टी के गडुए (करवा) की कीमत 70 रुपए नगद से लेकर 100 रुपए तक बताई। इसी तरह धातु से बने आकर्षक छलनियों की कीमत 100 रुपए से लेकर 120 रुपए तक व आकर्षक ढंग से सजी पूजा थालियां भी दो से ढाई सौ रुपए में बेचा जाना बताया। करीने से सजे इन दुकानों मे पूजा के दौरान उपयोग आने वाले कुशा, मौली धागा, सहित महिलाओं के सौंदर्य प्रसाधन की वस्तुएं नेलपालिश, आलता, टिकुली, बिन्दी, मेहंदी, महावर, चूनरी, फुंदरी आदि धड़ल्ले से बिकी। महिलाओं ने इन सामानों की जमकर खरीदारी की। शहर में उक्त सामाने देर शाम तक बिकती रही। इसी तरह बाजार में नए वस्त्राभूषणों की खासी मांग रही। पर्व को देखते हुए कपड़ा व्यवसायियों ने साड़ियों की एक से बढ़कर एक व्हेरायटिया मंगवाई थी, जिसकी जमकर बिक्री हुई। सोने चांदी के दाम में वृद्धि होने के बाद भी महिलाओं के ज्वेलरी आइटम की भी अच्छी खरीदारी हुई। इससे बाजार का माहौल गुलजार रहा।

मुनियाबाई यादव का निधन

राजनांदगांव (दावा)। बसंतपुर क्लब चौक निवासी

मुनियाबाई यादव पति सुनील यादव (55 वर्ष) का 17 अक्टूबर को देर रात को निधन हो गया। वह बीते कुछ दिनों से अस्वस्थ चल रही थी। उनकी अंतिम यात्रा 18 अक्टूबर को निज निवास क्लब चौक से मुक्तिधाम के लिए निकाली गई, जहां उनका अंतिम संस्कार किया गया।

वह अपने पीछे पुत्र अमित यादव, बहू प्रमिला यादव समेत तीन पुत्री अनिता यादव, अलका यादव और अनुराधा यादव व नाती नितेश यादव, नतनीन नेमिका यादव व काजल यादव का भरापूरा परिवार छोड़ गई।

जिले के घोर नक्सली प्रभावित क्षेत्र में कलेक्टर संजय अग्रवाल का निर्भिक विचरण

राजनांदगांव (दावा)। जिले के नक्सल प्रभावित क्षेत्रों का अधिकारियों द्वारा दौरान कर अपनी निर्मिता का परिचय दिया गया वहीं जिले के कलेक्टर संजय अग्रवाल ने बाइक में बैठकर नक्सल प्रभावित क्षेत्रों का भ्रमण कर तथा वन क्षेत्रों के लोग से मुलाकात कर एक मिसाल पेश की है। इस तरह हमारे वरिष्ठ अधिकारी व पुलिस प्रशासन के लोगों की निर्भिकता व उनके जीवटता के दर्शन लोगों को हुए।

नक्सल प्रभावित ग्राम खुर्सीपार खुर्द, खोलारघाट, कौहापानी क्षेत्र में वरिष्ठ अधिकारियों ने किया दौरा

बताया जाता है कि इस दौरान नक्सली क्षेत्र में रहने वाले ग्रामीणों से अधिकारी रूबरू भी हुए साथ ही आंगनबाडी एवं स्कूलों के बच्चों एवं शिक्षकों के साथ मिलकर शिक्षा गुणवत्ता तथा मध्यान भोजन के संबंध में जानकारी भी ली गई। यही नहीं विकास कार्य के तहत पूर्व में प्रस्तावित रोड़ एवं पुल-पुलियॉ का निरीक्षण किया गया। बता दें कि बेस कैम्प कोठीटोला में जिला पुलिस एवं आईटीबीपी द्वारा शिक्षित बेरोजगार युवक-युवतियों को अग्निवीर, पुलिस भर्ती व अन्य भर्ती का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। माओवादियों द्वारा काल्पनिक एवं अव्यवहारिक तथा विकास विरोधी विचारधाराओं के माध्यम से अंदरूनी इलाके की आम जनता को गुमराह करते हुए क्षेत्र की विकास में बाधा बने है लेकिन जिले की जनता द्वारा माओंवादियों के सिद्वान्त के खोखलेपन को समझते हुए उनका साथ छोडकर शासन प्रशासन का साथ देकर आने वाली पीढी हेतु एक मजबूत नींव रखना शुरू कर दिया है। इस कारण से जिला की अंदरूनी एवं सीमावर्ती क्षेत्र में भी सड़क निर्माण, पुल-पुलिया निर्माण एवं अन्य जनकल्याणकारी कार्य से आम जनता लाभान्वित हो रहे है।

इसी तारतम्य में गुरुवार 17 अक्टूबर को पुलिस महानिरीक्षक, दीपक झा राजनांदगांव रेंज, कलेक्टर संजय अग्रवाल, पुलिस अधीक्षक मोहित गर्ग, मुकेश ठाकुर, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, नक्सल अभियान, मनोज मरकाम, अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) डोंगरगढ़, आशीष कुंजाम, पुलिस अनुविभागीय अधिकारी डोंगरगढ़, अजीत ओगरे, उप पुलिस अधीक्षक, नक्सल अभियान राजनांदगांव, निरीक्षक मिलन सिंह, थाना प्रभारी बोरतालव एवं निरीक्षक ढाल सिंह, चौकी प्रभारी मोहारा व अन्य नक्सल सेल, डीआरजी के अधिकारी जवान थाना बोरतालव, डोंगरगढ़ के घोर नक्सल प्रभावित ग्राम- खोलारघाट, खुर्सीपार खुर्द, कौहापानी, कुर्रेझर, चिखलाकसा क्षेत्र में मोटर सायकल से भ्रमण किया गया एवं ग्रामीणों एवं आंगनबाड़ी व स्कूलों के बच्चों व शिक्षकों से मुलाकात कर शिक्षा गुणवत्ता एवं मध्यान भोजन के संबंध में चर्चा की गई है बच्चों को चाकलेट व बिस्किट भी बाटा गया। भ्रमण के दौरान प्रस्तावित रोड़ एवं पुल-पुलियॉ का भी निरीक्षण कर चर्चा किया गया। तत्पश्चात कैम्प कोठीटोला में पुलिस एवं आईटीबीपी के द्वारा 30-35 शिक्षित बेरोजगार युवक एवं युवतियों को लिखित एवं फिजिकल फिटनेस की तैयारी करवाया जा रहा है उनसे कैम्प कोठीटोला में मुलाकात किया गया एवं प्रशिक्षण के संबंध में जानकारी ली गई तथा प्रतियोगी परीक्षाओं के लिये मोटिवेट किया गया।

सौ बिस्तर अस्पताल में पेट में ही नवजात ने तोड़ा दम, परिजनों ने मचाया हंगामा

हॉस्पिटल पर लगाया लापरवाही के गंभीर आरोप

राजनांदगांव (दावा)। बसंतपुर स्थित सौ बिस्तरों वाले जिला हॉस्पिटल में प्रसूति के दौरान नवजात शिशु की मौत हो गई। इससे हास्पिटल में हंगामा खड़ा हो गया। परिजनों ने हॉस्पिटल प्रबंधन के ऊपर लापरवाही के गंभीर आरोप लगाए और देर तक अस्पताल में हंगामा करते रहे।

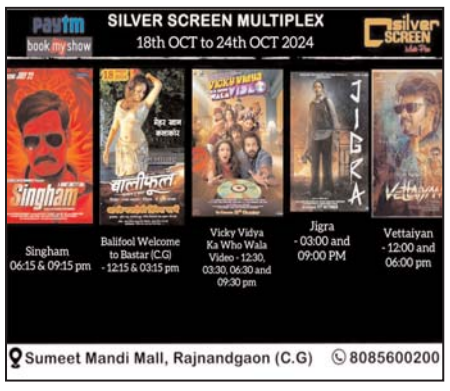

बताया जाता है कि भिलाई क्षेत्र निवासी तेजस्विनी वर्मा पति भूपेंद्र वर्मा (30 वर्ष) को जिला हॉस्पिटल में प्रसूति के लिए भर्ती कराया गया। डाक्टर द्वारा सुबह 8 बजे करीब उसका ब्लड सेंपल लेकर जांच के लिए भेजा गया। लगभग 12 बजे के करीब जांच रिपोर्ट आने के बाद डाक्टर ने उक्त प्रसूता का आपरेशन किया जिसमें पेट के अंदर से ही मृत लड़की की प्राप्ति हुई। इसे लेकर प्रसूता के परिजन ईलाज में लापरवाही का आरोप लगाते हुए हंगामा खड़ा कर दिया। बताया जाता है कि प्रसूता तेजस्वी का एक बच्चा पहले से है। वह दूसरी बार गर्भवती हुई है, उसे उपचार के लिए जिला चिकित्सालय के सौ बिस्तरों वाले मातृ-शिशु केयर यूनिट में भर्ती कराया गया था। महिला का इलाज जिला चिकित्सालय के स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. कोठारी कर रहे थे। परिजनों की मानें तो डाक्टर ने प्रारंभिक जांच में सही-सही निभ जाने की बात कही थी।

शनिवार की सुबह प्रसूता का ब्लड सेंपल लेकर जांच हेतु भेजा गया। लेकिन अस्पताल परिसर स्थित लैब में जांच रिपोर्ट देने में देरी लगा दी। 12 बजे के करीब जांच रिपोर्ट देने के बाद डॉ. कोठारी ने 12 बजकर 13 मिनट में प्रसूता का प्रसूति की व्यवस्था की लेकिन पेट से ही मृत लड़की की प्राप्ति हुई। इससे प्रसूता तेजस्विनी के परिजन भडक गए और बच्चा मरा हुआ पैदा होने का ठीकरा डॉक्टर व अस्पताल प्रबंधन पर फोड़ना शुरू कर दिया। इससे हास्पिटल में देर तक हंगामे की स्थिति बनी रही।

> संबंधित डॉक्टर ने अपनी ओर से प्रसूता का हरसंभव इलाज किया है, जांच रिपोर्ट आने में समय तो लगता है, बच्ची पेट में ही मृत हो चुकी थी।
>
> **- डॉ. यू.के. चंद्रवंशी**
> **सिविल सर्जन, जिला चिकित्सालय, राजनांदगांव**

शिशु अस्पताल के स्टाफ से दरयाफ्त किए जाने पर पता चला कि डॉक्टर कोठारी काफी सुलझे हुए और हेल्पी नेचर के है। आज तक उनके हाथ से कोई केस नहीं बिगड़ा है और न इस तरह की घटना हुई है। लैब से जांच रिपोर्ट आते हैं उन्होंने महिला की इलाज शुरू कर दी थी। प्रसव के दौरान पेट से ही मरा हुआ बच्चा प्राप्त होता है तो इसमें डाक्टर की क्या गलती?

बहरहाल तेजस्विनी के परिजन इसे मुद्दा बनाकर हंगामा खड़ा करने की कोशिश की। परिजनों का कहना है कि शिशु की रिपोर्ट आने में देरी होने के कारण ना ही उचित ढंग से उनके इलाज हुआ और ना ही किसी भी डॉक्टरों द्वारा अच्छे से जाँच किया गया। महिला तेजस्विनी वर्मा का कहना है कि जिला हॉस्पिटल की व्यवस्था चरमराई हुई है। ना ही ठीक तरह से जांच किया जाता है, ना ही इमरजेंसी केस में त्वरित इलाज की जाती है। वहीं दूसरी ओर जांच की रिपोर्ट के लिए कई घंटों तक का इंतजार कराया जाता है। तब तक मरीज की स्थिति गंभीर हो जाती है। पीड़िता तेजस्विनी ने कहा कि आज मैने अपना शिशु खोया हैं। कल किसी और महिला को इस तरह की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है।

dts श्री कृष्णा (एयरकुल) में
आगामी स्त्री-2 | रोजाना 4 खेलों में
बाल्कनी की एडवांस बुकिंग प्रारंभ है।
समय : 12,3, 6 व 9 बजे रात्रि
छत्तीसगढ़ी भाषा में
दस्तावेज
कलाकार - अनील सिन्हा, सुमन पटनायक आदि।

ऑनलाईन बुकिंग paytm & bookmyshow.com

paytm book my show
SILVER SCREEN MULTIPLEX
18th OCT to 24th OCT 2024

Singham 06:15 & 09:15 pm
Balifool Welcome to Bastar (C.G) - 12:15 & 03:15 pm
Vicky Vidya Ka Who Wala Video - 12:30, 03:30, 06:30 and 09:30 pm
Jigra - 03:00 and 09:00 PM
Vettaiyan - 12:00 and 06:00 pm
Sumeet Mandi Mall, Rajnandgaon (C.G) 8085600200

किराये से देना है
कंचनबाग में सर्वसुविधायुक्त दो मंजिला भवन आफिस के लिये किराये से देना है। 3 बेडरुम, किचन, 3 हाल अटैच लेटबाथ गार्डन सहित पार्किंग की सुविधा उपलब्ध है। किराये से देना है।
-: संपर्क करें :-
मो. 8319936007

शुभांक

अनुमानित

बी. के.

127-0 124-7

चेतावनी:-इस पत्र में प्रकाशित सर्वत्र शुभ राशियां ज्योतिष एवं ग्रह नक्षत्र के आधार पर धारणा मात्र है। इसका सट्टे आदि से कोई संबंध नहीं है, दुरूपयोग न करें। दुरूपयोग करने पर प्रकाशक की कोई जवाबदारी नहीं होगी। -सम्पादक

नगर निगम शहरवासियों के लिए बना प्रताड़ना निगम - कुलबीर छाबड़ा

० निगम टेक्स बढ़ाकर आम जनता से की जा रही लूट
० लूट नहीं रोकी गई तो कांग्रेसी नगर निगम के सामने करेंगे धरना प्रदर्शन

राजनांदगांव (दावा)। शहर कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष कुलबीर छाबड़ा ने शनिवार को प्रेस क्लब में पत्रकार वार्ता आयोजित कर बताया कि शहर का नगर निगम शहरवासियों के लिए प्रताड़ना निगम बन गया है। प्रदेश में भाजपा की सत्ता आने के बाद निगम आयुक्त अपनी मनमर्जी कर जनता को लूटने का कार्य कर रहा है। श्री छाबड़ा ने निगम आयुक्त पर मनमानी किए जाने का आरोप लगाते हुए कहा कि नगर निगम द्वारा शहर के नागरिकों को प्रताड़ित करना शुरू कर दिया है। उन्होंने कहा कि कभी निजी टैक्स वसूली ठेका देकर ठेकेदार के आदमियों से नागरिकों के घर में बिना अनुमति अंदर जाकर नगर निगम की धौस दिखाकर तंग करना और संपत्तिकर को दो से तीन गुना बढ़ाने का काम करना तो कभी स्वनिर्धारण के नाम पर नियम विरूद्ध पटाए गए टैक्स मालिकों के उपर पूर्व वर्ष का अतिरिक्त टैक्स (शुल्क) निकालकर पांच गुना अर्थदंड लगाकर शहर के नागरिकों को मानसिक रूप से प्रताड़ित करने का काम भाजपा सरकार आते ही नगर निगम प्रशासन कर रहा है।

छाबड़ा ने वर्तमान में नगर निगम आयुक्त द्वारा शहर के 584 मकान मालिकों को अर्थदंड प्रदाने हेतु नोटिस भेजा गया है। जिस नोटिस में तारीख भी नहीं डाला गया है। इसका एक उदाहरण है अशोक बाफना, राजकुमार उत्तम चंद, केसरीमल बाफना के द्वारा वर्ष 2024 टैक्स जितना नगर निगम द्वारा निर्धारण कर मांगा गया था उतना ही इनके द्वारा पूरा टैक्स 2023-24 का 24.01.2024 को 15323 रुपए बढ़ा दिया गया है। उसके बाद वर्ष 2024-25 में पिछले वर्ष अंतर राशि 7496 रुपए वर्तमान में गुगल अर्थ एप से निकाली गई है बताकर पिछले वर्ष की अंतर राशि 7496 का पांच गुना अर्थदंड 37480 रूपए अतिरिक्त पटाने हेतु एक सप्ताह पूर्व नोटिस देकर 37480 पटाने हेतु कहा गया है। इसी तरह शहर के 584 मकान मालिकों को पटाए गए व पटाने वाले टैक्स की अंतर राशि नियम विरुद्ध निकालकर जनता को मानसिक रूप से प्रताड़ित कर आर्थिक बोझ दिया जा रहा है और टैक्स बढ़ाने की बाद भी नागरिकों भुगतान नहीं किया गया, बताया जा रहा है। जबकि यह नियम के अनुसार गलत है।

गुगल अर्थ एप मान्य नहीं है

छाबड़ा ने कहा कि गुगल अर्थ एप, जीपीएस नगर निगम में मान्य नहीं है। गुगल अर्थ एप और जीपीएस से नापकर टैक्स लेने के संबध में कोई विषय सामान्य सभा में नहीं आया है। नगर निगम आयुक्त सत्ता सरकार के इशारे पर शहर की जनता को प्रताड़ित करने का काम कर रहे है। नियम विरुद्ध अंतर की राशि पिछले वर्ष की इस वर्ष बिना निगम वार्ड के मोहर्रिर से नाप के निकलवाए बगैर निकालना गलत है और इसके जिम्मेदार नगर निगम के आयुक्त है।

निगम के सामने कांग्रेसी करेंगे धरना प्रदर्शन

छाबड़ा ने कहा कि आयुक्त इस तरह पूरे शहर के घरो के नाप शुरू करके भ्रष्टाचार को बढ़ाने का काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि जहां वाजिब टैक्स होता है यहां लिये जाने में एतराज नहीं है। किन्तु इस तरीके से नोटिस भेजकर भ्रष्टाचार की दुकानदारी खोलने का काम निगम आयुक्त करवा रहे हैं। निगम को पता है कि नोटिस मिलने पर लोग संपर्क करेंगे फिर वहीं से निगम में भ्रष्टाचार और जनता को प्रताड़ित करने का काम शुरू हो जाता है। इस बाबत मेरे द्वारा निगम आयुक्त को लिखित पत्र के द्वारा 584 मकान मालिकों को भेजे गए नोटिस को निरस्त करने बाबत् लिखा गया है। साथ ही कहा है कि जो नियमानुसार हो उसे वर्तमान वर्ष से लिया जाना उचित है, किन्तु हिटलरशाही से पिछले वर्ष का निकालकर पाच गुना अर्थदंड की राशि की नोटिस भेजना के इस नियम विरुद्ध कार्य को स्वीकार नहीं किया जाएगा। नोटिस वापस नहीं लेने पर निगम आयुक्त कार्यालय के समक्ष घरना-प्रदर्शन तथा कांग्रेस के वरिष्ठजनों की जानकारी देकर विधानसमा के माध्यम से सत्ता सरकार के इशारे पर हो रहे नियम विरुद्ध कार्य को बंद कर जनता को राहत देने की मांग की जाएगी।

एनबीआईएस, बोरी में तीन दिवसीय 'कर्निवल' का रंगारंग समापन

राजनांदगांव (दावा)। नीरज बाजपेयी इंटरनेशनल स्कूल, बोरी में आयोजित तीन दिवसीय 'इकोश ऑफ टैलेंट' कर्निवल का समापन रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम से संपन्न हुआ। तीन दिवसीय इस कर्निवल में आखिरी दिन मुख्य अतिथि के रुप में डॉ. रुद्र प्रतापसिंह ठाकुर एवं डॉ. नीतू सिंह ठाकुर उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरुआत ज्ञान तथा कला की देवी मां सरस्वती के तैल चित्र पर दीप प्रज्वलित कर किया गया। मां सरस्वती की वंदना पश्चात् कक्षा ग्यारहवीं की छात्रा रोशनी बघेल तथा अफशा कुरैशी द्वारा सुंदर गीतों की प्रस्तुति दी गई। इसी तरह कक्षा आठवीं के छात्र रुद्रांश जैन की एकल नृत्य की प्रस्तुति को सभी ने खूब सराहा। तीन दिवसीय इस कर्निवल में आखिरी दिन प्री प्राइमरी कक्षाओं की फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता रखी गई थी, जिसमें छोटे बच्चों द्वारा विभिन्न विषयों पर बहुत ही शानदार प्रस्तुति दी गई। कक्षा पहली से पांचवी तक की कक्षाओं के लिए एकल नृत्य तथा एकल गायन तथा 'डांस विथ पैरेंट्स' प्रतियोगिताएं रखी गई थी, जिसमें बच्चों के साथ पालकों में भी उत्सुकता देखी गई। कक्षा छठवीं से नवमीं तथा ग्यारहवीं के बच्चों के लिए वाद्य यंत्र वादन, एकल गायन, युगल गायन, एकल अभिनय तथा युगल अभिनय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था, जिसमें युगल प्रतियोगिता में बच्चों के साथ पालकों ने भी अपनी सहभागिता बढ़-चढ़कर दिखाई। सभी प्रतियोगिताओं के लिए विशेष रुप से बाहरी जजों को आमंत्रित किया गया था, ताकि प्रतियोगिता की गरिमा बनी रहे। शाला परिवार द्वारा आमंत्रित जजों को स्मृति चिह्न देकर अभिवादन किया गया, जिन्होंने अपना अमूल्य समय शाला में होने वाले कर्निवल के लिए निकाला। तीन दिवसीय आयोजित इस 'इकोश ऑफ टैलेंट' कर्निवल में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त बच्चों को प्रशस्ति पत्र तथा स्मृति चिह्न दी गई। शाला के डायरेक्टर नीरज बाजपेयी ने इस तीन दिवसीय कर्निवल के गरिमामयी संगीतमय समापन समारोह में सभी को शुभकामनाएं देते हुए अपने उद्बोधन में कहा कि हर बच्चे के अंदर प्रतिभा छिपी होती है आवश्यकता केवल इतनी है उस प्रतिभा को निखारने की।

एनबीआईएस शाला बच्चों को एक मंच दे रहा है जहां बच्चे अपनी क्षमता अनुरुप गतिविधि में भाग ले और खेल भावना रखते हुए आगे बढे। तीन दिवसीय 'इकोश ऑफ टैलेट' कर्निवल में खेल, नृत्य, संगीत, अभिनय, ड्राइंग, आर्ट क्राफ्ट, भाषा, लेखन सभी को जोड़ा गया था जहां बच्चे अपनी रुचि अनुसार विषय का चुनाव कर प्रतियोगिता का हिस्सा बन सके। यह पहला अवसर है जब शाला के एक हजार बच्चों ने इस प्रथम प्रयास कर्निवल में अपनी सहभागिता दी। एनबीआईएस शाला सदैव बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए तत्पर संस्था है, जो बच्चों के हित में कार्य करती है। अपने पहले प्रयास के इस 'इकोश ऑफ टैलेंट' कर्निवल में बच्चों की उत्सुकता के साथ में पालकों की दिलचस्पी भी सराहनीय है। इस कर्निवल के पूरे तीन दिवसीय आयोजन में शाला के डायरेक्टर नीरज बाजपेयी, श्रीमती सोनल बाजपेयी, सुश्री कुंतल बाजपेयी, प्राचार्या श्रीमती एकता गांधी, एडमिन नितिन चौहान, शिक्षक, बच्चें तथा पालक उपस्थित रहें। शाला की प्राचार्या श्रीमती एकता गांधी ने 'इकोश ऑफ टैलेंट' कार्निवल के प्रथम प्रयास के सफल आयोजन के लिए शाला परिवार, बच्चे एवं पालकों का आभार व्यक्त किया गया।

55 दुकानों का संचालन कर आत्मनिर्भर हो रही महिलाएं

50 हजार से लेकर 2.5 लाख वार्षिक आय हो रही है

राजनांदगांव (दावा)। जब कोई व्यक्ति 10 वर्ष तक कार्य करे और उसे काम से हटना पड़े उसके लिये आर्थिक एवं मानसिक रूप से परेशान होना स्वाभाविक है साथ ही उनके पास व्यवसाय करने के लिये पैसा ना हो ऐसे स्थिति में मजदूरी एवं सेठ के पास जाकर कम पैसे में नौकरी करने के अलावा कोई विकल्प नही रहता और आगे कोई व्यवसाय की ओर नही सोच पाता। इसको देखते हुए हरियाली बहिनी अभियान के प्रमुख शिव कुमार देवांगन वे स्वयं तत्काल निर्णय लेते हुए पी.एम.ई.जी.पी योजनान्तर्गत 4 लाख का ऋण यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया राजनांदगांव से ऋण लिया और वे महिलाओं के लिये 0 प्रतिशत लागत में व्यवसाय कराने की सोची जिसमें किसी प्रकार का कोई जोखिम न हो उनमें सबसे पहले जिनके पास स्वयं का मकान हो इसके लिये कृषि केन्द्र और साड़ी सेन्टर खोलने का निर्णय लिया गया। कृषि केन्द्र पुरूषार्थ कार्य है उसे चलाने प्रारंभ में महिलाओं को काफी दिक्कत हुई लेकिन कृषि विभाग के मदद से इस कार्य को करने में सक्षम हो गये उसके उपरान्त साड़ी सेन्टर का संचालन करने लगे। आज 55 सेन्टर में संचालित है एक सेन्टर का जिसकी वार्षिक 25 लाख तक का व्यवसाय कर रहे है। सेन्टर की संचालिका श्रीमती प्रियंका डालेश्वर साहू ग्राम-खोभा विकासखण्ड-छुरिया, को 2 वर्ष में 5 लाख का शुद्ध लाभ हुआ है इसके अतिरिक्त अन्य सेन्टर में 50 हजार से लेकर 1 लाख का वार्षिक शुद्ध आमदानी होने लगी है। शिव कुमार देवांगन ने आगे बताया कि 55 सेन्टर की माँ बम्लेश्वरी स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाएं को रोजगार में जोड़ा गया साथ ही काम का विस्तार करते हुए अपने पति को रोजगार दे रही है।

आज परिवार में खुशी एवं महिलाओं के प्रति सम्मान बढ़ा है। सभी 55 सेन्टर में कम दरों पर उपलब्ध होने के कारण आसपास के 15-20 गाँव के लोग आते हैं व्यवसाय को बढ़ते देख मोहला विकासखण्ड के ग्राम-गोटाटोला एवं छुरिया विकासखण्ड के ग्राम-कल्लुबंजारी में थोक कपड़ा दुकान खोला गया है इसके पूर्व माँ बम्लेश्वरी सेवा साड़ी सेन्टर पाताल भैरवी राजनांदगांव से थोक में खरीदी करते थे जिसमें 55 सेन्टर के अलावा अन्य कपड़ा व्यवसायी भी आते है उसका प्रमुख कारण रायपुर से कम दरों पर स्थानीय स्तर पर उपलब्ध हो जाता है जिससे उनको समय एवं ट्रांसपोर्टिंग में बचत हो रही है व्यवसाय को बढ़ते देख 3 लोग को पी.एम.ई.जी.पी.आई. एवं 4 लोगों को मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना अंतर्गत यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया एवं बैंक ऑफ बड़ौदा से ऋण का लाभ मिला है।

आज तोतले बच्चों के उपचार शिविर का समापन

० कलेक्टर संजय अग्रवाल होंगे मुख्य अतिथि
० एसपी मोहित गर्ग करेंगे अध्यक्षता

राजनांदगांव (दावा)। अग्र बायोडाटा सेंटर रायपुर एवं श्री सत्यनारायण मंदिर समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित तोतले बच्चों का उपचार शिविर का समापन 20 अक्टूबर रविवार को दोपहर 4:00 बजे श्री सत्यनारायण धर्मशाला में आयोजित है। समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में जिला कलेक्टर संजय अग्रवाल उपस्थित होकर शिविर में शामिल बच्चों को आशीर्वाद प्रदान कर उनका उत्साहवर्धन करते हुए प्रमाण पत्र वितरित करेंगे। समारोह की अध्यक्षता एस पी मोहित गर्ग, एवं विशिष्ठ अतिथि अग्र बायोडाटा सेंटर, रायपुर के अध्यक्ष समाजसेवी श्याम गोयल करेंगे। अतिथि के रूप में रायपुर के ही समाजसेवी रूपचंद अग्रवाल, नारायण प्रसाद अग्रवाल एवं राधेश्याम जैन उपस्थित रहेंगे।

श्री सत्यनारायण मंदिर समिति के अध्यक्ष अशोक लोहिया द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार मंदिर समिति द्वारा तोतले बच्चों का दूसरा उपचार शिविर 17 अक्तूबर से प्रारंभ हुआ है। जिसमें चार वर्ष से लेकर 41 वर्ष तक के 52 तोतला बोलने वाले बच्चों एवं महिला का उपचार अग्र बायोडाटा सेंटर रायपुर के सदस्य समाजसेवी सत्यनारायण मित्तल द्वारा स्पीच थेरेपी के माध्यम से किया गया।

श्री मित्तल का यह 35वां शिविर है। आज समापन समारोह में उपचार किए गए बच्चों एवं उनके अभिभावकों से मंच में उनके अनुभव साझा किए जाएंगे। उपचार किए गए मरीजों का कितना शब्द उच्चारण शुद्ध हुआ है, समिति द्वारा उसका प्रमाण पत्र मुख्य अतिथि जिलाधीश संजय अग्रवाल के हाथों वितरित कराया जाएगा। समिति ने उपचार प्राप्त सभी बच्चों एवं प्रतिभागियों के अभिभावकों, आम नागरिकों से आग्रह किया है कि समापन समारोह में समय पूर्व अवश्य उपस्थित होकर प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन करें।

आज अभा वन खेलकूद प्रति. के समापन में विस अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह होंगे शामिल

रायपुर (दावा)। राजधानी रायपुर के स्वामी विवेकानंद एथलेटिक स्टेडियम कोटा में छत्तीसग की मेजबानी में आयोजित अखिल भारतीय वन खेलकूद प्रतियोगिता का समापन समारोह कल 20 अक्टूबर शाम 4 बजे को होगा। समापन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में छत्तीसगढ़ विधानसभा के अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह शामिल होंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री केदार कश्यप करेंगे। आदिम जाति एवं किसान कल्याण मंत्री रामविचार नेताम एवं उत्तराखण्ड तकनीकी शिक्षा मंत्री सुबोध उनियाल, रायपुर लोकसभा के सांसद बृजमोहन अग्रवाल, पूर्व मंत्री एवं रायपुर पश्चिम के विधायक राजेश मूणत, रायपुर उत्तर के विधायक पुरंदर मिश्रा, रायपुर ग्रामीण के विधायक मोतीलाल साहू तथा भारत सरकार में वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के वन महानिदेशक एवं विशेष सचिव जितेन्द्र कुमार, छत्तीसगढ़ शासन के मुख्य सचिव अमिताभ जैन, पुलिस महानिदेशक अशोक जुनेजा, भारतीय निशानेबाज एवं ओलम्पिक पदक विजेता सुश्री मनु भाकर समापन कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल होंगे। कार्यक्रम में उत्कृष्ट खिलाड़ियों, उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारियों तथा विजेता खिलाड़ियों को सम्मानित किया जाएगा।

इंडी गठबंधन में कांग्रेस का लगातार गिर रहा है ग्राफ- राजेश गुप्ता अग्रहरि

जम्मू-कश्मीर सरकार में कांग्रेस को मंत्री तो क्या संतरी के लायक भी नहीं समझा गया

राजनांदगांव (दावा)। हरियाणा चुनाव में भाजपा के हाथों कांग्रेस की करारी हार के बाद कांग्रेस के निरंतर नीचे की ओर जा रहे ग्राफ पर तंज कसते हुए भाजपा शिक्षा एवं सांस्कृतिक प्रकोष्ठ प्रभारी राजेश गुप्ता अग्रहरि ने कहा कि लोकसभा चुनाव से लेकर विधानसभा चुनावों में कांग्रेस की फिसड्डी प्रदर्शन व कांग्रेस को मिल रही लगातार हार को लेकर उनके इंडी गठबंधन के साथी उन्हें आंखें दिखाने से नहीं चूक रहे हैं।

कांग्रेस के गिर रहे निरंतर ग्राफ से उनके गठबंधन साथियों के अलावा देश की जनता भी उसे महत्व नहीं दे रही, यहां तक कि हाल में ही जम्मू-कश्मीर में संपन्न हुए विधानसभा चुनाव में मात्र 6 सीट पाने वाली कांग्रेस को उनके ही गठबंधन के साथी नेशनल कांफ्रेंस की उमर अब्दुल्ला वाली सरकार ने कांग्रेस को मंत्री तो क्या संतरी पद के लायक भी नहीं समझा। कांग्रेस की इस तरह की बेइज्जती व चुनावों में लगातार होने वाली हार से कांग्रेस के युवा नेता लगातार छिटक रहे हैं वहीं कांग्रेस के इस तरह की मटियामेटी प्रदर्शन से बरसो से साथ रह रहे कांग्रेसी जिसमें देश प्रेम की भावना व सनातन धर्म के संस्कार है ऐसे वरिष्ठ जन व कांग्रेस के कार्यकर्ता निरंतर हतोत्साहित हो रहे है।

श्री गुप्ता अग्रहरि ने कांग्रेस की इस तरह की स्थिति के लिए इसके युवराज राहुल गांधी की राजनीतिक अपरिपक्वता, उसका बाडी लेंग्वेज व परिवारवाद सहित देश के दुश्मनों को वरियता देने के अलावा मुस्लिम तुष्टिकरण, भ्रष्टाचार, और आलू से सोना निकालने व जलेबी का कारखाना जैसे लाल बूझक्कड़ वाली बात जिम्मेदार है, यह सब बात भाजपा के लिए प्लस पाइंट सिद्ध हो रहा है जो भविष्य के लिए देश हित में है।

'नवा बिहान' के तहत् शा.उच्च.माध्य.विद्या. सिंघोला में साइबर एवं नशे के विरुद्ध जन-जागरुकता अभियान

राजनांदगांव (दावा)। ऑपरेशन 'नवा बिहान' के तहत् शा.उच्च.माध्य.विद्या. सिंघोला में साइबर एवं नशे के विरूद्ध जन-जागरूकता अभियान चलाकर विद्यालय के छात्र छात्राओं को जागरूक किया गया। ज्ञात हो कि पूरे प्रदेश में साइबर जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है इसी परिप्रेक्ष्य में राजनांदगांव ब्लाक के सुरगी थाना के प्रभारी हरीश टेभुलकर द्वारा छात्र-छात्राओं को जागरूक किया व जन जागरूकता के पाम्पलेट का वितरण किया गया। राजनादगांव पुलिस प्रशासन द्वारा 05 अक्टूबर से 19 अक्टूबर तक चला रही है। व्याख्याता जय प्रकाश साहू ने कहा आज हर व्यक्ति, बच्चे, बूढ़े सभी मोबाईल फोन व इंटरनेट का उपयोग कर रहे है। आज कल सायबर क्रिमिनल सोशल मीडिया प्लेट फार्म के माध्यम से झूठी फेक प्रोफाईल बना कर नये-नये तरीके से लोगों से ठगी अथवा अन्य अपराध कर रहें है। व्याख्याता प्रदीप कुमार साहू ने सोशल मीडिया के माध्यम से होने वाले प्रमुख अपराध जैसे सायबर बुलिंग, सायबर स्टाकिंग, सायबर ग्रुमिंग, चाईल्ड पोंनो ग्राफी के संबंध में बताया गया। प्रभारी प्राचार्य पी.सी.कोसरिया ने बच्चों को गैर कानूनी गतिविधियों में शामिल होना बताकर भयभीत कर केस को समाप्त करने हेतु पैसो की मांग करना इसी बहाने विडियों कॉल के जरिये डिजिटल अरेस्ट करने की धमकी देकर लोगों से पैसे ठगी करने के संबंध में जानकारी दी।

कैलाश बोरकर ने सायबर फ्रॉड से बचने हेतु किसी प्रकार के लालच में न आने, अनजान व्यक्तियों से सोशल मीडिया में न जुड़ने हेतु बताया। व्याख्याता वीर सिंह सोनवानी ने नवा बिहान के तहत् नशा के विरूद्ध नशा मुक्ति के संबंध में नारकोटिक्स/ड्रग्स/अवैध नशा से होने वाले दुष्परिणामों के संबंध में बताया, सुरगी थाना प्रभारी हरीश टेभुलकर ने कहा नशा न केवल व्यक्ति का शारीरिक व मानसिक नुकसान करता है बल्कि उसके परिवार को भी पतन की ओर धकेल देता है। समाज में अपराध की मुख्य वजह नशा ही माना गया है इसी लिये नशे से दूर रहने हेतु समझाईश दी गई। इस अवसर पर शाला नायक-गुणिका साहू, हिमांशी, जागृति साहू, मोलिना साहू, लता साहू, दीपाली साहू हेमलता, चंचल का सहयोग रहा।

हार हमें नित नई सीख देती है-शेर बहादुर

(युगांतर में वार्षिक खेल दिवस का शानदार समापन)

राजनांदगाँव (दावा)। भारत में शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी संस्था युगांतर पब्लिक स्कूल में वार्षिक खेल दिवस का समापन समारोह विद्यालय के भूतपूर्व छात्र शेर बहादुर सिंह ठाकुर डीएसपी पुलिस हैड क्राटर्स रायपुर, रणदीप सिंग भाटिया सीए प्रेसीडेंट तथा जोनल चेयरमैन लायंस क्लब राजनांदगाँव सिटी (पालक जश्नवीर सिंग भाटिया), डॉ सुदीप भट्टाचार्य, डॉ सोनिया भट्टाचार्य नेत्र विशेषज्ञ (पालक सारा भट्टाचार्य) के विशेष आतिथ्य में संपन्न हुआ। स्पोर्ट्स डे कार्यक्रम की रूप रेखा और कार्य योजना विद्यालय की फिजिकल एजुकेशन की वरिष्ठ शिक्षिका वंदना सिंह के निर्देशन में संचालित हुई। इस कार्य योजना को सफल बनाने में वरिष्ठ खेल शिक्षक राजेन्द्र तिवारी, रामनाथ रजक, नवनीत द्विवेदी, टुकेश्वर चंद्राकर, पारख साहू, खेवन निषाद, संतोष यादव, रेणुका साहू, दीपक धुर्वे, राम प्रसाद का अमूल्य योगदान रहा। इस दौरान विद्यार्थियों द्वारा मार्च पास्ट, पी टी ड्रिल तथा खेलकूद से परिपूर्ण नृत्य व संगीत की प्रस्तुति ने सबका मन मोह लिया।

समापन समारोह की शुरूआत गणमान्य अतिथियों द्वारा माता सरस्वती की पूजा अर्चना से हुई। प्रतियोगिता की शुरूआत राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों द्वारा मशाल को हाथ में लेकर विशालकाय ग्राउंड की परिक्रमा से हुई। गणमान्य अतिथियों द्वारा जैसे ही बैलून आकाश में उड़ाया गया, वैसे ही विशालतम ग्राउंड पालकों तथा विद्यार्थियों की तालियों की गड़गड़ाहट से गुंजायमान हो उठा। बच्चों के चेहरे उड़ने वाले बैलून को देखकर तथा फटाको की गूँज से खिल उठे। विद्यालय के पीआरओ, स्पोर्ट्स ऑफिसर दिनेश प्रताप सिंह ने सभी विद्यार्थियों को खिलाड़ी भावना से जुड़ी शपथ दिलाई। इसी तारतम्य में स्पोर्ट्स ऑफिसर के निर्देशन में वार्षिक खेल प्रतिवेदन का प्रस्तुतिकरण हैड गर्ल जिया अग्रवाल द्वारा किया गया, जिसमें जिला,जोनल,राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर विद्यार्थियों की उपलब्धियों का उल्लेख किया गया।

विद्यालय के प्राचार्य डॉ मधु पी चौधरी ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि विगत दिवसों से विद्यालय में विद्यार्थियों ने अपनी खेल प्रतिभा को प्रकट कर उत्साह से परिपूर्ण वातावरण निर्मित कर दिया है। इसमें सभी स्पोर्ट्स टीचर्स ने अपनी अथक मेहनत की। उन्होंने इसके लिए सभी स्पोर्ट्स टीचर्स को बधाई दी। उन्होंने कहा कि खेल में हार जीत तो होती ही है। इससे हमें प्रेरणा लेकर आगे बढ़ना चाहिए। विशेष अतिथि शेर बहादुर सिंह ठाकुर ने कहा कि युगांतर में शिक्षा के साथ खेल की भी विशेष सुविधाएँ हैं। विद्यार्थी इन सुविधाओं का लाभ लेकर अपने विद्यालय, नगर, राज्य का नाम गौरवान्वित कर रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि हमारी जीत से ज्यादा हमारी हार हमें नित् नया सिखाती है, इसलिए हमें हार से घबराना नहीं चाहिए । हार को स्वीकार करना भी साहस का काम होता है, यही हमें आगे जीतने की प्रेरणा देता है। इसी तरह विशेष अतिथि रणदीप सिंग तथा डॉ सुदीप भट्टाचार्य ने भी विचार प्रकट किए। उन्होंने युगांतर की खेल सुविधाओं की सराहना की। विद्यालय के चेयरमैन विनोद सदानी ने कहा कि पढ़ाई के साथ खेल का भी महत्व होता है। खेल में हार-जीत का मजा सबसे अलग होता है। यह हमें जीवन मे नई सीख देता है कि हार में ज्यादा निराश नहीं होना चाहिए तथा जीत में ज्यादा उत्साहित नहीं होना चाहिए। इस अवसर पर आयोजित प्राइमरी विभाग के विद्यार्थियों की खूबसूरत रेस ने सभी का मन मोह लिया। पैरेंट्स इवेंट्स में पालकों की बड़ी संख्या में सहभागिता में आयोजन में चार चाँद लगा दिया। प्राइमरी विभाग के रनिंग इवेंट्स विभाग की सेक्शन इंचार्ज श्वेता मूंदड़ा और अंग्रेजी शिक्षक सेमुअल जार्ज के मार्गदर्शन में आयोजित हुए। कक्षा 6वी से बारहवी तक के विद्यार्थियों की रेस ने भी सभी के मन में उमंग का वातावरण निर्मित कर दिया। इस शैक्षणिक सत्र 2024-25 में मधुरम हाउस विजेता रहा। मधुरम हाउस के विद्यार्थियों ने हाउस के प्रभारी शिक्षक क्रमशः अर्पण मसीह, मोनिका रोय, दीपांक्षा शर्मा, राजेश चौबे, तनुश्री मुखर्जी, नम्रता तिवारी तथा सहयोगी शिक्षक ललित महोबिया, शालिनी नायर, सुधीर सिंह, प्रवीण राजन, टी विशाल, लवली पाल, आकांक्षा चतुर्वेदी, अदिति शुक्ला, सेजल शर्मा, मानसी दस्तीदार, स्नेहा टल्लू, तृप्ति गौतम, मेधा एस ढोके के मार्गदर्शन में यह उपलब्धि हासिल की। मधुरम हाउस के विद्यार्थियों ने जीत से उत्साहित होकर अपने हाउस का ध्वज आकाश में लहराते हुए दर्शकों का अभिवादन किया।

इसी तारतम्य में कक्षा 6वीं से 8वीं तक के वर्ग में बेस्ट स्पोर्ट्स गर्ल वर्णिका तिवारी तथा बेस्ट स्पोर्ट्स ब्वॉय आसिफ हुसैन रहे, जबकि कक्षा नवमी से बारहवी तक के वर्ग में बेस्ट स्पोर्ट्स ब्वॉय आयुष सिदार तथा बेस्ट स्पोर्ट्स गर्ल चंचल रही। सत्यम, शिवम, सुन्दरम और मधुरम हाउस के हाउस इंचार्ज और डिप्टी हाउस इंचार्ज तथा सहयोगी शिक्षक - शिक्षिकाओं ने बच्चों को प्रोत्साहित करने में अमूल्य योगदान दिया। समापन समारोह का प्रभावकारी संचालन अंग्रेजी की विभागाध्यक्ष कंचन सोहल तथा हिन्दी विभागाध्यक्ष वी एन राय के मार्गदर्शन में हुआ। समारोह को छात्रा जिया अग्रवाल, स्याली कोठारी, सारा भट्टाचार्य, छात्र विवान गांगुली ने संचालित किया। समारोह में विद्यालय के सेक्रेटरी विनय डड्ढा, कोषाध्यक्ष मिश्रीलाल गोलछा, निदेशक (स्पोर्ट्स) अजय सिंगी, अखराज कोटड़िया, नरेंद्र कोटड़िया सहित बड़ी संख्या में पालकगण उपस्थित रहे। समारोह को सफलतापूर्वक संचालित करने में नृत्य, संगीत, कला, मेस, ट्रान्सपोर्ट प्रभारियों का भी योगदान रहा। धन्यवाद ज्ञापन स्पोर्ट्स सेक्रेटरी सृष्टि वर्मा ने किया।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे

विविध कार्य हेतु निविदा सूचना

निविदा सूचना क्रमांकः 06/निविदा/विद्युत/निर्माण/द.पू.म.रेलवे/बी.एस.पी./2024, दिनांकः 04.10.2024

कार्य का नामः "द.पू.म. रेलवे नागपुर मंडल के राजनांदगांव-नागपुर के मध्य रेलवे लाइन तिहरीकरण कार्य के अंतर्गत, 33 केवी =6 नग, 11 केवी =5 नग के लिए ओवर हेड पावर लाइन क्रॉसिंग को भूमिगत केबलिंग सिस्टम में संशोधित करने और किलोमीटर नंबर 1122/29-30 और 975/34-32 पर ओवर हेड पावर लाइन क्रॉसिंग को हटाने का कार्य, गोंदिया में बीआर 178 पर डीपी लगाना और साथ में केबल समाप्ति का कार्य तथा अन्य संबंधित कार्य। **निविदा मूल्यः** रू. 1,46,10,389.9/- (एक करोड़ छियालीस लाख दस हजार तीन सौ नवासी रूपये नौ मात्र), **बयाना राशिः** रू. 2,23,100/-, **निविदा बंद होने का समय एवं दिनांकः** 30.10.2024 को 15:30 बजे, **कार्य पूर्णता की अवधिः** 12 (बारह) माह स्वीकृती पत्र जारी होने की तारीख से ।

वेबसाइट का विवरण तथा नोटिस बोर्ड का स्थानः उपर दिए गए कार्य के लिए विस्तृत जानकारी/ई-निविदा दस्तावेज पात्रता का मापदंड तथा अन्य विस्तृत विवरण हेतु ई-निविदा को कागजात, जो हमारी वेबसाइट www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है उसे डाउनलोड कर/देख सकते हैं ।

कृते उप-मुख्य विद्युत अभियंता(निर्माण)
सीपीआर/10/291 द.पू.म.रेलवे नागपुर

South East Central Railway @secrail

अनमोल दावा

"संघर्षों का सम्मान करना सीखें, क्योंकि इसी में आपकी सफलता का रहस्य छिपा रहता है।

अपने ही क्षत्रपों से पस्त कांग्रेस, पतन में अंतर्कलह की बड़ी भूमिका

ज्योतिरादित्य सिंधिया के संभावनाशील चेहरे पर दांव लगाने के बजाय दिग्विजय सिंह और कमलनाथ सरीखे पुराने क्षत्रपों के चंगुल में फंसे रहने का परिणाम यह हुआ कि बगावत के चलते 2020 में ही मध्यप्रदेश में कांग्रेस सरकार गिर गई। सचिन पायलट को बगावत से रोककर कांग्रेस आलाकमान राजस्थान में तब तो सरकार बचाने में सफल रहा पर पिछले साल विधानसभा चुनाव में उसकी विदाई हो गई।

हरियाणा की हार से हतप्रभ राहुल गांधी गुस्से में बताए जाते हैं। समीक्षा बैठक में उनकी इस टिप्पणी की बहुत चर्चा है कि नेताओं ने 'अपने हितों को पार्टी हित से बड़ा समझा', पर क्या ऐसा पहली बार हुआ? राहुल गांधी 2004 में चुनावी राजनीति में आए। संयोगवश उसी साल कांग्रेस का केंद्रीय सत्ता से दस साल का वनवास समाप्त हुआ। 'शाइनिंग इंडिया' की चकाचौंध में डूबी भाजपा की अगुआई वाले राजग को मतदाताओं ने सत्ता से बेदखल कर दिया। सत्ता परिवर्तन इस मायने में चौंकाने वाला रहा कि तब भाजपा और राजग के नेतृत्व शीर्ष पर अटल बिहारी वाजपेयी सरीखा विराट व्यक्तित्व था, जबकि कांग्रेस की कमान सोनिया गांधी के हाथ थी, जिन्हें अपनी पार्टी में भी लंबे सत्ता संघर्ष का सामना करना पड़ा था। तब भी केंद्रीय सत्ता में वापसी के लिए कांग्रेस ने जमीन पर कुछ ठोस नहीं किया था, पर सोनिया ने चुनावी गठबंधन की गजब बिसात बिछाई। सक्रिय राजनीति का पहला दशक राहुल गांधी के लिए 'आल इज वेल' वाला रहा, पर उसके बाद तो कांग्रेस और कांग्रेसियों की तमाम कमजोरियां बेनकाब होती गईं। ऐसे में स्वाभाविक सवाल है कि स्वयं राहुल ने उन्हें दूर करने के लिए क्या किया है?

यदि राहुल गांधी को हरियाणा विधानसभा चुनाव में अप्रत्याशित हार से ही यह ज्ञान प्राप्त हुआ है कि नेता अपने हितों को पार्टी हित से बड़ा समझते हैं, तब तो सवाल उनकी राजनीतिक समझ पर भी उठ सकता है। मंडल-कमंडल के राजनीतिक ध्रुवीकरण के बाद से देश के दो बड़े राज्यों उत्तर प्रदेश और बिहार में कांग्रेस हाशिये पर है। देश के सबसे पुराने और दशकों तक शासन करने वाले दल की ऐसी दुर्गति कई सवाल खड़े करती है। एक एक क्षण के लिए मान लेते हैं कि उत्तर प्रदेश और बिहार में सामाजिक न्याय के पैरोकार क्षेत्रीय दलों और हिंदुत्ववादी भाजपा के बीच हुए ध्रुवीकरण से कांग्रेस अप्रासंगिक होती गई, लेकिन आखिर अन्य राज्यों में अपनी पराजय कथा के लिए वह किसे दोष देगी? राज्य दर राज्य कांग्रेस अपने ही क्षत्रपों की कठपुतली बन गई है, जो हमेशा अपने हितों को पार्टी हित से ऊपर रखते हैं और आलाकमान को आंखें दिखाने में भी संकोच नहीं करते।

गुटबाजी कांग्रेस का चरित्र रहा है। जब तक आलाकमान सर्वशक्तिमान था, गुटों की नियंत्रित सक्रियता से अंततः पार्टी मजबूत होती थी, लेकिन 2014 में कांग्रेस के ऐतिहासिक पराभव के बाद क्षत्रप अपनी मनमानी करने लगे। अपने और परिवार के अलावा किसी का पनपना इन्हें गवारा नहीं। चाहे इस कवायद से विरोधी दल की मदद ही क्यों न हो। कांग्रेस के पतन में अंतर्कलह की एक बड़ी भूमिका रही है, पर यदि पिछले एक दशक पर ही फोकस करें तो पाएंगे दिल्ली अपूर्ण राज्य ही सही, पर वहां कांग्रेस बेहाल है। 70 सदस्यीय विधानसभा में कांग्रेस की उपस्थिति शून्य है। यह हाल वहां है, जहां 2013 से पहले कांग्रेस लगातार 15 साल सत्ता में रही। मुख्यमंत्री शीला दीक्षित रहीं, जो उससे पहले उत्तर प्रदेश में राजनीति करती थीं। 15 साल की सरकार के कामकाज के बल पर कांग्रेस को बहुत मजबूत होना चाहिए था, फिर ऐसा क्यों हुआ कि वह संगठन और जनाधार, दोनों स्तर पर खोखली होती गई? सत्ताकाल में दिल्ली कांग्रेस का अंतर्कलह राहुल गांधी को याद होगा ही। तब दूरदृष्टि से काम लेते हुए जमीन से जुड़े नेताओं की अगली पीढ़ी को आगे लाया गया होता तो आज चुनाव जीतने लायक चेहरों का अकाल दिल्ली कांग्रेस में नहीं होता। 2018 में राजस्थान, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में चुनाव जीतकर राहुल गांधी ने सबको चौंका दिया था, पर उसके बावजूद वहां कांग्रेस मजबूत हुई या कमजोर? तीनों राज्यों में सरकार बनने के साथ ही अंतर्कलह के जो बीज पड़े, उनकी फसल कांग्रेस को विधानसभा और लोकसभा चुनावों में काटनी पड़ी।

आज करवा चौथ इस समय होगा चंद्र दर्शन, जानें सुबह से शाम तक की पूरी पूजा विधि

करवा चौथ का व्रत मुख्य रूप से गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश और हिमाचल प्रदेश, दिल्ली में रखा जाता है। इस दिन संकष्टी चतुर्थी व्रत भी रखा जाता है। इसे करक चतुर्थी के नाम से भी जाना जाता है। इस व्रत में विवाहित महिलाएं पति की दीर्घायु के लिए करवा चौथ का व्रत रखती हैं और भगवान शिव, माता पार्वती और कार्तिकेय के साथ-साथ भगवान गणेश की पूजा करती हैं।

आजकल कुछ युवतियां भी भावी पति के लिए यह व्रत रखती हैं, हालांकि उनके व्रत का नियम कुछ अलग है। इसके अलावा कुछ पति भी करवा चौथ का व्रत रखते हैं। बहरहाल, इस व्रत में सबसे पहले देवी पार्वती, भगवान शिव, कार्तिकेय, गणेश जी और चौथ माता (देवी पार्वती का रूप) की पूजा की जाती है।

करवा चौथ की कथा सुनी जाती है। बाद में चन्द्रमा के दर्शन और करवा (मिट्टी के पात्र से) उनको अर्घ्य के बाद ही यह व्रत तो?ा जाता है। करवा चौथ का व्रत काफी कठोर व्रत माना जाता है, क्योंकि इस दिन चंद्र दर्शन तक महिलाएं बिना अन्न और जल ग्रहण किए उपवास रखती हैं। पूजा के बाद इसे ब्राह्मण या किसी योग्य महिला को दान में दे दिया जाता है।

कब है करवा चौथ

कार्तिक कृष्ण चतुर्थी तिथि प्रारंभः रविवार, 20 अक्टूबर 2024 को सुबह 06.46 बजे से

कार्तिक कृष्ण चतुर्थी तिथि समापनः सोमवार, 21 अक्टूबर 2024 को सुबह 4.16 बजे तक

करवा चौथ व्रतः रविवार, 20 अक्टूबर 2024

करवा चौथ पूजा मुहूर्त– शाम 05:46 बजे से शाम 07:02 बजे तक

अवधिः 1 घण्टा 16 मिनट

करवा चौथ व्रत समयः सुबह 06.25 बजे से शाम 7.54 बजे तक

अवधिः 13 घण्टे 29 मिनट

करवा चौथ के दिन चंद्रोदयः शाम 07.54 बजे तक

करवा चौथ पूजा विधि

1. करवा चौथ व्रत वाले दिन सुबह जल्दी उठें और स्नान कर साफ-सुथरे कपड़े पहनें और व्रत का संकल्प लें।
2. इसके बाद साफ हाथों से घर की दीवारों पर गेरु से करवा का चित्र बनाएं। सोलह श्रृंगार कर पूजा स्थल पर माता पार्वती, भगवान शिव, गणेशजी, कार्तिकेय की तस्वीर को रखें।
3. एक करवा में जल भरकर पूजा के स्थान पर रखें और उसमें जल भरें।
4. इसके बाद सूर्य को अर्घ्य दें और चौथ माता की कहानी सुनें। कथा पूर्ण होने के बाद बड़े लोगों के पैर छूकर आशीर्वाद लें।
5. शाम के लिए पूजा के लिए थाली तैयार कर लें, फिर एक चौकी पर करवा माता की तस्वीर रखें, उसके बाद दीया जलाएं।
6. गौरा पार्वती, चौथ माता और पूरे शिव परिवार की पूजा करें। करवा चौथ की कथा सुनें और पति की दीर्घायु के लिए मन ही मन प्रार्थना करें।
7. चांद निकलने के बाद चंद्रमा को अर्घ्य दें और छलनी की सतह पर जलता हुआ दीया रखकर चंद्र दर्शन करें, फिर इसी से पति का मुंह देखें।
8. चंद्रमा को देख कर अपनी पति की लंबी उम्र के लिए प्रार्थना करें, फिर पति के हाथों से पानी पीकर व्रत को खोलें। घर के सभी बड़ों का आशीर्वाद लेकर करवा को सास या किसी सुहागिन स्त्री को दे दें, और उनके पैर छू लें।

जोधपुरः भारत का लुप्त होता नीला शहर

अर्शिया

ब्लू सिटी के नाम से मशहूर राजस्थान का जोधपुर शहर दुनिया भर के पर्यटकों को अपनी तरफ़ खींचता रहा है. लेखिका अर्शिया का कहना है कि अब शहर में नीले रंग की इमारतें अपनी रौनक और रंग खोती जा रही हैं. जोधपुर में ब्रह्मपुरी का ये इलाक़ा एक प्रसिद्ध मेहरानगढ़ किले के साए में बसा हुआ है. 1459 में राजपूत राजा राव जोधा ने मेहरानगढ़ नाम के एक बड़े क़िले के पास एक मज़बूत चारदीवारी वाला शहर बनवाया. राजा के नाम पर इस शहर को जोधपुर कहा गया और बाद में नीले रंग के घरों वाले इस इलाक़े को जोधपुर के पुराने या मूल शहर के रूप में मान्यता दी गई. जिंदल स्कूल ऑफ आर्ट एंड आर्किटेक्चर की असिस्टेंट प्रोफ़ेसर एस्तेर क्रिस्टिन शिमट का कहना है कि इस लोकप्रिय नीले रंग को संभवत– 17वीं सदी से पहले नहीं अपनाया गया था.

लेकिन तब से, इस इलाक़े के नीले रंग के घर जोधपुर शहर की पहचान के ख़ास प्रतीक बन गए हैं. मेहरानगढ़ संग्रहालय की देख-रेख करने वाली सुनैना राठौर बताती हैं, राजस्थान के जोधपुर को %ब्लू सिटी% के नाम से जाना जाता है, क्योंकि पिछले 70 सालों में विस्तार के बाद भी ब्रह्मपुरी इसका दिल बना हुआ है.

ब्रह्मपुरी, जिसका संस्कृत में मतलब होता है ब्राह्मणों का शहर. इसका निर्माण कथित ऊंची जाति वाले परिवारों की एक बस्ती के रूप में किया गया था. यहां रहनेवाले लोगों ने हिंदू जाति व्यवस्था में अपनी विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक और धर्मनिष्ठा के प्रतीक के तौर पर नीले रंग को अपनाया था. वे खुद की पहचान उसी तरह अलग बताते हैं जैसे कि मोरक्को के शेफ़चोएन के यहूदी, जो 15वीं शताब्दी में स्पेन की क़ानूनी जांच से भागते समय मदीना नामक शहर के पुराने हिस्से में बस गए थे. माना जाता है कि उन्होंने अपने घरों, प्रार्थना स्थलों और यहां तक कि सार्वजनिक कार्यालयों को भी नीले रंग से रंग दिया था, जिसे यहूदी धर्म में एक पवित्र रंग माना जाता है. आख़िरकार यह रंग कई मायनों में फ़ायदेमंद साबित हुआ. चूना पत्थर प्लास्टर के साथ मिलाए गए नीले रंग से घर को अंदर से ठंडा रखने में मदद मिलती है. ब्रह्मपुरी में भी इसी तरह के घोल का इस्तेमाल हुआ है. ये न केवल घर को ठंडा रखने में मदद करते हैं बल्कि पर्यटकों को भी अपनी ओर खींचते हैं. लेकिन शेफ़चोएन के विपरित जोधपुर में नीला रंग फीका पड़ने लगा है. इसकी कई वजहे हैं. ऐतिहासिक रूप से देखें तो आसानी से उपलब्ध होने की वजह से ब्रह्मपुरी के लोगों के लिए पेंट का ये बेहतर विकल्प था. पूर्वी राजस्थान का बयाना शहर उस समय देश में प्रमुख नील उत्पादक केंद्रों में से एक था. लेकिन समय के साथ नील की खेती कम होती गई क्योंकि इसे उगाने से मिट्टी को बहुत नुकसान पहुंचता है.

बढ़ते तापमान ने भी इसकी रौनक को धक्का पहुंचाया है. अब घरों को ठंडा करने के लिए नीला रंग काफी नहीं है. वहीं लोगों की आय में वृद्धि ने भी धीरे-धीरे लोगों का रुख़ आधुनिक सुविधाओं की तरफ़ कर दिया है, जैसे एयर कंडीशनर, जो कि लोगों को चिलचिलाती गर्मी से राहत देती है. इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आईआईटी), गांधीनगर में सिविल इंजीनियरिंग के असिस्टेंट प्रोफ़ेसर उदित भाटिया कहते हैं, पिछले कुछ सालों में तापमान धीरे-धीरे बढ़ा है. प्रोफ़ेसर भाटिया जलवायु परिवर्तन का सामना करने के लिहाज से बनने वाली इमारतों और इंफ्रास्ट्रक्चर पर काम करते हैं. आईआईटी गांधीनगर के द्वारा किए गए विश्लेषण से पता चलता है कि जोधपुर का औसत तापमान 1950 के दशक के 37.5 डिग्री सेल्सियस से बढ़कर 2016 में 38.5 डिग्री सेल्सियस हो गया. भाटिया कहते हैं कि घरों को ठंडा रखने के अलावा इस पेंट से कीड़े-मकोड़े से बचाव करने वाले गुण भी हैं, क्योंकि इसमें प्राकृतिक नील को चमकीले नीले कॉपर सल्फेट के साथ मिलाया जाता है.

विचार सरिता

मन में बसे हैं राम - 292 : महाराज दशरथ ने रानी कैकेई से अपने संबंध समाप्ति की घोषणा की

डॉ. योगेंद्र कुमार पांडेय

राजा दशरथ श्री राम, सीता जी और लक्ष्मण जी के कक्ष से प्रस्थान के बाद जड़वत से हो गए। उन्हें प्रतीत हुआ कि यह सब एक भ्रम था और उनके दोनों पुत्र तथा पुत्रवधू कहीं नहीं गए हैं। थोड़ी ही देर में उन्हें वास्तविकता की अनुभूति हुई और उन्होंने रानी कैकेई से तीखे स्वर में कहा, ''आज से मेरा तुमसे प्रत्येक संबंध टूट चुका है कैकेई।अब तो तुम्हारे हृदय को ठंडक पहुंच चुकी है, अब सुखपूर्वक रहो। बस अब एक ही कार्य रह गया है कि मेरे स्थान पर तुम अयोध्या का राज कार्य संभाल लो और मुझे अपने पुत्र राम के पीछे-पीछे वन जाने दो। इससे तुम्हारे हृदय में रही सही कोई आकांक्षा चिंगारी बनाकर व्याप्त होगी, तो वह भी शांत हो जाएगी।''

आश्चर्य! रानी कैकेई के मुख पर ग्लानि या विषाद का कोई चिह्न नहीं है। वे निर्विकार भाव से बैठी हैं।

अत्यंत दयनीय स्वर में मानसिक रूप से अत्यंत बीमार और शारीरिक रूप से क्षीण दिखाई दे रहे महाराज दशरथ ने महारानी कौशल्या से कहा, ''मुझे शीघ्र ही इस कक्ष से बाहर अपने कक्ष में ले चलो कौशल्या! मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि जो मेरी गिनती की सांसें रह गई हैं, वे तुम्हारे निज भवन में ही पूरी हो पाएं, तो मेरी आत्मा को किंचित शांति प्राप्त होगी।''

आंसुओं से भीगे मुख वाली महारानी कौशल्या महाराज दशरथ की ओर आने के लिए आगे बढ़ीं। अचानक प्रजा में श्री राम के रथ के प्रस्थान का कोलाहल सुनाई पड़ा।

''रुक जाइए। मत जाइए श्री राम।''

''हमें अनाथ बनाकर क्यों जा रहे हैं श्री राम?''

''हम श्री राम के साथ हैं।''

''वन होगा अयोध्या, राम होंगे राजा''

''रुक जाओ करुणानिधान।''

जन कोलाहल के बढ़ने से महाराज दशरथ समझ गए कि श्री राम का रथ अब प्रस्थान कर रहा है।

(भगवान श्री राम की प्रेरक गाथा संस्कृत साहित्य में आदि कवि वाल्मीकि और हिंदी साहित्य में अवधी के महाकवि तुलसी से लेकर विश्व की अनेक भाषाओं की शताधिक रामायणों में लिखी गई है। लेखक ने इस रचना में श्री राम की महागाथा के विविध प्रसंगों से कथा प्रवाह की प्रेरणा प्राप्त की है। उन्होंने उन रचनाकारों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए श्री राम के जीवन के विविध प्रसंगों में अनेक स्थानों पर एक साधारण भक्त की अपनी नवीन रचनात्मक कल्पनादृष्टि का भी सहारा लिया है और रामकथा की मौलिक साहित्यिक प्रस्तुति का प्रयत्न किया है।)

सामयिक चर्चा

दो रूप, मोदी की गारन्टी के

खबर पढ़कर
बानी बोले- ''यह सचमुच
कितने आश्चर्य की बात है गजाधर!
कि एक जुलाई 2019 से
एक जुलाई 2024 तक
केन्द्र सरकार के कर्मचारियों के समान
राज्य सरकार के कर्मचारियों
एवं पेंशनरों को देय तिथि से
महंगाई भत्ता तथा महंगाई राहत
नहीं दिया जा रहा है
जो कि केन्द्र सरकार की नीति के
अनुसार नहीं है।
इसलिए गजाधर! मेरा कहना यही है-
प्रदेश के कर्मचारियों के लिए
मोदीजी की गारन्टी को राज्य सरकार ने
क्यों भुला दिया है?''
गजाधर इस पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है?''
गजाधर मुस्कराए, बोले- ''बानी देखों!
हमारी बुद्धि तो हमें यही बताती है-
केन्द्र में मोदी की गारन्टी,
जो होती है असरदार,
राज्य में आते-आते
वही बेअसर हो जाती है।''

-गिरीश बख्शी

शब्द सामर्थ्य -212

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. जल छिड़कना, राजा के सिंहासन रोहन का अनुष्ठान 4. मवाद, पीब (अं) 6. जाति 7. हाथ से धीरे-धीरे ठोंकना, थपकना 9. कमल रोग से ग्रसित व्यक्ति (उ.) 11. किरण 12. छींक, तड़का 13. दुखदायी, दर्दनाक 15. विवाद, कहासुनी, तकरार 18. समूह, दल, समुदाय 19. दण्ड 20. काजल 22. अनाथ, निराश्रित, यतीम 24. दुख, शोक 25. एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, बक 26. राज्य का विदेश में प्रतिनिधि।

ऊपर से नीचे

1. विचित्र, अद्भुत 2. अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना 3. वचन, वाणी 4. गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो 5. मुलायम सिंह की पार्टी का संक्षिप्त नाम 8. ब्रह्मापुत्र एक प्रसिद्ध देवर्षि 10. कार्यावली, करस्तानी, प्रशंसनीय कार्य 13. दासी, नौकरानी, बांदी, गुलाम स्त्री 14. प्रवृत्त करने वाला, प्रेरित करने वाला, आविष्कारक 16. श्रीकृष्ण के बड़े भाई, हलधर 17. सामान (उ.) 21. संसार, दुनिया 22. समय, चमेली की जाति का एक पौधा और फूल 23. पराजित, परास्त।

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 211 का हल

दि	क्र	त		आ	सा	न		आ
ल		मी		खि		सी	ख	ना
	म	ज	बू	र		ह		जा
स	ई			का		त	रा	ना
र				र	वि		ह	
प	ह	ना	ना		ना	रा	ज	
ट			क	शि	श		नी	ला
	र			का		रा		य
खा	ति	र	दा	री		त	क्ष	क

सू- दोकू क्र.212

	8				1		5	
6			8			2		3
	3				2		1	
		3		9		5		4
5			3				9	
		4		2				6
4			2		3		6	
		6				8		7
	2	9	7		6			

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और ऊपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र 211 का हल

5	3	9	7	4	8	6	2	1
2	1	6	5	9	3	4	7	6
4	7	8	1	6	2	3	5	9
3	6	1	8	5	9	2	4	7
8	5	2	3	7	4	1	9	6
7	9	4	2	1	6	8	3	5
6	4	7	9	2	1	5	6	3
1	8	5	4	3	7	9	6	2
9	2	3	6	8	5	7	1	4

कविता

करवा चौथ

पति की अभिलाषा
ऐ चांद तुझे कैसे मनाये,
ये पल हर दिन आ जाये ।
मेरा मन ये कहता है,
ऐ चांद रोज छुप जाये।
छनली की आड़ मे रोज,
हमें ऐसे ही पूजे जाये।
ऐ चांद तुझे कैसे मनाये,
ये पल हर दिन आ जाये।

गजेंद्र बख्शी
- रिद्धि सिद्धि कालोनी
राजनांदगांव

राशिफल

मेष

आज आपके हर परेशानी का हल चुटकियों में निकल जाएगा। सरकारी कार्यों में आपको बड़े लाभ की संभावना है। आज आप अपनी संतान के साथ पिकनिक के लिए जा सकते हैं। उनके साथ आप अच्छा समय बिताएंगे। आज आप काम की क्वालिटी और बेहतर बनाने में ध्यान दें। मार्केटिंग संबंधी गतिविधियां सुचारू रूप से चलती रहगी।

वृषभ

आज आपका दिन बढ़िया रहेगा। बड़े निर्णय लेने के लिए दिन अच्छा है। किसी नयी बिजनेस डील के लिए ऑफर मिलेगा। आप जीवनसाथी के साथ घर के कार्यों को पूरा करने में व्यस्त रहेंगे। आज कारोबारी गतिविधियों में व्यवस्था बनाकर रखना जरूरी है। अधिकारियों और सम्मानित लोगों से रिश्ते रखना आपके बिजनेस के लिए फायदेमंद रहेगा।

मिथुन

आज आपका दिन अच्छा रहेगा। आपको घर के बड़ो से कुछ प्रेरणा मिलेगी। आज आप जो भी काम शुरू करेंगे, वो सफल होगा। आज आपकी अच्छी सोच का अच्छा नतीजा मिलेगा। आपके रहने और बोलने का तरीका लोगों को आकर्षित करेगा। आज आपको अपनी पढ़ाई और करियर के प्रति ज्यादा मेहनत की जरूरत है।

कर्क

आज आपका दिन बेहतरीन रहने वाला है। आज पूरा दिन खुद को तरोताजा महसूस करेंगे। आपके आस-पास सकारात्मक ऊर्जा बनी रहेगी। आज कार्यस्थल पर चल रही किसी भी गतिविधि को नजरअंदाज ना करें। अपनी योजनाओं को गुप्त ही रखें। आज कुछ समय परिवार के साथ बिताने पर कुछ बातें पता चल सकती हैं।

सिंह

आज का दिन आपके लिये अच्छे परिणाम लाने वाला होगा। विद्यार्थियों को सफलता मिलने के योग बने हुए है, लेकिन पढाई में और मेहनत करने की जरूरत है। कुछ समय से चल रही आपकी लगन और मेहनत का आज ज्यादा लाभ मिलने वाला है। इसलिए अपने काम पर ध्यान केंद्रित रखें। जीवनसाथी के साथ भावनात्मक रिश्ते मजबूत होंगे।

कन्या

आज आपका दिन उत्तम रहने वाला है। आज आपके व्यापार की गति अच्छी रहेगी। छात्रों को प्रतियोगी परीक्षा का बेहतर परिणाम मिलेगा। आज व्यवसाय संबंधी नई जानकारियां हासिल करना जरूरी है। मीडिया और ऑनलाइन कामों से जुड़े बिजनेस में फायदा होगा। आपके द्वारा की गई मेहनत के परिणाम भी बेहतर मिलेंगे।

तुला

आज पूरे दिन भाग्य आपके साथ रहेगा। आज कुछ समय व्यक्तिगत कार्यों में बिताने से आप अपने आपको ऊर्जा से भरपूर महसूस करेंगे। सामाजिक गतिविधियों में भी रुझान बढ़ेगा। फाइनेंस संबंधी गतिविधियां समय पर निपटा लेंगे। कुछ लोग जलन की भावना से आपके बारे में अफवाहें फैला सकते हैं।

वृश्चिक

आज आपका दिन अच्छा रहने वाला है। आपको सरकारी कामों में कुछ लोगों से राय मिलेगी, जिससे आपका काम असान हो जायेंगा। आज आपका व्यक्तित्व व रहन-सहन के प्रति अधिक सजग रहना लोगों केबीच आकर्षण का कारण बनेगा। समाज में आपकी छवि और अधिक निखरेगी।

धनु

आज का दिन मिली-जुली प्रतिक्रिया देने वाला रहेगा। आप आप सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेंगे। बच्चों को आज पढाई में मन लगाने की जरूरत है। आज परिवार संबंधी कोई समस्या हल हो जाने से आनंदित और हर्षित महसूस करेंगे। धार्मिक तथा आध्यात्मिक क्षेत्र से जुड़ी गतिविधियों में भी कुछ समय बीतेगा।

मकर

आज आपको किसी अपने से कोई अच्छी खबर मिलने के योग बने हुए हैं। आज अपने बच्चों का आत्म बल बनाकर रखने में सहयोग अवश्य करेंगे। आज कर्मचारियों की मदद से बिजनेस की गतिविधियां ठीक तरह से चलती रहेंगी। जिससे आप बाकी कामों पर ध्यान देंगे। अपनी जॉब से संबंधित कोई महत्वपूर्ण अथॉरिटी मिल सकती है।

कुंभ

आज का दिन जीवन में मील का पत्थर साबित होगा। आज व्यापार में किसी एसी कंपनी के साथ डील फाइनल होगी, जो आपको उम्मीद से अधिक फायदा करायेगी। आज घर में परिवार जनों के साथ मिल-जुलकर कुछ नवीनीकरण व साज-सज्जा को लेकर कुछ विचार-विमर्श रहेगा। आज ऑफिस में चल रहा प्रोजेक्ट पूरा होने से राहत मिलेगी।

मीन

आज आपका दिन ठीक-ठाक रहने वाला है। आज आपको किसी भी प्रकार के विवादों से दूर रहने की आवश्यकता है। आज बिना सोचे-समझे किसी अजनबी पर भरोसा ना करें। आज परिवार में आप सबसे सामंजस्य बनाकर रखेंगे। बेवजह की बातों पर ध्यान नहीं देंगे। साथ ही घर में नजदीकी रिश्तेदारों के आगमन से खुशनुमा माहौल बनेगा।

रक्षक बने भक्षक : बगैर प्रशासनिक मंजूरी के पेड़ों को कटवा दिया

डिप्टी रेंजर और बीटगार्ड ने मिलीभगत कर 117 खम्हार पेड़ की करवा दी कटाई

काटे गए पेड़ों के ठुंठ पर फर्जी हैमर लगाकर किया खानापूर्ति

छुरिया (दावा)। वन परिक्षेत्र खुज्जी कुमरदा के कक्ष क्रमांक 518 में अवैध रूप से बिना किसी परमिशन के 117 खम्हार पेड़ की कटाई किए जाने से ग्राम बागद्वार के ग्रामीणों में वन विभाग के डिप्टी रेंजर व बीट गार्ड के हरकतों से आक्रोशित नजर आए। मिली जानकारी के अनुसार वन परिक्षेत्र खुज्जी कुमरदा के कक्ष क्रमांक 518 बागद्वार बेलरगोंदी सीमा क्षेत्र में डिप्टी रेंजर और बिटगार्ड की मनमानी के चलते बिना डीएफओ व एसडीओ के परमिशन से खम्हार पेड़ की बेताशा कटाई कर गोला लकड़ी को किसी ठेकेदार के ट्रैक्टर में भरकर ले जाया गया है। जबकि गोला लकड़ी को काष्ठगार सड़क चिरचारी में भेजना था लेकिन वहां ना भेज कर लकड़ी ठेकेदार के ट्रैक्टर में भरकर अन्य जगह क्यों भेजा गया? यह सवाल उठना लाजिमी है। ग्रामीणों का माने तो वन विभाग के अफसर इतना मनमानी कर रहे हैं जिसका कोई सीमा नहीं है। ग्राम बागद्वार में वन सुरक्षा समिति बना है जिसका भी कोई प्रस्ताव व सहमति लेना उचित नहीं समझा है। जानकारी के अनुसार विभागीय परमिशन वाला हेमर के जगह दूसरा हैमर लकड़ी के ठूठ में लगाया गया है। जबकि मिली जानकारी अनुसार जिस हैमर का उपयोग किया गया है वह लकड़ी की चोरी किए जाने पर बिटगार्ड व्दारा ठूठ मे लगाया जाता हैं।

ऐसे में निश्चित ही इस कीमती गोला का हेराफेरी किए जाना कहना गलत नहीं होगा कि रक्षक ही भक्षक का काम कर रहा है? डिप्टी रेंजर रवि सोनी से इस विषय में जानकारी लिया गया तो उनका कहना है कि 117 खम्हार पेड़ की कटाई का परमिशन के लिए भेजा गया है लेकिन परमिशन अभी आया नहीं है क्योंकि गांव वाले चोरी कर लकड़ी ले जा रहा थे इसलिए यह कटाई किया गया है। अब सवाल यह उठता है कि वनों का रक्षा करना वन विभाग के कर्मचारियों का जिम्मेदारी है और यदि गांव वाले सूखा लकड़ी ले जा लिये होंगे तो इसमें कोई बहुत बड़ी बात नहीं है। लेकिन विभाग बिना सिस्टम पूरा किए नियम कानून को ताक में रखकर पेड़ों की कटाई नहीं कर सकता। डिप्टी रेंजर द्वारा गोल-मोल जवाब देकर बचने की कोशिश में नजर आए।

ऐसे में यह कहना गलत नहीं होगा पेड़ों की कटाई विभाग द्वारा किया जाना अवैध होगा जिस पर वन विभाग पर सवाल खड़ा होता भी है क्योंकि बिना रेंजर के सहमति से इतने बड़े कार्य को विभाग के उच्च अधिकारी से बिना आदेश प्राप्त कर अंधेरे में रखकर किया जाना कहीं न कहीं रेंजर भी कि सहभागिता को दर्शाता है। क्योंकि बिना रेंजर के जानकारी में इतने पेड़ों कि अवैध कटाई हो ही नहीं सकता इसमें रेंजर की मिली भगत से इनकार नहीं किया जा सकता? बहरहाल अब देखना होगा कि वन विभाग के उच्च अधिकारी इस मामले में क्या संज्ञान लेते हैं। और ऐसे मनमानी करने वाले अधिकारी कर्मचारी के ऊपर क्या एक्शन होता हैं या फिर खाना पूर्ति कर मामले को रफा दफा कर दिया जाता हैं।

> जानकारी मिलने पर बीट मांक 518 आकर देखा तो 117 पेड़ की मार्किंग किया गया था जिसका परमिशन अधिकारी से रिटर्न नहीं मिला है। पेड़ों कि कटाई की गई है उसका मैं पता करवाता हूं।
>
> **चंद्रशेखर भंडारी रेंजर**

> वन सुरक्षा समिति को डिप्टी रेंजर द्वारा कभी भी कोई सूचना नहीं देते हैं और न ही जानकारी देना उचित समझते हैं अभी भी लकड़ी कटाई हुआ है जिसका भी कोई जानकारी वन सुरक्षा समिति को नहीं दिया गया है ।और ना ही किसी प्रकार का कोई प्रस्ताव किया गया है।
>
> **भेष बाई साहू अध्यक्ष वन सुरक्षा समिति बागद्वार**

जिला भाजपा का विधिवत सक्रिय सदस्य अभियान की शुरुआत जिला भाजपा अध्यक्ष घम्मन साहू से

खैरागढ़ (दावा)। जिला भाजपा खैरागढ़ छुईखदान गंडई द्वारा विधिवत सक्रिय सदस्यता अभियान प्रारंभ किया गया। जिसमें भाजपा जिला अध्यक्ष घम्मन साहू को सक्रिय सदस्य अभियान के संयोजक टी के चंदेल द्वारा सक्रिय सदस्य बनाया गया एवं उनको जिला संयोजक टी के चंदेल को सदस्यता अभियान के संयोजक शशांक ताम्रकार द्वारा सक्रिय सदस्य बनाया गया साथ ही सक्रिय सदस्यता अभियन का विधिवत शुभारंभ जिले में प्रारंभ हो गया सभी सक्रिय सदस्य अब अपने निवास के मंडलो में सक्रिय सदस्य वाले फॉर्मेट में अपने विधानसभा के प्राथमिक सदस्यों की जानकारियां को भर कर मंडल अध्यक्ष के माध्यम से सक्रिय सदस्यता 'फार्म-ख' भर कर जिला सक्रिय सदस्यता टोली को भेजेंगे एवं जिला टीम की अनुशंसा पर सक्रिय सदस्यता प्रदान किये जायेंगे। गौरतलब है कि जिला भाजपा द्वारा 35000 से अधिक प्राथमिक सदस्य बने हैं एवं सक्रिय सदस्यता अभियान के प्रारंभ होने से 1000 से अधिक सक्रिय सदस्य बनने का लक्ष्य हैं जो कि मंडल एवं जिला सक्रिय सदस्यता टोली के माध्यम से पूर्ण किया जाएगा। उपयुक्त कार्यक्रम में मंडल अध्यक्ष विनय देवांगन, विकेश गुप्ता एवं ज्ञानदास बंजारे उपस्थित रहें।

पहला कॉलम...

राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य धन्यकुमार जिनप्पा गुडे ने डोंगरगढ़ में धार्मिक स्थलों का दर्शन कर देशवासियों के लिए सुख, समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की

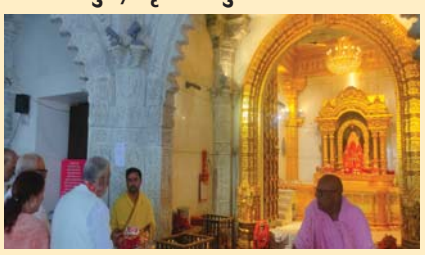

राजनांदगांव (दावा)। राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य धन्यकुमार जिनप्पा गुंडे एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती निर्मला गुंडे ने डोंगरगढ़ स्थित मां बम्लेश्वरी और आचार्य भगवान श्री 108 विद्यासागर जी महामुनिराज की समाधि स्थल का दर्शन किया। इसके साथ ही उन्होंने डोंगरगढ़ स्थिति अन्य धार्मिक स्थलों का दर्शन किए और अवलोकन किया। उन्होंने देशवासियों के लिए सुख, समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की। इस अवसर पर प्रकाश कुमार जैन, एसडीएम डोंगरगढ़ मनोज मरकाम, सहायक आयुक्त आदिवासी विकास सुश्री दीक्षा गुप्ता, तहसीलदार मुकेश ठाकुर ने भी दर्शन किया।

सिंघोला में आज सांस्कृतिक कार्यक्रम लोक मंच राग अनुराग की प्रस्तुति होगी

हरदी (दावा)। ग्राम सिंघोला में आदर्श दुर्गा उत्सव समिति मनुक देवा चौक सिंघोला के तत्वाधान में नवरात्रि के पर्व पर सांस्कृतिक कार्यक्रम लोक मंच राग अनुराग दुर्ग वालों का आज 20 अक्टूबर दिन रविवार को रखा गया है। समस्त ग्रामवासी एवं आसपास गांव वालों से अपील है की अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर आनंद लेवे एवं शोभा बढाएं। उक्त जानकारी माँ भानेश्वरी मिनी गार्डन समिति के अध्यक्ष चेतन ठाकुर एवं सचिव ढालसिंह साबला ने दी।

खुज्जी में हुआ स्वच्छता त्यौहार का आयोजन

खुज्जी (दावा)। जिला प्रशासन के मार्गदर्शन में ग्राम पंचायत खुज्जी में स्वच्छता त्यौहार का आयोजन करके लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया। जनप्रतिनिधि, अधिकारी, कर्मचारी, समूह के महिलाएं तथा ग्रामीणों के द्वारा बाजार चौक सहित प्रमुख चौक चौराहों पर साफ-सफाई किया गया। दुकानदारों को ग्राम पंचायत के द्वारा कचरा के व्यवस्थित निपटान हेतु अनुबंध पत्र दिया गया तथा सूखा कचरा स्वच्छता दीदी को देने प्रोत्साहित किया गया। इस अवसर पर सुयश नाहटा उपाध्यक्ष जनपद पंचायत, नवीन कुमार सीईओ, होरीलाल साहू एसीईओ, देवेंद्र कुमार उइके सहायक विकास विस्तार अधिकारी, मेघा कुर्रे ब्लॉक समन्वयक, विजय देवांगन ब्लॉक समन्वयक सहित समूह के महिलाएं ग्रामीण उपस्थित थे।

कार्यकर्ता सम्मेलन एवं सम्मान समारोह का हुआ आयोजन

डोंगरगांव (दावा)। जिला पंचायत क्षेत्र के ग्राम तिलईरवार, आसरा, जंतर मोहड़, कोहका, माथलडबरी में भाजपा के सदस्यता अभियान व कार्यकर्ता सम्मेलन एवं सम्मान समारोह संपन्न हुई, इन आयोजन में मुख्य अतिथि के रूप में जिला पंचायत सदस्य जागृति चुन्नी यदु शामिल हुई वहीं कार्यक्रम की अध्यक्षता निर्मला सिन्हा जनपद सदस्य ने की, वहीं आयोजन में विशेष अतिथि के रूप में जनपद सदस्य जागेश्वर यादव, पूर्व सरपंच अनीता वालदे, बूथ अध्यक्ष मोरध्वज चन्द्रवंशी एवं टीलेश यादव, पूर्व सरपंच संघ अध्यक्ष चन्द्रकुमार साहू की गरिमामय उपस्थिति में संपन्न हुआ। इस आयोजन में क्षेत्र के समस्त कार्यकर्ताओं व वरिष्ठजनों की उपस्थिति और सहयोग ने कार्यक्रम में चारचांद लगा दिया।

धर्मनगरी को धार्मिक पर्यटन क्षेत्र के रूप में और विकसित करने के लिए पीएमओ को भेजेंगे सुझाव - धन्य कुमार

डोंगरगढ़(दावा)। राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग भारत सरकार के सदस्य धन्य कुमार जिनप्पा आज अपने एकदिवसीय प्रवास पर धर्मनगरी डोंगरगढ़ पहुंचे। जहां उन्होंने विश्व प्रसिद्ध मां बमलेश्वरी देवी की पूजा अर्चना की। इस अवसर पर उनके साथ स्थानीय प्रशासन के अधिकारी व सामाजिक संगठन से जुड़े गणमान्यजन भी मौजूद रहे।

मीडिया से चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि वे पिछले तीन दिनों से छत्तीसगढ़ राज्य के प्रवास पर है। राजधानी रायपुर से लेकर धर्मनगरी डोंगरगढ़ तक पूरे प्रदेश में अच्छा और शांतिपूर्ण वातावरण है। भारत में ऐसे राज्य कम बचे हैं जहां धार्मिक हिंसा न हो उनमें से एक छत्तीसगढ़ प्रदेश है यहां के रहवासी आपस में भाई चारे के साथ जीवन यापन कर रहे है। डोंगरगढ़ में स्थित जैन तीर्थ चंद्रगिरि, प्रज्ञा गिरी सहित अन्य धार्मिक स्थल ने पर्यटकों को आकर्षित किया हुआ है। यही कारण है कि, डोंगरगढ़ शहर में धार्मिक पर्यटन को आगे बढ़ाने को लेकर धन्य कुमार ने कहा कि यह उनका पर्सनल इंट्रेस्ट भी है और इसे लेकर अभी अधिकारियों से सार्थक चर्चा भी हुई है वे पीएमओ ऑफिस में भी डोंगरगढ़ में धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने के संबंध में अपने सुझाव भेजेंगे।

जिला पत्रकार संघ अध्यक्ष व सदस्यों ने जताया सांसद का आभार

खैरागढ़ (दावा)। जिला पत्रकार संघ के लिए सांसद संतोष पांडे के अनुशंसा पर सामुदायिक भवन निर्माण के लिए 10 लाख की स्वीकृति प्रदान हुई है। जिसके लिए जिला पत्रकार संघ के अध्यक्ष जितेंद्र सिंह गौर ने सांसद पांडे का आभार व्यक्त किया है। इस दौरान जिला अध्यक्ष गौर ने बताया कि पत्रकार संघ के शपथ ग्रहण कार्यक्रम के दौरान सांसद संतोष पांडे ने भवन के लिए त्वरित रूप से 5 लाख की घोषणा की थी। पर सांसद प्रतिनिधि व टीएसी सदस्य भागवत शरण सिंह के माध्यम से उक्त राशि को बढ़ाने का अनुरोध किया गया। जिसे अनुशंसित करते हुए सांसद पांडे ने नगरपालिका के अधोसंरचना मद से भवन के लिए राशि 10 लाख रूपए का प्रावधान किया था जिसे राज्य शासन के नगरीय प्रशासन विभाग ने स्वीकृति प्रदान की है। गौर ने सांसद पांडे के साथ नगरीय प्रशासन मंत्री अरुण साव का भी आभार जताया है। गौर के साथ ही पत्रकार संघ संरक्षक चैतेंद्र तिवारी, अनुराग तुरे, खिलेन्द्र नामदेव, जीवेश शर्मा, रेखा झा, यतेंद्र जीत सिंह, आलोक श्रीवास, प्रकाश सिंह, जितेन्द्र यादव, अमित सिंह, प्रशांत सहारे, नीलेश कुमार यादव, किशोर सोनी, याहिया नियाजी, शिवानी परिहार, श्रेयांस सिंह, दिनेश साहू, राजेन्द्र चंदेल, प्रदीप बोरकर, यतीश साहू, प्रवीण नामदेव, सन्नी यदु, विमल बोरकर, अभिषेक सिंह, विजय प्रताप सिंह, मिनेश बख्शी, सुरेश वर्मा, शैलेन्द्र मिश्रा, सोमेश लहरे, रंजीत सिंह, तुलेश सिन्हा, साकेत श्रीवास्तव, नवदीप श्रीवास्तव, मनोहर सेन, उमेश्वर वर्मा ने भी आभार व्यक्त किया है।।

महापौर के 5 साल चौक चौराहा का नामकरण एवं मूर्ति लगाने में गुजर गए - शिव वर्मा

राजनंदगांव (दावा)। नगर निगम के पूर्व अध्यक्ष पूर्व नेता प्रतिपक्ष ने बताया कि महापौर के 5 साल सिर्फ चौक चौराहा का नामकरण एवं मूर्ति लगाने में गुजर गया। निगम में आय बढ़ाने कोई ठोस पहल नहीं किया विकास तो पूरी तरह सन्नाटा छाया रहा है। उन्होंने कहा कि निगम में सरकार बदलते हैं महापौर के शपथ ग्रहण में कहा था कि निगम कर्मचारियों को हर महीने 5 तारीख को पेमेंट हो जाएगा तथा गड़बो नवा राजनांदगांव का शहर की जनता को सपना दिखाया था।

कृषक सूचना केन्द्र का उद्घाटन

छुईखदान (दावा)। रानी अवंती बाई लोधी कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र, छुईखदान द्वारा दिनांक 18 अक्टूबर को ग्राम भूलाटोला में ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव (रावे) के अंतर्गत कृषक सूचना केन्द्र का उद्घाटन समारोह कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि चंद्रकांत वर्मा, कलेक्टर, जिला खैरागढ़-छुईखदान-गंडई द्वारा अपने उद्बोधन में कहा कि यह कृषक सूचना केन्द्र ग्रामवासियों के लिए बहुत उपयोगी होगा। इसके माध्यम से कृषक तकनीकी जानकारी हासिल कर सकते है। कृषक सूचना केन्द्र में छात्र-छात्राओं द्वारा बनाये गये विभिन्न कृषि मॉडल, गांव का नक्शा आदि की सराहना की। कृषक सूचना केन्द्र में ड्रिप सिंचाई पद्धति, पाली हाऊस, धान की श्री विधि, खेती में यंत्रीकरण, जीरो एनर्जी कूल चेम्बर, हाइड्रोपोनिक्स, फल सब्जी प्रसंस्करण, नर्सरी उत्पादन, जैविक खेती, मुनगा उत्पाद, वर्टिकल फार्मिंग, बायोकंट्रोल तकनीक, एकीकृत कृषि प्रणाली, उच्च नस्ल की बकरी जमुनापारी और उच्च नस्ल की खाकी कंबेल बत्तख आदि आधुनिक कृषि तकनीको का प्रदर्शन किया गया। इस अवसर पर कृषि में ड्रोन प्रौद्योगिकी के उपयोग का भी प्रदर्शन किया गया तथा ग्राम की महिला स्वसहायता समूह द्वारा बने विभिन्न प्रसंस्कृत कृषि उत्पाद प्रतियोगिता के प्रदर्शन का शुभारंभ कलेक्टर महोदय द्वारा किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. ए. के. गुप्ता ने रावे कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी देते हुए छात्रों को सफल उद्यमी बनने की प्रेरणा दी गई एवं किसानों बताया कि वे कृषि संबंधी अपनी समस्या का समाधान कृषक सूचना केन्द्र के माध्यम से कर सकते है तथा ही कृषि फसलों की उन्नत तकनीक को अपनाने की सलाह दी। कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ. बी. एस. असाटी, सह प्राध्यापक एवं रावे कार्यक्रम अधिकारी ने छात्रों एवं कृषको को कृषक सूचना केन्द्र की विस्तृत रूप से जानकारी दी तथा किसानों को विभिन्न उद्यानिकी फसलों के उत्पादन तकनीक के बारे मे बताया।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि रविन्द्र मेहरा, प्रभारी सहायक संचालक (उद्यानिकी) खैरागढ़, लोकमान्य साहू, सहायक संचालक (कृषि), खैरागढ़, सौरभ जंघेल प्रगतशील युवा कृषक जंगलपुर, श्रीमती सावित्री साहू, ड्रोन दीदी खैरागढ़, श्रीमती रामेश्वरी मंडावी, सरपंच ग्राम भूलाटोला उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने छत्तीसगढ़िया सांस्कृतिक नृत्य का प्रदर्शन भी किया, जिसको सभी ने सराहा। रावे कार्यक्रम समन्वयक डॉ. एस. ए. ढेंगे द्वारा कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों एवं ग्रामवासियों का धन्यवाद ज्ञापन किया। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के सहायक प्राध्यापक, महिला स्व-सहायता समूह, चतुर्थ वर्ष के सभी छात्र-छात्राएं एवं ग्राम भुलाटोला, गुमानपुर, हटबांजा, श्यामपुर, छुईखदान, कोड़का के 400 से भी अधिक कृषकों ने अपनी सहभागिता दर्शायी।

सड़क हादसे में लेक्चरार की दर्दनाक मौत

मानपुर मोहला के बीच जबकसा मोड़ मे अनियंत्रित हुई बाइक

मोहला(दावा)। जिला मुख्यालय मोहला में विभागीय बैठक में अपनी उपस्थिति प्रदान कर मानपुर की ओर जा रहे मोटरसाइकिल सवार शिक्षक की आज दोपहर लगभग 2 बजे राजनांदगांव चंद्रपुर हाईवे के जबकसा मोड़ मे दुर्घटना का शिकार हो जाने से घटनास्थल पर ही दर्दनाक मौत हो गई है।

उल्लेखनीय है कि मोहला विकासखंड के हथरा हायर सेकेंडरी स्कूल में पदस्थ कॉमर्स के लेक्चरार महेंद्र देशलहरा पिता पूनउराम देशलहरा उम्र 49 वर्ष मूल निवासी ग्राम फरहद थाना सोमनी जो वर्तमान में अंबागढ़ चौकी के मेरेगांव स्थित बालक हायर सेकेंडरी स्कूल में कॉमर्स के लेक्चरार पद पर अटैचमेंट में थे जो आज जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय मोहला में विभागीय बैठक के बाद अपने निजी कार्य को लेकर मानपुर की ओर जा रहे थे इसी दौरान मोहला थाना से 10 किलोमीटर दूरी पर जबकसा मोड़ मे उनकी मोटरसाइकिल अनियंत्रित होकर गड्ढे में जा घुसी इस हादसे में शिक्षक महेंद्र देशलहरा की घटना स्थल पर ही मौत हो गई। आनन फानन में मृत शिक्षक को मोहला सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया जहां उन्हें उपस्थित डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया।

वनांचल ने खोया काबिल शिक्षक- अंबागढ़ चौकी मेरेगांव हायर सेकेंडरी स्कूल में पदस्थ कॉमर्स के लेक्चरार महेंद्र देशलहरा के संबंध में बताया गया कि वे छात्रों के अध्यापन को लेकर बेहद सजक रहते थे उनके विषय में बोर्ड का परिणाम का 100 प्रतिशत तक रहा है। हादसे की खबर सुनने के बाद शिक्षा विभाग में मातम की स्थिति निर्मित हो गई है।

ग्रीष्मकालीन धान की फसल लेने पर रोक लगाई जिला प्रशासन ने

मक्का, गेहूं, रागी, दलहन, तिलहन, सब्जी एवं गन्ना जैसे फसले लेने हेतु कार्य योजना तैयार

डोंगरगढ़ (दावा)। जिला प्रशासन की ओर से जिला कलेक्टर ने अनुविभागीय अधिकारी, (राजस्व) राजनांदगांव, डोंगरगांव, डोंगरगढ़, तहसीलदार/ नायब तहसीलदार राजनांदगांव, डोंगरगांव, छुरिया, डोंगरगढ़, घुमका, लालबहादुर नगर, कुमरदा मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जनपद पंचायत, राजनांदगांव, डोंगरगांव, छुरिया, डोंगरगढ़ वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी, राजनांदगांव, डोंगरगांव, छुरिया, डोंगरगढ़ वरिष्ठ उद्यान विकास अधिकारी,को फसल विविधीकरण एवं जल संरक्षण पर प्रचार-प्रसार के संबंध में पत्र जारी किया गया है।

पत्र में कहा गया है कि, जिला राजनांदगांव में विगत वर्ष रबी 2023-24 में 9275 हेक्टेयर में ग्रीष्मकालीन धान की गई खेती के स्थान पर मक्का, गेहूं, रागी, दलहन, तिलहन, सब्जी एवं गन्ना जैसे फसलें लेने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया गया है। जिले में विकासखंड-राजनांदगांव, डोंगरगढ़ एवं डोंगरगांव में घटते हुए जल स्तर की दृष्टि से सेमीक्रिटिकल स्टेज में आ गये है, विकासखंड छुरिया के भी भविष्य में इस स्टेज में आने की आशंका है। भूमिगत जल का अधिकांश भाग ग्रीष्मकालीन धान हेतु अंधाधुंध दोहन किया जाता है। भविष्य में जल संकट की स्थिति निर्मित होगी। राज्य एवं जिला स्तर पर इस दिशा में ग्रीष्मकालीन धान को हतोत्साहित कर मक्का, गेहूं, रागी, दलहन, तिलहन, सब्जी एवं गन्ना जैसे फसलें लेने हेतु कार्ययोजना तैयार कर क्रिन्यावयन की समीक्षा की जा रही है। कृषि, उद्यानिकी, पंचायत विभाग के अधिकारी/कर्मचारियों के साथ ग्राम पंचायत के जनप्रतिनिधियों के सक्रिय सहभागिता से इस कार्य में आशातीत सफलता प्राप्त की सकती है। इस परिपेक्ष्य में कृषकों के मध्य ग्रीष्मकालीन धान के स्थान पर मक्का, गेहूं, रागी, दलहन, तिलहन, सब्जी एवं गन्ना जैसे फसलें लेने हेतु अपने अधीनस्थ अमले के द्वारा प्रत्येक ग्राम के कोटवार से मुनादी कराना सुनिश्चित करें।

आदतन शराब कोचिया रवि शेण्डे को 35 पौवा देशी प्लेन शराब के साथ किया गया गिरफ्तार

डोंगरगढ़ (दावा)। पुलिस अधीक्षक मोहित गर्ग, अति. पुलिस अधीक्षक राहुल देव शर्मा एवं एसडीआपी डोंगरगढ़ आशीष कुंजाम के आदेश पर थाना प्रभारी जितेन्द्र वर्मा के दिशा-निर्देश में डोंगरगढ़ पुलिस द्वारा क्षेत्र में लगातार गस्त पेट्रोलिंग कर अवैध गतिविधियों, शराब कोचियों/तस्करों, सटोरियों, संदिग्ध व्यक्तियों, पॉकेटमार, चाकूबाज एवं अन्य असमाजिक तत्वों पर कड़ी निगरानी रखकर लगातार कार्यवाही की जा रही है।

इसी कड़ी में दिनांक 18 अक्टूबर को रात्रि में डोंगरगढ़ पुलिस को पेट्रोलिंग दौरान सूचना मिला कि रवि शेण्डे नाम के व्यक्ति बस स्टैण्ड डोंगरगढ़ के पास अवैध रूप से शराब बिक्री कर रहा है। कि सूचना पर डोंगरगढ़ पुलिस मौके पर पहुंचकर आरोपी रवि शेण्डे पिता स्व. धनीराम शेण्डे उम्र 28 साल निवासी भीमनगर वार्ड नं. 09 डोंगरगढ़ जिला राजनांदगांव को अवैध शराब बिक्री करते हुये कुल 35 पौवा शोले प्लेन देशी शराब कुल मात्रा 6.300 बल्क लीटर किमती 3150 रू. बिक्री रकम 1250 रू. एवं एक मोटर सायकल होण्डा एसपी साईन किमती 50000 रू. जुमला किमती 54400 रू. के साथ पकडकर आरोपी के विरूद्ध धारा- 34(2) आबकारी एक्ट का अपराध दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश कर न्यायिक हिरासत में भेजा गया है। आरोपी आतदन अपराधी है इसके पूर्व आरोपी के विरूद्ध थाना डोंगरगढ़ में 10 प्रकरण आबकारी अधिनियम का दर्ज है। आगे भी डोंगरगढ़ पुलिस का अवैध शराब बिक्री पर कार्यवाही जारी रहेगी। उक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी डोंगरगढ़ निरीक्षक जितेन्द्र वर्मा, सउनि गणेश चौहान, आरक्षक राजेन्द्र साहू, लीलाधर मण्डलोई, अजय पाटजले का विशेष योगदान रहा है।

पहला कॉलम...

यूक्रेन नहीं, नाटो और अमेरिका हमारे खिलाफ लड़ रहे जंग, ब्रिक्स से पहले रूस के राष्ट्रपति पुतिन का बड़ा बयान

मॉस्को। रूस के राष्ट्रपति पुतिन ने ब्रिक्स शिखर सम्मेलन से पहले यूक्रेन युद्ध को लेकर बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि यूक्रेन में युद्ध समाप्त करने के लिए कोई समयसीमा निर्धारित करना कठिन है। उन्होंने कहा कि मुझे यकीन है कि इसमें रूस ही जीतेगा। उन्होंने यूक्रेन में युद्ध के संबंध में पीएम मोदी द्वारा जताई गई चिंता को लेकर उनकी तारीफ की। यहां मीडिया से बातचीत में रूसी नेता ने कहा कि उनका देश वार्ता के पक्ष में है, लेकिन इस दिशा में की गयी कोशिश को यूक्रेन ने ही पलीता लगा दिया। पुतिन ने कहा कि इस युद्ध को यूक्रेन नहीं लड़ रहा, बल्कि अमेरिका और नाटो लड़ रहे हैं, लेकिन वह भी लड़ते-लड़ते थक जाएंगे।

रूस और यूक्रेन के बीच शांति संबंधी वार्ता में भारत की भूमिका को लेकर पूछे गए सवाल पर पुतिन ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा व्यक्त की गई चिंता का हवाला दिया और मोदी को 'मित्र' बताया। पुतिन ने कहा कि पीएम मोदी द्वारा यूक्रेन युद्ध पर चिंता जाहिर करने के लिए रूस उनका 'आभारी' है। रूसी राष्ट्रपति ने आगे यह भी कहा कि युद्ध समाप्त करने के लिए कोई समयसीमा निर्धारित करना कठिन है। उन्होंने रूस को युद्ध में धकेलने के लिए अमेरिका और उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) को दोषी ठहराया तथा कहा कि उनका देश विजयी होगा। पुतिन ने कहा कि यूक्रेन की सेना अपने बलबूते इतनी सटीकता के साथ हथियारों को लक्ष्य तक नहीं पहुंचा सकती है। ''यह सब नाटो पेशेवरों द्वारा किया जाता है। वह अमेरिका के दम पर लड़ रहा है, लेकिन आप जानते हैं कि फर्क क्या है। नाटो हमारे खिलाफ युद्ध लड़ रहा है।'' उन्होंने कहा कि रूसी सेना दुनिया की सबसे अधिक प्रभावी और उच्च तकनीक वाली सेनाओं में से एक बन गई है और नाटो हमारे खिलाफ यह युद्ध लड़ते-लड़ते थक जाएगा।''

दक्षिण कोरिया एआई युग में प्राइवेट क्लाउड इंडस्ट्री का करेगा विस्तार

सोल । दक्षिण कोरिया प्राइवेट क्लाउड इंडस्ट्री के विस्तार की योजना बना रहा है। विज्ञान मंत्रालय ने अपने एक बयान में कहा है कि दक्षिण कोरिया ग्लोबल आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस युग में दूसरों के मुकाबले खुद को मजबूत बनाने के लिए प्राइवेट क्लाउड कंप्यूटिंग इंडस्ट्री का विस्तार करेगा। विज्ञान और आईसीटी मंत्रालय ने वैश्विक संस्थाओं के साथ रणनीतिक साझेदारी बनाकर स्थानीय क्लाउड कंपनियों को बढ़ावा देने का ऐलान किया है। इस साझेदारी का लक्ष्य 2022 से 2027 तक घरेलू क्लाउड बाजार का आकार दोगुना कर 10 ट्रिलियन वॉन (7.3 बिलियन अमेरिकी डॉलर) करना है। रिपोर्ट के अनुसार, मंत्रालय ने बताया है कि दक्षिण कोरिया की क्लाउड टेक्नोलॉजी ग्लोबल लीडर्स की टेक्नोलॉजी से एक वर्ष से अधिक पीछे है। इसके अलावा, देश में एआई क्लाउड इंफ्रास्ट्रक्चर भी अभी डेवलप नहीं है। इंडस्ट्री को बढ़ावा देने के लिए सरकार प्राइवेट क्लाउड सिस्टम को शिक्षा, फाइनेंस, डिफेंस और दूसरे पब्लिक सेक्टर में लाए जाने की योजना पर काम कर रही है। सरकार नेटवर्क सेपरेशन रेगुलेशन को आसान बनाना चाहती है। साथ ही एआई और क्लाउड कंपनियों को टैक्स बेनिफिट्स देना चाहती है। एक स्वदेशी एआई चिप को भी विकसित किया जाएगा, जिसका इस्तेमाल डेटा सेंटर में किया जा सकेगा और यह 1 एक्साफ्लॉप से अधिक क्षमता वाले एक राष्ट्रीय एआई कंप्यूटिंग केंद्र की स्थापना करने के लिए भी काम करेगा। इसका मतलब एक सुपर कंप्यूटर से होगा, जो प्रति सेकंड कम से कम एक क्विंटिलियन फ्लोटिंग पॉइंट ऑपरेशन की कैलकुलेशन कर सके। प्राइवेट क्लाउड इकोसिस्टम को सपोर्ट करने के लिए एक एआई इनोवेशन फंड भी बनाया जाएगा, जिसमें सरकार अगले वर्ष 45 बिलियन वॉन का निवेश करेगी। इसके अलावा, प्राइवेट सेक्टर से भी निवेश को प्रोत्साहित किया जाएगा। मंत्रालय के अनुसार, दक्षिण कोरिया इलेक्ट्रॉनिक्स और दूरसंचार अनुसंधान संस्थान के तहत एक एआई सेफ्टी रिसर्च इंस्टीट्यूट खोलने की योजना पर भी काम चल रहा है। सरकार अपनी इस योजना के साथ एआई टेक्नोलॉजी के सुरक्षित विकास और एप्लीकेशन पर ध्यान देगी। साथ ही सरकार का ध्यान लोकल एआई कंपनियों को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देने की ओर रहेगा।

इजरायली पीएम बेंजामिन नेतन्याहू के घर पर ड्रोन से हमला

लेबनान। से आए एक ड्रोन ने इजरायली पीएम बेंजामिन नेतन्याहू के घर को निशाना बनाया। प्रधानमंत्री कार्यालय ने पुष्टि की कि शनिवार (19 अक्टूबर) सुबह लेबनान से हुए ड्रोन अटैक का टारगेट कैसरिया में प्रधानमंत्री का निजी आवास था। टाइम्स ऑफ इजरायल की रिपोर्ट के मुताबिक पीएमओ ने कहा कि प्रधानमंत्री नेतन्याहू और उनकी पत्नी सारा हमले के समय घर पर नहीं थे और इस घटना में कोई हताहत नहीं हुआ। रिपोर्ट के मुताबिक लेबनान से शनिवार सुबह दागे गए दो अन्य ड्रोन को हवाई सुरक्षा बलों ने मार गिराया। इजरायली पीएम पर यह हमला ऐसे समय में हुआ जब तीन दिन पहले ही इजरायली सेना ने हमास लीडर याह्या सिनवार को बुधवार (16 अक्टूबर) को मार गिराया।

बेंगलुरु टेस्ट- न्यूजीलैंड को 107 रन का टारगेट-भारत दूसरी पारी में 462 रन पर ऑलआउट; सरफराज की सेंचुरी, पंत 99 पर आउट

बेंगलुरु। भारत ने न्यूजीलैंड को बेंगलुरु टेस्ट की चौथी पारी में जीत के लिए 107 रनों का लक्ष्य दिया है। पहली पारी में 46 रन ऑलआउट होने के बाद भारत ने दूसरी पारी में बेहतरीन बल्लेबाजी की।

सरफराज खान के शतक के अलावा ऋषभ पंत, विराट कोहली और रोहित शर्मा के बल्ले से अर्धशतक निकले। इससे टीम इंडिया ने 462 रन बनाए। न्यूजीलैंड ने 4 गेंद पर कोई रन नहीं बनाए थे और तभी खराब रौशनी की वजह से खेल रोकना पड़ा। कुछ देर बाद बारिश आई और अंपायर ने स्टंप की घोषणा कर दी।

सरफराज और पंत ने बेजोड़ बैटिंग

अपना पांचवां टेस्ट खेल रहे सरफराज खान ने दिन की शुरुआत 70 रन की। दिन के पहले घंटे में जब न्यूजीलैंड के तेज गेंदबाजों को पिच से मदद मिल रही थी तब उन्होंने लेट कट के शानदार इस्तेमाल किया। चोट की वजह से तीसरे दिन मैदान पर नहीं उतरे ऋषभ पंत बैटिंग के लिए उतरे से शुरुआत में जूझ रहे थे। लेकिन जल्द ही सेट होने के बाद उन्होंने हाथ खोलने शुरू कर दिए। सरफराज ने चौके की मदद से टेस्ट क्रिकेट में अपना पहला शतक लगाया। सेट होने के बाद ऋषभ पंत ने भी हाथ खोलने शुरू कर दिए।

ऋषभ पंत ने ग्लेन फिलिप्स के खिलाफ चौका लगा 55 गेंद में अपना अर्धशतक पूरा किया। इसके बाद बारिश ने मैच में खलल डाला और मैच लगभग दो घंटे तक रुका रहा जिसमें 40 मिनट लंच का विश्राम शामिल था। बारिश के बाद जब खेल दोबारा शुरू हुआ तो ऋषभ पंत ने बायें हाथ के स्पिनर रचिन रविंद्र के खिलाफ दो छक्के लगाये। पंत ने जब आक्रामक रूख अपनाया तो दूसरे छोर से सरफराज संभल कर बल्लेबाजी करने लगे।

नई गेंद आने के बाद बदला खेल

न्यूजीलैंड ने इस दौरान भारतीय पारी के 80 ओवर के बार नयी गेंद लेने का फैसला किया और यह टीम के लिए कारगर साबित हुए। उसके तेज गेंदबाजों ने सरफराज और पंत को स्विंग से परेशान किया। 150 रन पूरा करने के ठीक बाद सरफराज खान टिम साउदी की गेंद पर आउट हुए। उन्होंने 18 चौके और 3 छक्के मारे। उस समय भारत का स्कोर 408 रन था। ऋषभ पंत भी शतक की तरफ बढ़ रहे थे लेकिन 99 के स्कोर पर ओ'रूर्के ने उन्हें बोल्ड कर दिया। इसके ठीक बाद केएल राहुल भी 12 रन बनाकर आउट हो गए। रविंद्र जडेजा के बल्ले से भी 5 ही रन निकले। अश्विन ने 15 रनों की पारी खेली। उन्हे मैट हेनरी ने एलबीडब्ल्यू किया। इसके बाद बुमराह और सिराज खाता खोले बिना तीन गेंद के भीतर आउट हो गए। ओ'रूर्के और हेनरी ने भारत के 3-3 बल्लेबाजों को आउट किया। न्यूजीलैंड को आखिरी दिन जीत के लिए 107 रन चाहिए तो भारत को 10 विकेट की दरकार है।

ऋषभ पंत बने सबसे तेज 2,500 टेस्ट रन पूरे करने वाले भारतीय विकेटकीपर

नईदिल्ली। भारतीय क्रिकेट टीम के विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत ने न्यूजीलैंड क्रिकेट टीम के खिलाफ जारी पहले टेस्ट के चौथे दिन बेहतरीन बल्लेबाजी की।वह चायकाल से पहले 105 गेंदों में 9 चौके और 5 छक्कों की मदद से 99 रन बनाकर आउट हुए। इस दौरान पारी का 48वां रन बनाते ही उनके टेस्ट क्रिकेट में 2,500 रन पूरे हो गए।वह सबसे तेज यह उपलब्धि हासिल करने वाले भारतीय विकेटकीपर बल्लेबाज बने हैं।आइए उनके आंकड़ों पर नजर डालते हैं।

पंत ने 36वें टेस्ट की 62वीं पारी में अपने 2,500 टेस्ट पूरे किए हैं। उन्होंने इस मामले में पूर्व भारतीय कप्तान महेंद्र सिंह धोनी को पीछे छोड़ दिया है, जिन्होंने 69 पारियों में यह उपलब्धि हासिल की थी।सूची में फारुख इंजीनियर तीसरे पायदान पर हैं, जिन्होंने 82 पारियों में यह कारनामा किया था।पंत अब तक अपनी पारी में 5 चौके और 3 छक्के जड़ चुके हैं और सरफराज खान के साथ 113 रन की साझेदारी निभा चुके हैं।

पंत ने साल 2018 में इंग्लैंड क्रिकेट टीम के खिलाफ अपने टेस्ट क्रिकेट करियर का आगाज किया था।उन्होंने अब तक 36 टेस्ट की 62 पारियों में लगभग 44.75 की औसत के साथ 2,551 रन बनाए हैं। इस दौरान उन्होंने 6 शतकों के अलावा 12 अर्धशतक भी जड़े हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 159* रन है।इसी तरह वह विकेट के पीछे 136 शिकार भी कर चुके हैं, जिसमें 122 कैच और 14 स्टम्प्स शामिल है।

दक्षिण अफ्रीका बनाम न्यूजीलैंड मुकाबले आज

महिला टी-20 विश्व कप 2024 फाइनल

नईदिल्ली। महिला टी-20 विश्व कप 2024 का फाइनल मुकाबला 20 अक्टूबर (रविवार) को खेला जाएगा। दक्षिण अफ्रीका महिला क्रिकेट टीम का सामना न्यूजीलैंड महिला क्रिकेट टीम से होगा।अभी तक दोनों टीमों ने विश्व कप का 1 भी खिताब अपने नाम नहीं किया है।न्यूजीलैंड ने वेस्टइंडीज को सेमीफाइनल मुकाबले में 8 रन से हराया और दक्षिण अफ्रीका को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सेमीफाइनल में 8 विकेट से जीत मिली थी।आइए फाइनल मुकाबले की ड्रीम इलेवन और जरूरी बातें जानते हैं।

न्यूजीलैंड महिला क्रिकेट टीम और दक्षिण अफ्रीका महिला टीम के बीच अब तक 15 टी-20 अंतरराष्ट्रीय मुकाबले खेले गए हैं।इस दौरान न्यूजीलैंड की टीम को 4 मुकाबलों में जीत मिली है। दक्षिण अफ्रीका की टीम ने 11 मैच अपने नाम किए हैं।महिला टी-20 विश्व कप में दोनों टीमों के बीच अब तक 5 मैच खेले गए हैं।3 मैच में न्यूजीलैंड को जीत मिली है। 2 मुकाबले दक्षिण अफ्रीका टीम ने अपने नाम किए हैं।

न्यूजीलैंड की टीम प्लेइंग इलेवन में ज्यादा बदलाव नहीं करना चाहेगी। अनुभवी सूजी बेट्स और सोफी डिवाइन से इस बड़े मुकाबले में काफी उम्मीदें होंगी।इनके अलावा अमेलिया केर से भी दक्षिण अफ्रीका की टीम को बचना होगा। वह शानदार फॉर्म में हैं।न्यूजीलैंड की संभावित एकादश- सूजी बेट्स, जॉर्जिया प्लिमर, अमेलिया केर, सोफी डिवाइन (कप्तान), ब्रुक हॉलिडे, मैडी ग्रीन, इसाबेला गेज (विकेटकीपर), रोजमेरी मैयर, ली ताहूहू, ईडन कार्सन, फ्रान जोनास, मौली पेनफोल्ड, जेस केर, हन्ना रोवे और लेई कास्पेरेक।

दक्षिण अफ्रीका की टीम को कप्तान लौरा वोल्वार्ड्ट और ताजमिन ब्रिट्स से काफी उम्मीदें होंगी। ये दोनों खिलाड़ी इस विश्व कप में शानदार फॉर्म में चल रही हैं।इनके अलावा एनेके बॉश ने भी ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ शानदार पारी खेली थी। नॉनकुलुलेको म्लाबा से गेंदबाजी में उम्मीदें होंगी।दक्षिण अफ्रीका की संभावित एकादश- लौरा वोल्वार्ड्ट (कप्तान), ताजमिन ब्रिट्स, एनेके बॉश, मारिजाने कप्प, क्लो ट्रायॉन, सुने लुस, नादिन डी क्लार्क, एनेरी डर्कसन, सिनालो जाफ्टा (विकेटकीपर), नॉनकुलुलेको म्लाबा और अयाबोंगा खाका।

अदाणी फाउंडेशन ने तेलंगाना की यंग इंडिया स्किल्स यूनिवर्सिटी के लिए 100 करोड़ रुपये किए दान

हैदराबाद। देश का सुनहरा भविष्य बनाने और नई पीढ़ियों को आगे बढ़ाने के लिए अदाणी फाउंडेशन की ओर से शुक्रवार को तेलंगाना में यंग इंडिया स्किल्स यूनिवर्सिटी स्थापित करने के लिए 100 करोड़ रुपये दान करने की घोषणा की गई। अदाणी ग्रुप के चेयरमैन गौतम अदाणी ने अदाणी फाउंडेशन के डेलिगेशन के साथ राज्य के मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी से मिलकर यंग इंडिया स्किल्स यूनिवर्सिटी के लिए 100 करोड़ रुपये का चेक दिया।

गौतम अदाणी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी की परिवर्तनकारी दृष्टि और प्रेरक नेतृत्व में बन रही यंग इंडिया स्किल्स यूनिवर्सिटी पहल के लिए योगदान देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अदाणी ग्रुप चेयरमैन ने कहा कि हम साथ मिलकर न केवल अपने युवाओं के भविष्य को आकार दे रहे हैं, बल्कि एक उज्जवल, अधिक समृद्ध भारत के लिए असीमित संभावनाओं का द्वार खोल रहे हैं। हमें यहां एक ऐसी स्थायी विरासत का निर्माण करना है, जो आने वाली पीढ़ियों का उत्थान करेगी। अदाणी पोर्ट्स एंड एसईजेड लिमिटेड के प्रबंध निदेशक करण अदाणी, मुख्य सचिव शांति कुमारी और अन्य अधिकारी भी वहां उपस्थित थे। गौतम अदाणी ने युवाओं के कौशल विकास और सशक्तिकरण के लिए तेलंगाना सरकार की पहल के लिए निरंतर समर्थन का भी वादा किया। मुख्यमंत्री रेड्डी ने एक अगस्त को राज्य की विधानसभा में घोषणा की थी कि अदाणी लॉजिस्टिक्स यंग इंडिया स्किल्स यूनिवर्सिटी के इंडस्ट्री पार्टनर्स में से एक होगी। विधानसभा ने एक ऐसे यूनिवर्सिटी की स्थापना के लिए यंग इंडिया स्किल यूनिवर्सिटी तेलंगाना (सार्वजनिक-निजी भागीदारी) विधेयक-2024 पारित किया, जो छात्रों को उद्योग की मांग को पूरा करने के लिए कौशल से लैस करेगा।

साथ यह घोषणा की गई थी कि अदाणी लॉजिस्टिक्स और ह9 सॉल्यूशंस के साथ साझेदारी में स्कूल ऑफ ई-कॉमर्स एंड लॉजिस्टिक्स की स्थापना की जाएगी। साझेदार कंपनियां पाठ्यक्रम तैयार करेंगी, अपने-अपने क्षेत्रों में छात्रों को प्रशिक्षित करेंगी और नौकरियां प्रदान करेंगी। 11 अक्टूबर को यंग इंडिया स्किल्स यूनिवर्सिटी ने घोषणा की थी कि वह 4 नवंबर से अपने पाठ्यक्रमों का पहला सेट लॉन्च करेगी। यूनिवर्सिटी ने शुरुआत में तीन स्कूल लॉन्च किए हैं, जिसमें स्कूल ऑफ लॉजिस्टिक्स एंड ई-कॉमर्स, स्कूल ऑफ हेल्थकेयर और स्कूल ऑफ फार्मास्यूटिकल्स और लाइफ साइंस शामिल हैं।

2030 तक भारत में 120 करोड़ हो जाएगी स्मार्टफोन यूजर की संख्या!

नई दिल्ली । भारत में 2030 तक स्मार्टफोन यूजर्स की संख्या 100 करोड़ का आंकड़ा पार करने जा रही है। एक नई रिपोर्ट के अनुसार, देश में 2030 तक 120 करोड़ स्मार्टफोन कनेक्शन होने का अनुमान है, जिनमें से आधे यूजर्स 5जी स्मार्टफोन का इस्तेमाल कर रहे होंगे।

वैश्विक मोबाइल नेटवर्क बॉडी जीएसएमए के अनुसार, देश में 2030 तक 64.1 करोड़ से अधिक 5जी सब्सक्राइबर्स होने का अनुमान है, जिनकी संख्या 49 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है। जीएसएमए इंटेलिजेंस के अनुमानों के अनुसार, भारत में अगले छह वर्षों में 5जी मोबाइल सब्सक्राइबर्स की संख्या में तेजी से वृद्धि होगी और डेटा का इस्तेमाल भी तेजी से बढ़ेगा।5जी सब्सक्राइबर्स की संख्या में इस जबरदस्त उछाल से डेटा खपत में भी भारी वृद्धि होगी, जिससे भारतीय दूरसंचार कम्पनियां बड़े निवेश करने के लिए प्रेरित होंगी।भारत में प्रति ग्राहक डेटा खपत 2023 - 2029 के बीच 15 प्रतिशत की सीएजीआर (कंपाउंड इंटरेस्ट ग्रोथ रेट) से बढ़कर 68 जीबी प्रति माह तक पहुंचने की संभावना है।एशिया-प्रशांत क्षेत्र में, भारत और इंडोनेशिया आर्थिक लचीलेपन, रोजगार सृजन और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए डिजिटलीकरण का लाभ उठाने की बेहतर स्थिति में हैं।संगठन ने कहा, नवीनतम जीएसएमए मोबाइल इकोनॉमी एशिया पैसिफिक 2024 रिपोर्ट के अनुसार, भारत में 2030 तक 120 करोड़ स्मार्टफोन कनेक्शन होने का अनुमान है, जबकि इंडोनेशिया के 2030 तक 38.7 करोड़ कनेक्शन तक पहुंचने की उम्मीद है।इसके अलावा, मोबाइल टेक्नोलॉजी और सेवाओं से 2023 में एशिया-प्रशांत क्षेत्र में सकल घरेलू उत्पाद का 5.3 प्रतिशत उत्पन्न हुआ, जिससे आर्थिक मूल्य में 88,000 करोड़ डॉलर का योगदान मिला।

ईएसआई-आयुष्मान भारत योजना को साथ लाने को मिली मंजूरी, स्वास्थ्य सेवा पहुंच बढ़ाने की तैयारी

नई दिल्ली। कर्मचारी राज्य बीमा निगम की चिकित्सा लाभ परिषद ने शुक्रवार को लाभार्थियों के लिए स्वास्थ्य सेवा पहुंच बढ़ाने को लेकर आयुष्मान भारत पीएम-जन आरोग्य योजना (जेएवाई) के साथ कर्मचारी राज्य बीमा (ईएसआई) योजना को एक साथ लाने की मंजूरी दे दी। श्रम मंत्रालय ने बयान में कहा कि दोनों योजनाओं को एकीकृत करने का फैसला कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ईएसआईसी) मुख्यालय में आयोजित चिकित्सा लाभ परिषद की 86वीं बैठक में लिया गया।

बैठक की अध्यक्षता ईएसआईसी के महानिदेशक (डीजी) अशोक कुमार सिंह ने की। आयुष्मान भारत पीएम-जेएवाई दुनिया की सबसे बड़ी स्वास्थ्य बीमा योजना है। इसका उद्देश्य 12 करोड़ से अधिक गरीब परिवारों (लगभग 55 करोड़ लाभार्थी) को प्रति वर्ष पांच लाख रुपये का स्वास्थ्य बीमा प्रदान करना है। परिषद ने राज्यों के लिए साझा सहायता मिशन (सीएसएम) के क्रियान्वयन को भी मंजूरी दी। सीएसएम का उद्देश्य बीमित व्यक्ति केंद्रित दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करते हुए राज्यों में ईएसआई की चिकित्सा सेवा वितरण प्रणाली में सुधार और मजबूती लाना है। इसके अलावा, परिषद ने लाभार्थियों के लिए वार्षिक निवारक स्वास्थ्य जांच और जागरुकता शिविर शुरू करने को मंजूरी दी, ताकि जीवनशैली विकारों के जल्द निदान और बीमित व्यक्तियों/महिलाओं/ट्रांसजेंडरों में पोषण संबंधी कमियों का पता लगाने पर ध्यान केंद्रित किया जा सके। सरकार 10 नए ईएसआईसी मेडिकल कॉलेज स्थापित करेगी और ईएसआई निगम के सदस्यों के लिए बेरोजगारी भत्ता योजना को जून, 2026 तक बढ़ाएगी। ईएसआईसी के बुनियादी ढांचे और चिकित्सा सुविधाओं को और मजबूत करने के लिए कई महत्वपूर्ण फैसले हुए हैं।

प्रथम पेज का शेष

जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा ...

नेशनल कॉन्फ्रेंस को मिली है बहुमत- जम्मू-कश्मीर नेशनल कॉन्फ्रेंस (जेकेएनसी)-कांग्रेस गठबंधन ने विधानसभा चुनाव में 49 सीटों के साथ बहुमत हासिल किया था। एनसी ने 42 सीटें जीतीं, जबकि कांग्रेस ने 6 और उसकी सहयोगी इंडिया ब्लॉक ने 1 सीट जीती थी।

अनुकंपा नियुक्ति का रास्ता साफ..

कार्यकाल में 300 से अधिक दिनों तक लगातार आंदोलन किया गया था। जिसमें उन्होंने अलग-अलग ढंग से प्रदर्शन कर सरकार के सामने अपनी मांगे रखी थी। सीएम साय ने खोला नियुक्ति का रास्ता - उन्होंने आगे कहा कि, हमारे लम्बे संघर्ष का सुखद परिणाम अब सामने आया है। सीएम श्री साय की सरकार ने दिवंगत शिक्षक पंचायत के परिजनों के हित में बड़ा निर्णय लेते हुए उन्हें अनुकंपा नियुक्ति दिए जाने का रास्ता खोल दिया है।

भाजपा ने घोषित किया प्रत्याशी..

2019 के लोकसभा चुनाव में रायपुर से बने थे सांसद- 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा की टिकट से चुनाव लड़कर सोनी ने 8,37,902 वोट हासिल किए। उनके प्रतिद्वंदी रहे कांग्रेस के प्रत्याशी प्रमोद दुबे को 4,89, 664 वोट मिले थे। 13 अक्टूबर 2019 को वे संसद की स्टेंडिंग कमेटी ऑन हाउसिंग अर्बन अफेयर के मेंबर बने। नौ अक्टूबर 2019 को संसद की वेतन एवं भत्तों को लेकर बनी संयुक्त समिति के सदस्य बनें। वन एवं पर्यावरण जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के परामर्श दात्री कमेटी के सदस्य बनें।

डीएमएफ घोटाला : ईडी के निशाने...

इस दौरान दोनों ने संगठित तरीके से डीएमएफ में अनियमितताओं को बढ़ावा देकर घोटाले को अंजाम दिया था। एजेंसी ने इस मामले में एक मार्च को राज्य में 13 स्थानों पर छापेमारी की थीऔर डिजिटल,कागजी दस्तावेजों के साथ जेवर, 27 लाख रुपए नकदी समेत 2.32 करोड़ रूपये की संपत्ति जब्त किया था।

अमेरिका के साथ संबंध ..

श्री गोयल की इस यात्रा के दौरान भारत और अमेरिका के बीच महत्वपूर्ण खनिजों की आपूर्ति श्रृंखला के विस्तार और विविधीकरण के लिये एक सहमति के एक ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये गये। उन्होंने कहा कि भारत की ओर से इस समझौते का क्रियान्वयन खनन मंत्रालय द्वारा किया जाएगा। उन्होंने कहा, ÷हम इस समझौते को भागीदारी के स्तर ले जाएंगे और इसमें तीसरे देशों को भी जोड़ने पर विचार किया जाएगा। उन्होंने कहा कि अमेरिका में इस सम भारत से प्राकृतिक हीरे का निर्यात मंदी के कारण कुछ प्रभावित हुआ है, लेकिन वहां प्रयोगशाला में तैयार हीरे जटित आभूषणों की मांग बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि भारत का रत्न आभूषण उद्योग अपने डिजाइन के लिये विख्यात है और भारत की प्रयोगशाला में विनिर्मित हीरे के कारोबार में भी उभर चुका है और स्थिति हमारे अनुकूल रहने की है।

श्री गोयल ने कहा कि भारत अमेरिका सीईओ फोरम का अमेरिका में चुनाव के बाद जल्दी ही पुनर्गठन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इसके लिये उन्होंने इसमें नये क्षेत्रों और युवा उदमियों को भी रखने का सुझाव दिया है। उन्होंने कहा कि भारत में भौतिक संपदा कानूनों में सुधार और भारत के पेंटेट कार्यालय की दक्षता को देखते हुये वहां की कंपनियां प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के क्षेत्र में भी सहयोग बढ़ाना चाहती हैं और फार्मा, डिजिटल टेक्नोलॉजी और रक्षा क्षेत्र में प्रौद्योगिकी के विकास के लिये मिलकर काम करने को इच्छुक दिखी हैं।

उन्होंने संकेत दिया कि दोनों पक्ष फ्यूजन (परमाणु संलयन) प्रौद्योगिकी पर आधारित माड्यूलर परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में भी सहयोग की नयी पहल कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि फिशन (परमाणु विखंडन) आधारित प्रौद्योगिकी की तुलना में भविष्य में परमाणु संलयन प्रौद्योगिकी पर जोर होगा क्यों की इसमें जोखिम कम हैं। श्री गोयाल ने प्रधानमंत्री मोदी की पिछली अमेरिका यात्रा में भारत में उन्नत सेमी कंडक्टर इकाइयां (कंप्यूटर चिप फैब्रिकेशन) लगाने के लिए दोनों पक्षों के बीच सहयोग की घोषणा का भी उल्लेख किया । उन्होंने कहा कि हरित ऊर्जा, हरित अमोनिया तथा हरित हाइड्रोजन के क्षेत्र में भारत वैश्विक केंद्र बनाने की संभावना रखता है और इन क्षेत्रों में भविष्य में दोनों देशों के बीच सहयोग बढ़ने की बड़ी संभावना है। उन्होंने अमेरिका के साथ एक दूसरे के यहां सीमित समय के लिए आने जाने वाली कंपनी कर्मियों सामाजिक सुरक्षा अंशदान (पीएफ कटौती) से मुक्त करने के प्रस्तावित टोटलाइजेशन समझौते के बारे में पूछे जाने पर कहा, ÷इस पर पहले से ही बात चल रही है। उन्होंने हमसे कुछ जानकारियां चाही थीं। उन्हें इसे उपलब्ध करा दिया गया है। वे उस पर विचार कर रहे हैं। भारत के लिए अमेरिका व्यापार और निवेश के क्षेत्र में एक प्रमुख भागीदार है।

भाजपा ने जारी की 66 प्रत्याशियों ...

इंद्रजीत महतो की जगह उनकी पत्नी तारा देवी को उम्मीदवार बनाया गया है। सिमरिया, जमुआ और कांके के विधायक का टिकट एंटी इनकंबेंसी की रिपोर्ट पर काटा गया है, जबकि सिंदरी के विधायक को उनके खराब स्वास्थ्य की वजह से उम्मीदवार नहीं बनाया गया है।

68 सीटों पर बीजेपी लड़ेगी चुनाव- उम्मीदवारों की लिस्ट पार्टी के महासचिव अरुण सिंह के हस्ताक्षर से जारी की गई है। पार्टी राज्य की 81 में से 68 विधानसभा सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारने की घोषणा कर चुकी है। राज्य में 13 नवंबर और 20 नवंबर को दो चरणों में मतदान होगा। मतगणना 23 नवंबर को होगी।

कनाडा में सिख पुलिस अफसर आतंकी गतिविधियों में शामिल, भारत ने भगोड़ों की सूची में डाला नाम

कनाडा। खालिस्तानी आतंकी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या को लेकर भारत और कनाडा के रिश्ते में तनाव आ गया है। इस बीच, नई दिल्ली ने कनाडाई बॉर्डर सर्विस एजेंसी के अधिकारी संदीप सिंह सिद्धू पर गंभीर आरोप लगाए हैं। साथ ही, उसे निर्वासन के लिए मांगे गए भगोड़े आतंकवादियों की सूची में शामिल किया है। रिपोर्ट के मुताबिक, सिद्धू सीबीएसए का कर्मचारी और प्रतिबंधित इंटरनेशनल सिख यूथ फेडरेशन का सदस्य है। उस पर पंजाब में आतंकवादी गतिविधियों को बढ़ावा देने का आरोप है।

संदीप सिंह सिद्धू के पाकिस्तान स्थित खालिस्तान आतंकवादी लखबीर सिंह रोडे और आईएसआई गुर्गों से संबंध रहे हैं। साथ ही, साल 2020 में बलविंदर सिंह संधू की हत्या में उसके शामिल होने का आरोप है। शौर्य चक्र से सम्मानित बलविंदर सिंह संधू ने पंजाब के विद्रोह के दौरान खालिस्तानी आतंकवादियों के खिलाफ ऐक्शन लिया। साथ ही, अमेरिका और कनाडा में सिख फॉर जस्टिस के नेतृत्व में खालिस्तान जनमत संग्रह का विरोध का प्रतीक बन गए। राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने दावा किया कि सनी टोरंटो और आतंकवादी लखबीर सिंह रोडे सहित दूसरे खालिस्तानी गुर्गों ने संधू की हत्या की साजिश रची। हालांकि, अभी यह साफ नहीं है कि सनी टोरंटो का ही उपनाम संदीप सिंह सिद्धू है या नहीं।

रिपोर्ट में बताया कि संदीप सिंह सिद्धू को ब्रैम्प्टन में सुपरिटेंडेंट के तौर पर प्रमोशन मिला है। अब देखना है कि भारत के ऐक्शन पर कनाडा की ओर से किस तरह की प्रतिक्रिया आती है। दरअसल, खालिस्तानी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या में भारतीय एजेंटों की संभावित संलिप्तता को लेकर पिछले साल सितंबर में प्रधानमंत्र् जस्टिन ट्रूडो ने आरोप लगाए।

गाजा से निकले इजरायल, तभी बंधकों को करेंगे रिहा; सिनवार की मौत से बौखलाया हमास

हमास । हमास के एक शीर्ष राजनीतिक नेता खलील अल-हय्या ने शुक्रवार को समूह के नेता याह्या सिनवार की मृत्यु की पुष्टि की। अल-हय्या ने एक टेलीविजन बयान में फलस्तीनी आतंकवादी समूह के इस रुख को दोहराया कि वह सात अक्टूबर, 2023 को इजरायल पर समूह के हमले में पकड़े गए इजरायली बंधकों को तब तक रिहा नहीं करेगा, जब तक कि गाजा में एक साल से चल रहे युद्ध में संघर्ष विराम नहीं हो जाता। उसने कहा, गाजा पर आक्रमण समाप्त होने और गाजा से वापसी होने से पहले वे कैदी आपके पास वापस नहीं आएंगे।

विधानसभा अध्यक्ष डॉ. डॉक्टर रमन सिंह एवं स्वास्थ्य मंत्री श्यामबिहारी जयसवाल से मिले खुज्जी के भाजपा नेता

छुरिया (दावा)। 18 अक्टूबर दिन गुरुवार को खुज्जी विधानसभा क्षेत्र के वरिष्ठ भाजपा नेता जिला भाजपा उपाध्यक्ष चंद्रिका प्रसाद डडसेना, शिशुपाल साहू एवं श्यामसुंदर साहू ने क्षेत्र के विभिन्न समस्याओं को लेकर विधानसभा अध्यक्ष डॉ.रमन सिंह एवं स्वास्थ्य मंत्री श्यामबिहारी जायसवाल से रायपुर निवास में मुलाकात कर खुज्जी विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न समस्याओं को लेकर मांग पत्र सौंपा। वरिष्ठ भाजपा नेता चंद्रिका प्रसाद डडसेना ने विधानसभा अध्यक्ष डॉ.रमन सिंह से क्षेत्र की जर्जर सड़कों की मरम्मत व नया सड़क निर्माण की मांग को लेकर मांग पत्र सौंपा, वही शिशुपाल साहू ने ग्राम भोलापुर में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र स्वीकृती एवं (मानव संसाधन) पद सेटअप, हायर सेकेंडरी स्कूल भोलापुर में शिक्षक की कमी को लेकर मांग पत्र सौंपा। वही श्यामसुंदर साहू ने ग्राम महाराजपुर में हाईस्कूल खोलने की मांग को लेकर मांग पत्र सौंपा।

साथ ही छत्तीसगढ़ शासन के स्वास्थ्य मंत्री श्यामबिहारी जायसवाल से मुलाकात कर ग्राम भोलापुर में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र स्वीकृती एवं (मानव संसाधन) पद सेटअप की मांग को लेकर चंद्रिकाप्रसाद डडसेना के नेतृत्व मे मुलाकात कर गंभीर चर्चा की। इस विषय पर स्वास्थ्य मंत्री ने तत्काल संचालक स्वास्थ्य संरचनालय को निर्देशित कर भोलापुर मे प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र उन्नयन के विषय में आवश्यक कार्यवाही करने फोन से निर्देशित किया। गौरतलब है कि ग्राम भोलापुर में 61.96 की लागत से प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र भवन का निर्माण हो चुका है लेकिन अभी तक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र एवं मानव संसाधन पद सेटअप की स्वीकृति प्राप्त नहीं हुई है। इस विषय को लेकर भोलापुर के ग्रामीण पिछले लगभग साल विधानसभा अध्यक्ष, स्वास्थ्य मंत्री, प्रभारी मंत्री, सांसद, विधायक, से लेकर विभागीय अधिकारियों के चक्कर लगा रहा है लेकिन ग्रामीणों की मांग पूरा नहीं हुआ है।

वहीं पिछले 28 सितंबर 2024 को प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय जी ने राजनांदगांव ग्राम बरगा के एक कार्यक्रम में वर्चुअल प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र भवन भोलापुर का उद्घाटन किया है था। लेकिन प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र की स्वीकृति, मानव संसाधन पद सेटअप की स्वीकृति प्राप्त नहीं होने के बाद उक्त भवन कोई काम का नही रह गया है। मजेदार बात यह है कि संभवतः छत्तीसगढ़ प्रदेश का यह पहला मामला होगा की बिना प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और मानव संसाधन पद सेटअप के स्वीकृति के बिना भवन निर्माण पहले स्वीकृत हुआ होगा जो समझ से परे है। एक विडंबना है की भवन निर्माण पूर्ण हुई लगभग 1 साल होने को है लेकिन देख के अभाव में लाखों का भवन जर्जर हो जायेगा। भोलापुर सहित क्षेत्र के ग्रामीणों ने स्वास्थ्य मंत्री एवं विधानसभा अध्यक्ष से भोलापुर मे प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र स्वीकृति प्रदान कर मानव संसाधन पद सेटअप की स्वीकृति प्रदान करने की मांग की है।

साइबर क्राइम से बचने हेतु छात्र-छात्राओं को किया जागरुक

राजनांदगांव (दावा)। 18 अक्टूबर को शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला बोरी में चिखली थाना राजनांदगांव के थाना प्रभारी (एस ओ), नरेश कुमार बंजारे एवं थाना के अन्य स्टाफ के द्वारा साइबर समस्या से हो रही घटनाओं के संबंध में एवं बचाव हेतु जागरूकता संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई। इसी कड़ी में संस्था प्राचार्य श्रीमती अनीता सहारे के द्वारा मोबाइल एवं इंटरनेट उपयोग के समय भी बरती जाने वाली महत्वपूर्ण सावधानियां को विस्तार पूर्वक बताया गया एवं इस कार्यक्रम में उपस्थित शाला प्रबंधन एवं विकास समिति के अध्यक्ष मोहन लाल देवांगन के द्वारा भी साइबर क्राइम से बचने हेतु सतर्क किया गया। इस अवसर पर संस्था के शिक्षकगण संकुल समन्वयक चंद्रशेखर भरने एवं शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला बोरी एवं शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला बोरी के 223 छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

त्यौहारों में ग्रीन पटाखों का करें उपयोग

राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण द्वारा पटाखों के उपयोग के संबंध में समय सीमा निर्धारित

राजनांदगांव (दावा)। राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण द्वारा पटाखों के उपयोग के संबंध में समय सीमा निर्धारित किया गया है। जिसके अनुसार इस वर्ष दीपावली के दिन पटाखें फोडने के लिए रात 8 बजे से रात्रि 10 बजे तक की समय सीमा निर्धारित की गई है। इसी तरह छठ पूजा के लिए सुबह 6 बजे से सुबह 8 बजे तक, गुरू पर्व पर रात्रि 8 बजे से रात्रि 10 बजे तक, नया वर्ष व क्रिसमस पर रात्रि 11.55 बजे से रात्रि 12.30 बजे तक ही पटाखे फोड़े जाने का समय निर्धारित किया गया है। आदेश का पालन कराने के लिए कड़ी निगरानी की जाएगी। कम उत्सर्जन करने वाले इम्प्रूव्ड एवं हरित पटाखों का निर्माण एवं विक्रय किया जाएगा। इसके अतिरिक्त अन्य पटाखों के उत्पादन एवं विक्रय पर रोक लगाई जाएगी।

उच्चतम न्यायालय द्वारा पटाखों के उपयोग के संबंध में रिट पिटीशन (सिविल) अर्जुन गोपाल विरूद्ध यूनियन ऑफ इंडिया में पारित आदेश के परिपालन में सीरीज पटाखे अथवा लडियों के विक्रय, उपयोग एवं निर्माण को प्रतिबंधित करना है। केवल उन्हीं पटाखों का विक्रय किया जाना है, जिसका ध्वनि का स्तर निर्धारित सीमा 125 डेसीबल के भीतर हो। ऑनलाईन अर्थात ई-व्यापारी वेबसाईटों जैसे फ्लिपकार्ट, अमेजॉन आदि से पटाखों की बिक्री प्रतिबंधित कर दी गई है। उच्चतम न्यायालय ने कम्युनिटी फायर क्रेकिंग के लिए नगरीय निकायों को अपने अधिकार क्षेत्र में एक उपयुक्त स्थल का निर्धारण शीघ्र कर आम जनता को निर्धारित स्थल की जानकारी दीपावली के एक सप्ताह पूर्व आवश्यक रूप से देने के निर्देश दिए हैं। पटाखों का बहुतायत में उपयोग होने से वायु प्रदूषण के स्तर में वृद्धि होती है। वायु प्रदूषण बढने के कारण बीमारियों के घातक रूप की संभावना होती है। उच्चतम न्यायालय द्वारा दिये गये निर्देशों के संबंध में नागरिकों को व्यापक स्तर पर जागरूक करने कहा गया है।

छत्तीसगढ़ पर्यावरण संरक्षण मण्डल भिलाई द्वारा दीपावली के अवसर पर शहर में परिवेशीय वायु गुणवत्ता का मापन का कार्य किया जा रहा है। जिसे पूर्ण करने के उपरांत मण्डल मुख्यालय के माध्यम से केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड नई दिल्ली को प्रेषित किया जाएगा।

उत्कृष्ट प्रधान पाठक में चयनित हुए कोमल सिंह गुरु

छुरिया (दावा)। मुख्यमंत्री गौरव अलंकरण योजना तहत दुर्ग संभाग स्तर पर बेहतरीन कार्य करने वाले उत्कृष्ट प्राचार्यों, प्रधानपाठकों व व्याख्याताओं का चयन किया गया। दुर्ग संभाग अंतर्गत सभी 25 विकासखंडों से 25 उत्कृष्ट प्रधान पाठक प्राथमिक शाला, 25 उत्कृष्ट प्रधान पाठक पुर्व माध्य शाला व 7 जिलों से एक एक उत्कृष्ट प्राचार्य एवं शिक्षाश्री सम्मान हेतु संभाग अंतर्गत 3 उत्कृष्ट व्याख्याताओं का चयन किया है। इसी संदर्भ में राजनांदगांव जिले से प्राथमिक शाला उत्कृष्ट प्रधान पाठक के रूप में छुरिया विकासखण्ड के प्राथमिक शाला जोब के प्रधान पाठक कोमल सिंह गुरु का चयन किया गया है। यह बताना लाजिमी होगा कि प्रधानपाठक श्री कोमल सिंह गुरु सदैव सहज सरल स्वभाव वाले शिक्षक है वहीं बच्चों को नित नए नए आयामों से नवाचारी प्रयोगों से गीत संगीत से प्रतिदिन बच्चों को शिक्षा देने के लिए जाने जाते हैं। साथ ही इस स्कूल से हर वर्ष नवोदय, एकलव्य, कन्या आवासीय विद्यालय के लिए बच्चे चयनित होते आ रहे हैं। वनांचल में पदस्थ कोमल सिंह गुरु की इस उपलब्धि पर शाला के स्टाप सियाराम मंडावी, दयाराम निषाद, मुकेश चन्द्रवंशी सहित सभी शुभचिंतकों ने भूरी भूरी प्रशंसा करते हुए बधाई शुभकामनाएं दिया है।

जनजातीय समाज का अतीत अत्यंत उज्ज्वल एवं गौरवशाली- पवन साहू

बालोद (दावा)। वरिष्ठ जनप्रतिनिधि पवन साहू ने कहा कि जनजातीय समाज का अतीत अत्यंत उज्ज्वल एवं गौरवशाली है। उन्होंने कहा कि राष्ट्र व समाज के नवनिर्माण में जनजातीय समाज के लोगों की भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण है। श्री साहू आज शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था बालोद में आयोजित जनजातीय गौरव स्मृति कार्यक्रम के अवसर पर अपना उद्गार व्यक्त कर रहे थे, वे कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था बालोद के प्राचार्य शैलेष कुमार थॉमस ने किया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में अखिल भारतीय हल्बा-हल्बी समाज के केंद्रीय अध्यक्ष देवेन्द्र माहला सहित विशेष अतिथि के रूप में गोंडवाना समाज के अधिकारी-कर्मचारी प्रकोष्ठ के संभागीय अध्यक्ष चंद्रेश ठाकुर, जिला पंचायत सदस्य श्रीमती कीर्तिका साहू, सरपंच संघ के ब्लॉक अध्यक्ष अरूण साहू के अलावा कार्यक्रम के जिला संयोजक कृष्णा साहू, संयोजक श्रीमती पूर्णिमा ठाकुर, सह संयोजक कुमेश ठाकुर उपस्थित थे। इस अवसर पर अतिथि एवं वक्ताओं ने जनजातीय समाज के विभूतियों सहित संपूर्ण जनजातीय समाज के लोगों का देश व समाज के नवनिर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डाला। समारोह में वक्ताओं ने बिरसा मुण्डा, वीरांगना दुर्गावती, शहीद वीर नारायण सिंह एवं शहीद गैंद सिंह आदि आदिवासी समाज के महापुरूषों एवं अमर शहीदों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए उनके वीरता एवं योगदान को अनुपम एवं अद्वितीय बताया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जनजातीय समाज के सीधे, सरल, शांत एवं मेहनकश समाज बताते हुए कहा कि जब भी देश व समाज के सामने चुनौतियां आई है, जनजातीय समाज के लोगों ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर उसका डटकर मुकाबला किया है। उन्होंने कहा कि हमारा मौजूदा केन्द्र एवं राज्य सरकार आदिवासी समाज के सर्वांगीण विकास तथा उनके पुराने गौरव एवं विरासत को अक्षुण्ण बनाए रखने हेतु कृतसंकल्पित है। श्री साहू ने कहा कि केन्द्र व राज्य सरकार के द्वारा संचालित अनेक जनकल्याणकारी योजनाओं के फलस्वरूप जनजातीय समाज के लोगों के स्थिति में निरंतर सुधार एवं अमूलचूल परिवर्तन हो रहा है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता डॉ. देवेन्द्र माहला ने आदिवासी समाज के अमर शहीदों एवं विभूतियों के स्वतंत्रता आंदोलन तथा राष्ट्र व समाज के नवनिर्माण में उनकी भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने नई पीढ़ी को इन अमर शहीदों एवं विभूतियों के आदर्शों से प्रेरणा लेने को कहा। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विशेष अतिथि चंद्रेश ठाकुर ने कहा कि जब हम आदिवासी समाज का राष्ट्र एवं समाज के प्रति योगदान एवं उनके गौरवशाली विरासत की बात करते है, तो हमें एक उज्ज्वल साधना याद आती है। जब क्रियाशील एवं कालजयी जनजातीय आंदोलनों ने चाहे वह साम्राज्यशाही तोपों के प्रतिपक्ष में हो या फिर अंग्रेजों के जुल्मों-सितम की प्रतिकार की बात हो दुनिया के इतिहास के सामने अनुपम एवं अद्वितीय उदाहरण पेश किया था। उन्होंने आदिवासी समाज के गौरवशाली सांस्कृतिक विरासत पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारे देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने अपने पुस्तक 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' में लिखा है। आदिवासियों की संस्कृति विश्व की समस्त संस्कृतियों की जननी है। उन्होंने कहा कि प्रख्यात भाषाविद डॉ. गियर्सन ने कहा है आदिवासी समाज के प्रमुख भाषा गोंडी संस्कृत के अलावा दक्षिण भारत के तीन प्रमुख भाषा तमिल, तेलुगु एवं कन्नड़ की भी जननी है।

इस अवसर पर जनजातीय गौरव पर आधारित रंगोली, पोस्टर मेकिंग, निबंध आदि प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान अर्जित करने वाले विद्यार्थियों को प्रशस्ति पत्र भेंटकर सम्मानित भी किया गया। समारोह में विद्यार्थियों के द्वारा आदिवासी समाज पर आधारित रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी गई। इस अवसर पर प्रशिक्षण अधिकारी श्रीमती भामिनी डहरिया, गजेन्द्र देशमुख, अमर तिवारी, भूपेन्द्र चुरेन्द्र, प्रणिता तिवारी, जयंती कुर्रे, जी के सोनवानी, कमलेश वर्मा सहित दिलीप कुमार जांगड़े, वेंकटेश, नूतन तिग्गा, रामप्रसाद सहित अन्य अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित थे।

गोंड़ समाज की इकाई गठित : भूषण अध्यक्ष, अनिल उपाध्यक्ष एवं मेघनाथ सचिव बने

छुरिया (दावा)। गत दिनों ब्लाक अध्यक्ष दिनेश कोरेटी दिलेर के गरिमामयी उपस्थिति में गोंड़वाना भवन बूचाटोला में बैठक आयोजित कर संभागीय गोंड़ महासभा मोहला के अंतर्गत आने वाले आदिवासी कोयतुर गोंड़ समाज ब्लाक इकाई छुरिया-डोंगरगढ़ के आश्रित आदिवासी कोयतुर गोंड़ समाज सर्कल इकाई बूचाटोला (एटमेटा) के नवीन कार्यकारिणी का गठन किया गया सर्व सम्मति से चयनित सर्कल कार्यकारिणी के अध्यक्ष भूषण सलामें, उपाध्यक्ष अनिल हारमें एवं सचिव मेघनाथ सलामें बनाये गये।

पर्यवेक्षक के रूप में उपस्थित ब्लाक संगठन मंत्री एवं बूचाटोला के ग्राम प्रबंधक दिलीप कोरेटी एवं महिला प्रभाग के अध्यक्ष अंबिका सलामें ने नवीन कार्यकारिणी के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया। नवगठित कार्यकारिणी इस प्रकार है संरक्षक दयाराम सलामें, अध्यक्ष भूषण सलामें, उपाध्यक्ष अनिल हारमें, महासचिव नरेश सलामें, सचिव मेघनाथ सलामें, सहसचिव लोटन सिंह दर्रो, कोषाध्यक्ष कांशीराम नेताम, सलाहकार गौतूराम मंडावी, सांस्कृतिक सचिव ओमप्रकाश सलामें, संगठनमंत्री रजऊ राम मंडावी, मीडिया प्रभारी राहुल कुंजाम, महामंत्री सोनसाय कल्लो, प्रवक्ता फकीर नेताम, सिपाही पूनाराम तुलावी, सहायक सिपाही गनील हारमें, बैगा प्रभाग के सदस्य गण कुमलाल कल्लो, रम्हऊ तारम, चन्द्र कुमार दर्रो, ताराचंद नेताम, तोमन नेताम, इंदल तुलावी, गणेश तुलावी, गौतूराम मंडावी। युवा प्रभाग के अध्यक्ष रूपेश कुमार कल्लो, उपाध्यक्ष तुकाराम तुलावी, सचिव मनीष कोरेटी, सहसचिव जगेश्वर नेताम। महिला प्रभाग के संरक्षक सुमन कोरेटी, अध्यक्ष समेबाई तुलावी, उपाध्यक्ष समुन्द बाई कोरेटी, सचिव बसंती दर्रो, कार्यकारिणी सदस्य वोमन कोरेटी, ओमकुमार कोमरे, फागूराम हारमें, विष्णु राम कल्लो,राम पुरामें, नरेश सलामें, ललिता सलामें, इन्द्रु तुलावी, नरेश धुर्वे, सुरेन्द्र कोले, नवल सिंह कुंजाम एवं तेजराम मंडावी को मनोनित किया गया। बैगा प्रभाग, युवा प्रभाग एवं महिला प्रभाग के सर्कल कार्यकारिणी का विस्तार बाद में किया जायेगा। ब्लाक अध्यक्ष दिनेश कोरेटी दिलेर ने नवचयनित कार्यकारिणी सदस्यों को बधाई एवं शुभकामनाएं देकर विश्व के सबसे प्राचीन एवं गौरवशाली मूल गोंड़ी संस्कृति को बचाय रखने के लिए सामाजिक रूप से एकजुट रहने का आव्हान किया तथा नवचयनित पदाधिकारियों एवं सदस्यों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाया।उपस्थित लोगों ने नवचयनित पदाधिकारियों एवं सदस्यों का पीला चांवल का टीका लगाकर सम्मान किया। इस अवसर पर रूपनाथ हारमें, मेहतरू सलामें,धनसाय नेताम,मुनका तुलावी, छबिलाल हारमें, सिरमोबाई कोरेटी, मेहतरीन हारमें, राजू नेताम, शंकर कल्लो,संजय नेताम,खूमन सलामें, चन्द्रभान दर्रो, गीता कोरेटी, पल्टीन सलामें, सुमित्रा सलामें आदि सहित बूचाटोला सर्कल आश्रित गांवों के सामाजिक सदस्य बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

इटेक इंडिया हेरिटेज क्विज में रॉयल किड्स के प्रणव और विशेक ने तृतीय स्थान प्राप्त किया

राजनांदगांव (दावा)। शहर की उच्च गुणवत्ता युक्त शिक्षण संस्थान रॉयल किड्स कॉन्वेंट के होनहार बच्चों ने इटेक इंडिया हेरिटेज क्विज में तृतीय स्थान प्राप्त कर शाला को गौरवान्वित किया, ऐसा क्विज जिसमें दूसरी स्कूल के 11वीं तक के बच्चों ने भाग लिया उसमें हमारी शाला की आई. सी. एस इ. बोर्ड के 8वीं के बच्चों ने कड़ी प्रतिस्पर्धा में स्थान बनाया। कक्षा आठवीं के प्रणव खंडेलवाल और विशेक रॉय ने प्रथम लेखन राउंड और फिर द्वितीय मौखिक राउंड में भारतीय इतिहास एवं संस्कृति से जुड़े प्रश्नों में शानदार ज्ञान का प्रदर्शन करते हुए उत्कृष्ट प्रस्तुति दी। गौरतलब है कि इस जिला स्तरीय क्विज प्रतियोगिता में 10 शालाओं के 100 के करीब बच्चो ने भाग लिया था। जिनमें अच्छी प्रतिस्पर्धा करते हुए इन होनहार बच्चों ने स्थान प्राप्त किया। अपर्णा वर्मा एवं शालिनी चितलांगिया ने बच्चों को मार्गदर्शन दिया। इस अवसर पर उपस्थित कार्यक्रम के संयोजक इंटेक की टीम एवं लायंस क्लब ऑफ राजनांदगांव के आनंद वर्गीस, दिलीप खंडेलवाल, योगेश गुप्ता ने बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए आशीर्वाद दिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र में मनाया गया महिला किसान दिवस

राजनांदगांव (दावा)। कृषि विज्ञान केन्द्र राजनांदगांव में 15 अक्टूबर को वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. गुजन झा के मार्गदर्शन में महिला किसान दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य महिला कृषकों की कृषि में बदलाव की भूमिका है।

कृषि विज्ञान केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. गुजन झा ने कृषि में बदलाव लाने में महिला उद्यमियों की भूमिका पर महिला कृषकों से चर्चा की, साथ ही कृषि विज्ञान केन्द्र के विभिन्न क्रियाकलापों की जानकारी दी। डॉ. गुंजन झा उद्यानिकी विशेषज्ञ ने फल-फूल, सब्जी-भाजी की विभिन्न कास्त तकनीक के बारे में महिलाओं से चर्चा की। खेती में महिलाओं की सहभागिता एवं पोषण पर भी चर्चा की गई।

इंजीनियर अतुल डागे ने धान की कटाई में विभिन्न यंत्रों के उपयोग के बारे में जानकारी दी। अनुविभागीय कृषि अधिकारी संतलाल देशलहरे ने धान एवं सब्जियों में लगने वाले कीट एवं उनके उपचार की जानकारी के साथ कीटनाशक के समुचित उपयोग में किसानों को सावधानियों के संबंध में जानकारी दी। कार्यक्रम के अंत में महिला कृषकों को सम्मानित किया गया। जिले के विभिन्न विकासखण्डों से 60 महिला कृषक कृषि विज्ञान केन्द्र में उपस्थित हुई एवं अपने अनुभव वैज्ञानिकों के साथ साझा किया।

कार्यक्रम में विषय वस्तु विशेषज्ञ मनीष कुमार सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ डॉ. योगेन्द्र श्रीवास, कार्यक्रम सहायक जितेन्द्र कुमार मेश्राम, प्रक्षेत्र प्रबंधक आशीष गौरव शुक्ला, वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी जयसिंह खेंगर, ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी श्रीमति सरिता रामटेके, सरपंच ग्राम पंचायत सुरगी आनंद साहू व लगभग 60 महिला कृषक व महिला स्वसहायता समूह के सदस्य उपस्थित थे।

सोसाइद्धटयों में धान खरीदी 14 नवंबर नहीं 1 नवंबर से हो - अभिमन्यु मिश्रा

राजनांदगांव (दावा)। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के मीडिया पैनलिस्ट अभिमन्यु उदय मिश्र ने अपने एक जारी बयान में कह कि छत्तीसगढ़ में भाजपा सरकार किसान हितैषी होने का ढोंग कई बार कर चुकी है। इस साल भी समर्थन दर पर धान खरीदी के मामले में शुरू हो गई है। हरुना धान पककर तैयार है और तैयार हो भी रही है। 30 अक्टूबर दिवाली के पहले बहुत से किसान अपनी शीघ्र पकने वाली फसल धान की फसल मिंजकर घरों में रखे रहेंगे। राज्य के भाजपा सरकार की चतुराई देखिए की उन्हें मालूम है किसान अपनी बहुत सारी मिजी हुई फसल घर पर नहीं रख सकेंगे। क्योंकि जगह का अभाव रहेगा। चूहे और मवेशी परेशान करेंगे। बादल पानी का भी डर रहेगा। ऐसी स्थिति में हरुना धान ज्यादा बोने वाले किसानों को धान बेचने के लिए लंबा इंतजार करना पड़ेगा।

श्री मिश्रा ने आगे कहा कि किसान दिवाली में नगद नारायण के लिए मंडी में व कोचियों को धान बेचने मजबूर होंगे कृषि उपज मंडी संशोधन विधेयक द्वारा बाहरी लोग अब धान सीधा किसान से खरीद सकते हैं जिसमें विवाद की स्थिति भी अगर बनी तो सरकार बीच में नहीं आएगी ऐसे में मजबूरन किसान को बाहर धान बेचना पड़ेगा क्योंकि उन्हें मजदूरों का पैसा देने कर्ज छूटने हार्वेस्टर आदि के लिए नगद राशि की जरूरत होगी और वह मंडी में धान बेचने मजबूर होंगे। 15 नवंबर तक हजारों क्विंटल धान सोसाइद्धटयों में बिक चुके होंगे। इससे सरकार को बड़ा फायदा होगा किसानों को घाटा होगा जो किसान धान बोए है। सेवा सहकारी समितियां में धान बेचने में आपाधापी होगी। क्योंकि भीड़ बढ़ेगी और इस भीड़ बढ़ने की चक्कर में खेतों में खड़ी फसल को कटवाने मिलजवाने में भी दिक्कत होगी। किसानों की इन सब परेशानियों को देखते हुए श्री मिश्रा ने सरकार से सोसाइटीयों में धान खरीदी 1 नवंबर छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना दिवस एवं गोवर्धन पूजा के दिन से आरंभ करने की मांग की है। ठीक साथ ही उन्होंने यह भी मांग की है कि धान खरीदी की समाप्ति की तिथि भी 15 दिन आगे की जाए। क्योंकि इस साल छत्तीसगढ़ में विपुल उत्पादन की स्थिति दिख रही है साथ ही किसानों को भुगतान के लिए पैसों की व्यवस्था अग्रिम रूप से करने की सलाह दी है साथ ही हर एक पंचायत में सहकारी सोसायटी खोलने का जो वादा कर भाजपा शासन में आई है उसे जल्द से जल्द पूरा करने की मांग की है ।

अंजोरा में उल्लास आदर्श साक्षरता केंद्र का शुभारंभ

अक्षर अंक ज्ञान हासिल करेंगे ग्रामीण 'उल्लास' आदर्श साक्षरता केन्द्र का उद्घाटन

राजनांदगांव (दावा)। स्कूल शिक्षा विभाग, राज्य साक्षरता मिशन प्राधिकरण छत्तीसगढ़ के निर्देशन में कलेक्टर एवं अध्यक्ष जिला साक्षरता मिशन प्राधिकरण संजय अग्रवाल के कुशल मार्गदर्शन एवं सुरुची सिंह मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत के कुशल निर्देशन में जिले में 'उल्लास' नवभारत साक्षरता कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा है। उल्लास साक्षरता केन्द्रों में साक्षरता कक्षाओं का संचालन स्वयंसेवी शिक्षकों द्वारा नवाचारी गतिविधियों का प्रयोग करते हुए किया जा रहा है। जिसमें पठन -पाठन के साथ ही डिजिटल साक्षरता, आपदा प्रबंधन, कौशल विकास, वित्तीय साक्षरता, विधिक साक्षरता, चुनावी साक्षरता आदि विषयों की जानकारी दी जा रही है।

राजनांदगांव विकासखंड के अंतर्गत आने वाले ग्राम अंजोरा में संचालित प्राथमिक शाला में उल्लास नवभारत साक्षरता कार्यक्रम अंतर्गत आज उल्लास आदर्श साक्षरता केन्द्र का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर जिला परियोजना अधिकारी श्रीमती रश्मि सिंह ने बताया कि केंद्र प्रवर्तित यह योजना 15 वर्ष से अधिक उम्र के उन लोगों के लिए प्रारंभ की गई है जिन्होंने किसी कारणवश पढ़ाई नहीं किया है इन लोगों को स्वयंसेवी शिक्षकों द्वारा पठन-पाठन कराया जाएगा ताकि वह अंक ज्ञान अक्षर ज्ञान प्राप्त कर सकें आपने शिक्षार्थियों से आग्रह किया कि वह नियमित पठन-पाठन का लाभ बताएं एवं अपने परिवार में शिक्षा का माहौल निर्मित करें।

स्वयंसेवी शिक्षकों अनुभव साझा किये

स्वयंसेवी शिक्षकों के द्वारा कक्षाओं का संचालन किया जा रहा है, पढ़ाने के संबंध में अपना अनुभव साझा करते हुए बताया कि हमें अपने गांव के हमारे ही पारिवारिक सदस्यों एवं गांव के अन्य जनों के साथ साक्षरता कक्षाओं का संचालन करने में आनंद की अनुभूति हो रही है खेल-खेल के माध्यम से उन्हें अक्षर ज्ञान अंक ज्ञान व जीवन की महत्वपूर्ण उपयोगी बातों को बताया जा रहा है साथ ही बुजुर्गों से हमें भी अनुभव प्राप्त हो रहा है।

आज के कार्यक्रम में एवं ब्लॉक के नोडल अधिकारी श्रीमती कल्पना पटले व प्राथमिक/माध्यमिक शाला के प्रधान पाठक व शाला स्टाफ संकुल प्राचार्य श्रीमती मुक्ता वैष्णव, व्याख्याता श्रीमती निशा देशमुख, संकुल समन्वयक लोमश देशमुख अंजोरा एवं के.डी. साहू टेडेसरा, शाला प्रबंध समिति के सदस्यगण, पालकगण, जनप्रतिनिधि के रूप में पंच चन्दूलाल साहू, महेश कुमार साहू, संदीप साहू असाक्षर मीना बाई शिवारे, श्रीमती मेहतरीन, रामकली साहू, संत्री सेन, ब्रिज बाई साहू, शंकरलाल, ईश्वरी साहू, टीकम साहू, ममता भुआर्य, रामसिंह स्वयंसेवी शिक्षक कुमारी नेहा साहू, कुमारी कुमकुम देशमुख, कुमारी झरना साहू, कुमारी अर्चना साहू, कुमारी भूमिका साहू, कुमारी मानसी साहू, सुरेंद्र कुमार साहू, कुमारी दीक्षा साहू, कुमारी देविका साहू, मनीष कुमार सिन्हा, प्रिंस कुमार सिन्हा, स्वयंसेवी शिक्षक उपस्थित रहे।

विविधताओं के बावजूद हमारे देश में एकता, शांति और सौहार्द्र - धन्यकुमार जिनप्पा गुडे

राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य धन्यकुमार जिनप्पा गुडे ने विभिन्न विभागों द्वारा संचालित शासन की योजनाओं के अंतर्गत अल्पसंख्यक योजनाओं की समीक्षा की

राजनांदगांव (दावा)। राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग भारत सरकार के सदस्य धन्यकुमार जिनप्पा गुंडे ने आज कलेक्टोरेट सभाकक्ष में विभिन्न विभागों द्वारा संचालित शासन की योजनाओं के अंतर्गत अल्पसंख्यक योजनाओं की समीक्षा की। राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य धन्यकुमार जिनप्पा गुंडे ने कहा कि छत्तीसगढ़ में विभिन्न स्थानों का अवलोकन करने का अवसर मिला। यहां के प्राकृतिक एवं धार्मिक स्थल का भ्रमण करने से यहां की संस्कृति को जानने का अवसर मिला। आप सभी शासकीय सेवा में रहते हुए विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सेवा एवं योगदान दे रहे हैं। यह ध्यान देने की आवश्यकता है कि जनसामान्य से प्राप्त शिकायतों का समाधान होना चाहिए। उन्होंने कहा कि राजनांदगांव जिले का डोंगरगढ़ अद्वितीय स्थान है और यहां हिन्दू, जैन, सिक्ख, बौद्ध, ईसाई, मुस्लिम एवं अन्य समुदाय के लोग आपस में एक साथ सौहार्द एवं सद्भाव के साथ मिलकर रहते हैं। हम मौलिक अधिकारों की बात करते हैं, लेकिन मौलिक कर्तव्यों की बात नहीं करते हैं। यहां आने पर मौलिक कर्तव्यों पर केन्द्रित पाया गया।

यहां लोगों में एक-दूसरे के लिए सम्मान है। यह स्थान जहां सभी धर्मों एवं समुदाय के लोग आपसी सौहार्द के साथ रहते हैं। उन्होंने कहा कि वे भारत सरकार को डोंगरगढ़ को पर्यटन केन्द्र रिलीजियस कोलाबरेटेड सेंटर के रूप में विकसित करने की अनुशंसा करेंगे। जहां इस केन्द्र में सभी धर्म के लोग अपनी गतिविधियां कर सकेंगे। जिला स्तरीय अधिकारियों की समीक्षा के दौरान उन्होंने आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने यहां अधिकारियों द्वारा किए जा रहे कार्यों के प्रति संतोष व्यक्त किया। राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग भारत सरकार के सदस्य धन्यकुमार जिनप्पा गुंडे ने अल्पसंख्यक आयोग द्वारा किए जा रहे कार्यों के संबंध में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि अल्पसंख्यक आयोग का गठन संवैधानिक प्रावधानों के तहत किया गया है। उन्होंने बताया कि जैन, सिक्ख, ईसाई, बौद्ध, मुस्लिम, पारसी 6 समुदाय को अल्पसंख्यक अंतर्गत शामिल किया गया। समुदाय हमारे देश में लगभग 35 करोड़ जनसंख्या अल्पसंख्यक समुदाय की है। भारतीय संस्कृति के अनुरूप सभी धर्मों, जाति, समुदाय के नागरिक आपस में सद्भावना एवं समानता के साथ मिलकर रहें तथा सभी नागरिक समान हैं इस भावना के साथ कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि हमारे देश में अनेकता में एकता है। खान-पान, रहन-सहन और विभिन्न जाति, धर्म, समुदाय, भाषा में विविधताओं के बावजूद हमारे देश में एकता है। शांति और सौहार्द बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि हम जाति, धर्म, लिंग एवं अन्य भेदभाव को भुलाकर आपस में सहयोग एवं समन्वय के साथ कार्य करें।

- डोंगरगढ़ अद्वितीय स्थान
- डोंगरगढ़ में हिन्दू, जैन, सिक्ख, बौद्ध, जैन, ईसाई, मुस्लिम एवं अन्य समुदाय के लोग सद्भावना के साथ मिलकर रहते हैं
- भारत सरकार को डोंगरगढ़ को पर्यटन केन्द्र तथा रिलीजियस कोलाबरेटेड सेंटर के रूप में विकसित करने की अनुसंशा करने की बात कही
- अधिकारियों द्वारा किए जा रहे कार्यों के प्रति संतोष व्यक्त किया

अपने कर्तव्यों को हरसंभव पूरा करने का करें प्रयास

उन्होंने सभी अधिकारियों से कहा कि आप सभी से अपेक्षा है कि अपने कर्तव्यों को हरसंभव पूरा करने का प्रयास करें। अल्पसंख्यक आयोग द्वारा अल्पसंख्यक समुदाय जिसके अंतर्गत मुस्लिम, ईसाई, पारसी, सिक्ख, जैन, बौद्ध से संबंधित मुद्दों के संबंध में तथा इस समुदाय के लोगों को लाभान्वित करने के उद्देश्य से आयोग का गठन किया गया है।

कलेक्टर संजय अग्रवाल ने कहा कि डोंगरगढ़ में सभी धर्म, समुदाय एवं जैन, ईसाई, सिक्ख, बौद्ध, मुस्लिम समाज के लोग आपस में सौहार्दपूर्ण तरीके से मिलजुलकर रहते हैं। उन्होंने अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष से आग्रह किया कि डोंगरगढ़ को विकसित करने के लिए भारत सरकार की ओर से पहल की जा सकती है। कलेक्टर ने बताया कि राजनांदगांव जिले में कोविड-19 के दौरान अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करते हुए सामाजिक सद्भावना की मिसाल पेश की और एक-दूसरे की हरसंभव सहायता की। कोविड-19 के दौरान महाराष्ट्र बार्डर में एक दिन में हजारों की संख्या में श्रमिक पहुंचते थे। जैन समुदाय तथा अन्य समुदायों के लोगों ने बेहतरीन उदाहरण प्रस्तुत करते हुए दिल से न केवल श्रमिकों की मदद की बल्कि अन्य नागरिकों की भी मदद की। पुलिस अधीक्षक मोहित गर्ग ने कहा कि राजनांदगांव जिले में अल्पसंख्यक समुदायक इतना घुल मिलकर रहते हैं कि वे पृथक व्यवस्था का हिस्सा महसूस नहीं होते। यहां जैन समुदाय अन्य समुदाय की मदद के लिए तत्परता से आगे आते हैं। यहां के अल्पसंख्यक, लोगों की बेहतरी के लिए प्रतिबद्ध है। जिला पंचायत सीईओ सुश्री सुरूचि सिंह ने कहा कि छत्तीसगढ़ की संस्कृति में अल्पसंख्यक घुले-मिले हैं। छत्तीसगढ़ की संस्कृति और लोग शांति प्रिय एवं सबके साथ मिलकर रहने वाले लोग हैं। यहां भेदभाव की स्थिति नहीं है।

सभी जिला स्तरीय अधिकारियों ने अपने विभाग में अल्पसंख्यक से संबंधित शासन की योजनाओं के अंतर्गत लाभान्वित हितग्राहियों के संबंध में जानकारी दी। अपर कलेक्टर सीएल मारकण्डेय ने राजस्व तथा अपर कलेक्टर श्रीमती इंदिरा नवीन प्रताप सिंह ने शिकायत एवं निराकरण के संबंध में जानकारी दी। नगर निगम आयुक्त अभिषेक गुप्ता ने बताया कि लगभग 800 अल्पसंख्यक हितग्राही शासन की विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत लाभान्वित हो रहे है। पेंशन योजना से कमजोर वर्ग के हितग्राही लाभान्वित हो रहे हैं। कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास श्रीमती गुरप्रीत कौर ने बताया कि समान भाव से सभी को शासन की योजनाओं से लाभान्वित किया जा रहा है।

उप संचालक कृषि नागेश्वर लाल पाण्डेय ने बताया कि सभी वर्गों के किसान विशेष कर लघु एवं सीमांत कृषक शासन की योजनाओं का लाभ ले रहे है तथा सब्सिडी भी प्राप्त कर रहे हैं। श्रमपदाधिकारी ने बताया कि श्रमिकों का पंजीयन कराया जा रहा है तथा सभी वर्गों के महिला श्रमिकों को विशेषकर लाभान्वित किया जा रहा है। जिले में 360 महिला श्रमिकों को सिलाई मशीन दी गई है। कार्यपालन अभियंता लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी समीर शर्मा ने बताया कि जल जीवन मिशन के तहत हर घर नल कलेक्शन दिया जा रहा है। जिला शिक्षा अधिकारी प्रवास बघेल ने बताया कि सभी बच्चों को निःशुल्क पाठ्यपुस्तक एवं गणवेश दिया जा रहा है। जिला पंचायत, राजस्व, वन, नगर निगम, स्वास्थ्य, आदिम जाति कल्याण, सहित अन्य विभागों द्वारा अल्पसंख्यक समुदाय के लिए संचालित शासन की योजनाओं के संबंध में जानकारी दी गई। इस अवसर पर अन्य जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित थे।

कस्टम मिलिंग चावल जमा में रूचि नहीं लेने पर मेसर्स एम.जे. फुड प्रोडक्ट ग्राम राका को एक वर्ष के लिए किया गया ब्लैक लिस्टेड

राजनांदगांव (दावा)। शासन के निर्देशानुसार जिले में खरीफ विपणन वर्ष 2023-24 में कस्टम मिलिंग अंतर्गत 31 अक्टूबर तक भारतीय खाद्य निगम एवं नागरिक आपूर्ति निगम में चावल जमा कराया जा रहा है। कलेक्टर संजय अग्रवाल ने जिले के सभी राईस मिलर्स को कस्टम मिलिंग अंतर्गत चावल जमा करने तथा खाद्य अधिकारियों को सभी राईस मिल का निरीक्षण करने के निर्देश दिए हैं।

खाद्य अधिकारी रविन्द्र सोनी ने बताया कि खाद्य विभाग के अधिकारियों द्वारा मेसर्स एमजे फूड प्रोडक्ट ग्राम राका डोंगरगढ़ की जांच की गई। जांच में मिल परिसर में कस्टम मिलिंग के तहत उठाव किये गये धान के विरूद्ध 5682.78 क्विंटल धान कम पाया गया। मिलर द्वारा कस्टम मिलिंग के तहत चावल जमा करने में रूचि नहीं दिखाने तथा धान की कस्टम मिलिंग नहीं करते हुए शासकीय धान की अफरा-तफरी की गई है, जो छत्तीसगढ़ कस्टम मिलिंग चावल उपार्जन आदेश का उल्लंघन है। जिसके कारण मोहम्मद जिया उल हक द्वारा संचालित राईस मिल मेसर्स एमजे फूड प्रोडक्ट ग्राम राका डोंगरगढ़ को एक वर्ष के लिए काली सूची में दर्ज किया गया है तथा मिलर द्वारा जिला विपणन अधिकारी में जमा बैंक गारंटी से मिल में कम पाये गये 5682.78 क्विंटल धान की राशि लगभग 1 करोड़ 40 लाख रूपए तत्काल वसूली किये जाने के निर्देश दिए गए है।

कलेक्टर के निर्देशानुसार अब तक जिले के 9 राईस मिलर्स पर कार्रवाई करते हुये कुल 35877 क्विंटल धान एवं 14650 क्विंटल चावल जप्त कर प्रकरण में की जा रही अग्रिम कार्यवाही, जिले के राईस मिलों का लगातार किया जा रहा निरीक्षण

कलेक्टर के निर्देशानुसार जिले के राईस मिलों का लगातार निरीक्षण किया जा रहा है। जिसके परिपालन में अब तक जिले के 9 राईस मिलर्स पर कार्रवाई करते हुये कुल 35877 क्विंटल धान एवं 14650 क्विंटल चावल जप्त कर प्रकरण में अग्रिम कार्यवाही की जा रही है।

डॉ रमन सिंह की अनुशंसा से राजनांदगांव को मिली जीर्णोद्धार कार्यों की सौगात

विद्यार्थियों और अभिभावकों समेत शिक्षकों ने जताया डॉ.रमन सिंह का आभार

राजनांदगांव (दावा)। विधानसभा अध्यक्ष और राजनांदगांव विधायक डॉ.रमन सिंह की अनुशंसा पर राजनांदगांव के अंजोरा, धर्मापुर, नंदई वार्ड नंबर 49, परमालकसा, पारीखुर्द और पेंड्री के पूर्व माध्यमिक शाला में जीर्णोद्धार कार्य समेत पारीखुर्द के प्राथमिक शाला में जीर्णोद्धार कार्य के लिए 19 लाख 89 हजार रुपए स्वीकृत किए गए हैं।

इसके साथ ही पूर्व माध्यमिक शाला रीवागहन, प्राथमिक शाला अंजोरा, प्राथमिक शाला आशा नगर, प्राथमिक शाला बागतराई, प्राथमिक शाला बापू स्टेशन पारा, प्राथमिक शाला बरगा में जीर्णोद्धार कार्य के लिए 19 लाख 34 हजार रुपए की स्वीकृति। प्राथमिक शाला बेलटिकरी, प्राथमिक शाला भरेंगांव, प्राथमिक शाला धनगांव, प्राथमिक शाला फरहद, प्राथमिक शाला गौरी नगर, प्राथमिक शाला जंगलेसर और प्राथमिक शाला खैरा में जीर्णोद्धार कार्य के लिए 18 लाख 94 हजार रुपयों की स्वीकृति के साथ ही प्राथमिक शाला खुटेरी, प्राथमिक शाला कुम्हालोरी, प्राथमिक शाला मोखला, प्राथमिक शाला पारींकला में जीर्णोद्धार कार्य के लिए 11 लाख 91 हजार रुपए की स्वीकृति और प्राथमिक शाला शंकरपुर और प्राथमिक शाला सोमानी में जीर्णोद्धार कार्य के लिए 11 लाख 33 हजार रुपए को शासन द्वारा स्वीकृति प्रदान की गई है। इस प्रकार 26 स्कूलों में जीर्णोद्धार कार्यों के लिए कुल 81 लाख 41 हजार रुपयों की राशि प्राप्त होने से राजनांदगांव के विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों ने प्रसन्नता जताते हुए राजनांदगांव विधायक डॉ रमन सिंह का आभार प्रकट किया है।

भाजपा के सदस्यता अभियान में तेजी

मुसरा में डोंगरगांव मंडल की बैठक हुई

राजनांदगांव (दावा)। भाजपा का राष्ट्रव्यापी सदस्यता अभियान इन दिनों पूरे जिले भर में जोरों पर है। जिला भाजपा अध्यक्ष रमेश पटेल अपनी टीम के साथ प्रतिदिन जिले के किसी न किसी मंडल का दौरा करके सदस्यता अभियान को गति प्रदान कर रहे है। इसी तारतम्य में आज वे डोंगरगांव मंडल के मुसरा केन्द्र में पहुंचकर कार्यकर्ताओं की बैठक ली व घर-घर जाकर लोगों को पार्टी की सदस्यता से जोड़ा।

भाजपा मीडिया सेल द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार इस दौरान श्री पटेल ने कहा कि पार्टी कार्यकर्ताओं के उत्साह व आमलोगों का भाजपा के प्रति बढ़ रहे रूझान को देखते हुये पार्टी ने निर्धारित 15 अक्टूबर के बाद भी 30 अक्टूबर तक सदस्यता अभियान जारी रखने का निर्णय लिया है, जिसका लाभ उठाने पार्टी के कार्यकर्ताओं को मंडल से लेकर मतदान केन्द्र तक सक्रिय होकर इस अभियान को सफल बनाना चाहिये। उल्लेखनीय है कि पार्टी के डोंगरगांव व लालबहादुर नगर के मंडलों का विभाजन करके मुसरा एक तीसरा नया मंडल बनाया जा रहा है जिससे इस क्षेत्र के कार्यकर्ताओं में भारी उत्साह है।

भाजपा जिले में सदस्यता के लिये निर्धारित लक्ष्य के करीब पहुंच चुकी है, जहाँ क्षेत्रीय सांसद संतोष पाण्डेय इस अभियान को गति प्रदान कर रहे है वही स्थानीय विधायक डॉ. रमन सिंह भी पार्टी कार्यकर्ताओं को इस हेतु प्रेरित कर रहे है। आज डोंगरगांव की हुई इस मंडल बैठक में प्रमुख रूप से जिला भाजपा उपाध्यक्ष आभा तिवारी व मूलचंद लोधी, रघुवीर वाधवा, बोधीराम साहू सहित शक्ति केन्द्र संयोजक, बूथ पालक, प्रभारी एवं बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित थें।

बीजापुर में दिनदहाड़े कांग्रेसी नेता तिरुपति भंडारी की हत्या, जांच में जुटी पुलिस

बीजापुर। बस्तर में नक्सली लगातार राजनीतिक दल के नेताओं को अपना निशाना बना रहे हैं। इसी क्रम में नक्सलियों ने बीजापुर के उसूर में कांग्रेस नेता और पूर्व उप सरपंच तिरुपति भंडारी की हत्या कर राजनीतिक दलों के कार्यकर्ताओं में भय का माहौल पैदा कर दिया है। यह वारदात शनिवार को लगभग चार बजे उसूर के एक राशन दुकान में हुई। तिरुपति भंडारी उसूर ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के महामंत्री रह चुके हैं। उनके मारे जाने से उसूर में दहशत का माहौल बना हुआ है।

अपने पुराने धान तस्कर मित्रों को लाभ पहुंचाने भूपेश कर रहे हैं हवा हवाई बयानबाजी - मधुसूदन यादव

राजनांदगांव (दावा)। धान खरीदी की मियाद को लेकर पूर्व मुख्यमंत्री एवं कांग्रेसी नेता भूपेश बघेल द्वारा की जा रही बयानबाजी को पूर्व सांसद एवं प्रदेश भाजपा उपाध्यक्ष मधुसूदन यादव ने लफ्फाजी करार दिया है।

उन्होंने भूपेश बघेल को याद दिलाया है कि छत्तीसगढ़ निर्माण के समय कांग्रेस अजीत जोगी राज में ही किसानों के प्रति अत्याचार चरम पर थे और किस प्रकार पानी में भिगो-भिगोकर किसानों का धान खरीदा जाता था। उसके बाद ठगेश शासनकाल में खेत की में का रकबा घटाकर कम धान खरीदा गया वहीं अनावारी बढ़वाकर किसानों को मुआवजा से वंचित किया गया, प्रदेश के अन्नदाताओं को ठगा गया और उनका हक मारा गया।

पूर्व सांसद मधु ने कांग्रेस नेता भूपेश बघेल पर आरोप लगाया है कि छत्तीसगढ़ निर्माण के समय से सर्वाधिक किसानों के आत्महत्या की दुःखद घटनाएँ आपके ही शासनकाल में घटी हैं। आपके मुख्यमंत्रित्वकाल में पादर्शितापूर्ण धान खरीदी तो दूर शासन-प्रशासन के दबाव में उल्टे पटवारी एवं कृषि विभाग ने किसानों को फसल बीमा से भी वंचित करने का जघन्य कृत्य किया है, जिससे प्रदेश के किसान बन्धु भलिभांति परिचित हैं। पूर्व सांसद ने आगे कहा है कि वर्तमान में भूपेश बघेल द्वारा धान कटाई को लेकर हवाहवाई बयानबाजी कर कृषकों को दिग्भ्रमित करने का प्रयास किया जा रहा है, जबकि धान कटाई अभी प्रारंभिक स्थिति में है, जिसके विक्रय योग्य स्थिति में पहुँचने में निश्चित रूप से 14-15 नवम्बर तक का समय लगेगा। प्रदेश भाजपा उपाध्यक्ष मधुसूदन ने प्रदेश के किसान भाईयों को संबोधित करते हुए कहा है कि कृषकगण धान खरीदी को लेकर निश्चिंत एवं आश्वस्त रहें क्योंकि साय सरकार पंजीकृत कृषकों का एक-एक दाना खरीदने के लिये प्रतिबद्ध है।

- धान खरीदी को लेकर रार, मधुसूदन ने भूपेश पर किया पलटवार
- साय सरकार किसानों का एक-एक दाना खरीदने के लिये प्रतिबद्ध - मधुसूदन

पूर्व सांसद ने कांग्रेसी नेता भूपेश से प्रश्न किया है कि किसानों को भरमाने और तिथि कम करने के वक्तव्य के पीछे कहीं उनकी मंशा कोचियों और अपने पुराने धान तस्कर मित्रों को लाभ पहुँचाने तथा सीमावर्ती राज्यों के धान को छत्तीसगढ़ में अवैध रूप से खपाने की सुनियोजित कूटरचित साजिश तो नहीं है। पूर्व सांसद ने चुटकी लेते हुए कहा है कि स्वयं मुख्यमंत्री रहते 15 नवम्बर से धान खरीदी प्रारंभ करने वाले भूपेश बघेल एवं कांग्रेस पार्टी अब नींद से जागे हैं किन्तु इस विषय में बात करने का नैतिक अधिकार खो चुके हैं। इसका प्रमाण उन्हें देश के शीर्ष कृषि प्रधान राज्यों जैसे उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, हरियाणा, राजस्थान, ओडिशा में पिछले विधानसभा निर्वाचन में मिली करारी हार से प्रत्यक्षदर्शित है।

एकलव्य विद्यालय पेण्ड्री के तीन छात्रों का एमबीबीएस के लिए चयन

राजनांदगांव (दावा)। एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय पेण्ड्री राजनांदगांव के तीन छात्रों का एमबीबीएस के लिए चयन हुआ है। जिसमें सत्र 2020-21 में कक्षा 12वीं के छात्र रविन्द्र कुमार तोप्पा का शासकीय मेडिकल कॉलेज कांकेर, छात्र टेमन लाल का शासकीय मेडिकल कॉलेज रायगढ़ एवं छात्र कुलेश्वर ठाकुर का शासकीय मेडिकल कॉलेज महासमुंद में सत्र 2024-25 में एमबीबीएस के लिए चयन हुआ है। संस्था के प्राचार्य अमीय श्रीवास्तव एवं विद्यालय परिवार ने चयनित विद्यार्थियों को इस सफलता के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी है।

रॉयल किड्स कान्वेंट और डॉ. जेबी सिंह मेमोरियल सीनियर सेकेंडरी स्कूल में नए सत्र के लिए बड़ा ऑफर

राजनांदगांव (दावा)। राजनांदगांव में गुणवत्ता युक्त शिक्षा के क्षेत्र में प्रसिद्ध शिक्षण संस्थान रॉयल किड्स कान्वेंट और डॉ. जेबी सिंह मेमोरियल सीनियर सेकेंडरी स्कूल में नए सत्र के लिए नव प्रवेशी छात्रों के रजिस्ट्रेशन करने पर कुल शुल्क में 50 प्रतिशत तक की छूट दी जाएगी।

यह ऑफर नव प्रवेशी छात्रों के लिए है, जो कक्षा नर्सरी से लेकर कक्षा 12वीं तक प्रवेश लेने के लिए आवेदन कर सकते हैं। इस ऑफर के माध्यम से स्कूल नए छात्रों को आकर्षित करने और उन्हें गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान करने का अवसर प्रदान कर रहा है। यह ऑफर अगले 1 महीने तक, अर्थात 19 नवंबर तक के लिए लागू रहेगा।

मुख्य विशेषताएं – 50 प्रतिशत तक की छूट शुल्क में, नव प्रवेशी छात्रों के लिए लागू, कक्षा नर्सरी से लेकर कक्षा 12वीं तक प्रवेश, आईसीएसई बोर्ड में रॉयल किड्स कान्वेंट और सीबीएसई में डॉ. जेबी सिंह मेमोरियल सीनियर सेकेंडरी स्कूल में, 19 नवंबर तक के लिए लागू। अपर्णा वर्मा पीआरओ ने इस ऑफर की घोषणा करते हुए कहा, हम नए छात्रों को हमारे स्कूल में शामिल होने के लिए आमंत्रित करते हैं और उन्हें गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। यह ऑफर हमारे स्कूल की विशेषताओं को प्रदर्शित करता है और नए छात्रों को हमारे साथ जुड़ने का अवसर प्रदान करता है।

एकेडमिक डायरेक्टर अभिषेक खंडेलवाल ने बताया कि हमारी संस्थाओं के बच्चों का प्लेसमेंट भारत एवं विदेशों में बड़ी कंपनियों में अच्छे बड़े पदों पर होता आया है। प्रवेश हेतु इच्छुक पालक एवं विद्यार्थी शाला कार्यालय में आकर संपर्क कर सकते हैं।

महापौर के तौर-तरीकों के साथ काम कर रहा निगम, कर वसूली भी उन्हीं की देन - किशुन यदु

पार्षद छाबड़ा श्रेय लेने की राजनीति कर रहे, महापौर के खिलाफ क्यूं नहीं बोलते

राजनांदगांव (दावा)। नगर पालिक निगम द्वारा व्यवसायिक ईमारतों से कर वसूली के नव निर्धारण और 5 गुना राशि की वसूली का अभियान छेड़ा गया है। इस मामले में कांग्रेस पार्षद कुलबीर सिंह छाबड़ा द्वारा भाजपा सरकार और विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह पर लगाए गए आरोपों को निगम के नेता प्रतिपक्ष किशुन यदु ने स्तरहीन राजनीति और सुर्खियां बटोरने का स्टंट बताया है।

उन्होंने कहा कि, निगम महापौर हेमा देशमुख के विज़न के साथ काम कर रहा है जो कि कांग्रेसी नेत्री हैं। स्पष्ट है कि, कर वसूली के मामले में किसी तरह की गड़बड़ी के लिए सीधे तौर पर महापौर और आयुक्त जिम्मेदार हैं। इन दोनों की एकराय से ही शहर में कर वसूली का ये नया सिस्टम शुरु किया गया है। एक ओर तो पार्षद छाबड़ा जनहित की बात कह रहे हैं लेकिन जो अहित किया जा रहा है उसके लिए जिम्मेदार कांग्रेस, कांग्रेस के नेता को बचाने की कोशिश भी कर रहे हैं। वे क्यूं इस मामले में महापौर को बचाने और उनका नाम तक लेने से बच रहे हैं।

अगर वे जनता की आवाज ही उठाना चाहते हैं तो जरुरी है कि वे पहले निगम की सत्ता की मनमानियों की खिलाफत करें। न कि श्रेय लेने की राजनीति करते हुए खुद का महिमा मंडन करें। किशुन ने कहा कि, नगर पालिक निगम द्वारा व्यवसायिक संस्थानों/मालिकों से जो अंतर की राशि का निर्धारण किया गया है उसे समान्य सभा में लाकर भौतिक आंकलन के बाद ही लागू किया जाए। फिलहाल जो कार्रवाई गूगल एप अर्थ के सहारे की गई है उसमें चिन्हांकित भवनों की नाप-जोख सामान्य सभा की स्वीकृति होने तक रोक लगाई जाए।

गाजमर्रा-राजकट्टा मार्ग निर्माण में ठेकेदार द्वारा अवैध विद्युत कनेक्शन का उपयोग

डोंगरगढ़ (दावा)। आरआईडीएफ परियोजना के तहत लोक निर्माण विभाग के मार्गदर्शन में गाजमर्रा-राजकट्टा बायपास मार्ग का निर्माण किया जा रहा है। मार्ग के साथ रोड के किनारे नाली का निर्माण भी किया जा रहा है। जिसके लिए छड़ काटने हेतु अवैध रूप से विद्युत कनेक्शन का उपयोग ठेकेदार के कर्मचारियों द्वारा किया जा रहा है। सड़क की लम्बाई 3.80 किमी एम.आई/सी पुल और पुलिया का निर्माण (नाबार्ड योजना के तहत) किया जाना है।

परियोजना की लागत 521.68 लाख रुपए है। निर्माण कार्य अत्यंत धीमी गति से एवं अव्यवस्थित ढंग से किया जा रहा है। जिसके कारण

धीमी गति से निर्माण एवं समुचित पानी का उपयोग नहीं होने से आवागमन में परेशानी

आवागमन में आम जनों को अत्यधिक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। पूरे 3 किलोमीटर मार्ग में डामरीकरण के पूर्व गिट्टी बिछा दी गई है जिसमें नियमित रोलर नहीं चलने के कारण राहगीरों को अत्यधिक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। पानी का उपयोग पर्याप्त रूप से नहीं किए जाने के कारण पूरे समय धूल भरे वातावरण से राहगीरों को गुजरना पड़ रहा है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक व मुद्रक दीपक कुमार बुद्धदेव द्वारा स्वस्तिक ऑफसेट एण्ड स्क्रीन प्रिंटर्स, बल्देवबाग रोड, राजनांदगांव से मुद्रित कर प्रकाशित। सम्पादक दीपक कुमार बुद्धदेव।
* समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार। * किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र राजनांदगांव रहेगा। फोन नं. - 07744-406631 e-mail : dainikdawa_rjn@yahoo.com